गुलमोहर

विमल मित्र

H
891.4433
M 697 G

H
891.4433
M 697 G

गुलमोहर

गुलमोहर

विमलमित्र

सन्मार्ग प्रकाशन
16, यू० बी० बैंग्लो रोड, दिल्ली-110007

Library IIAS, Shimla
H 891.443 3 M 697 G
00077910

H
891.4433
M 697 G

INDIAN INSTITUTE ... SHIMLA.
Acc. No. 77910
Date 12/3/92

© प्रकाशक

प्रकाशक :
सन्मार्ग प्रकाशन
16, यू० बी० बैंग्लो रोड, जवाहरनगर
दिल्ली-110007

प्रथम संस्करण : 1985 **मूल्य : बीस रुपये** मात्र

मुद्रक :
एस० एन० प्रिन्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

न तो उपन्यास है, न लम्बी कहानी। यहां तक कि छोटी कहानी भी नहीं। यों इसे कहानी कहना ही ठीक रहेगा। सच पूछिये तो मुझे पता नहीं कि उनमें से कौन क्या है, किसका क्या नियम है? और नाम के लिए माथा-पच्ची करने की जरूरत ही क्या! आप कहानी सुनना चाहते हैं और मैं कहानी कहना और सुनना पसंद करता हूं। अब बात ऐसी है तो इसके लिए माथापच्ची नहीं करें कि यह उपन्यास है या कहानी। मैं शुरू करूं?

पहले ही कह देना अच्छा होगा कि यह मेरी सुनी हुई कहानी है।

उस दिन कचहरी में जितने लोग थे, उनमें से अनेकों ने मुझसे कहा है कि यह सच्ची घटना है। कसम खाकर आप लोगों से कह सकता हूं कि मैं सच-सच कहूंगा, झूठ नहीं बोलूंगा। सच्ची घटना नहीं अगर कहानी का रस मिले तो उसमें झूठ मिलाने की क्या जरूरत? उसके लिए भी काफी मेहनत की जरूरत पड़ती है। मेहनत के वगैर आपको कहानी सुना पाऊंगा, इससे बढ़कर आनन्द की क्या बात होगी?

आनन्द का प्रसंग आते ही याद आया—उसका नाम भी था आनन्द। आनन्द मिश्र। आनन्द मिश्र गरीब आर्टिस्ट था, लेकिन आर्टिस्ट होने से ही कोई उसे बुलाकर नहीं खिलायेगा। उसको भी मेहनत कर रोजी-रोटी कमानी पड़ेगी। यानी बड़े आदमी का मन-बहलाव करना पड़ेगा। आनन्द मिश्र भी एक रोज मन-बहलाव में चलते भारी मुसीबत में फंस गया था। दूसरे का मन बहलाव करने के फेर में अपना ही दिल बेच आया था आनंद मिश्र। यों कहा जाये कि आर्टिस्ट होने के बावजूद आनन्द मिश्र एक साजिश का शिकार हुआ। लिहाजा वकील, एटर्नी, कोर्ट, रुपये-पैसे के चक्कर और कारसाजी में फंसकर उसकी बुरी हालत हो गयी थी।

आखिरकार कोर्ट में जिस दिन अभियुक्त के खास गवाह ने अभियुक्त को छुरी भोंककर मार डाला, उस दिन बात और ज्यादा पेचीदा हो गई थीं।

दूसरे दिन अखबारों में बड़े-बड़े अक्षरों में शीर्षक छपा था।

'अदालत के अंदर अभियुक्त की नृशंस हत्या।

गुलमुहर स्टेट के मुकदमे के अभियुक्त का खास गवाह गिरफ्तार।'

मुकदमा लखनऊ हाईकोर्ट में चल रहा था। जिन लोगों का लाग-लगाव जिन्दगी भर कोर्ट-कचहरी से रहता है, उन लोगों ने भी ऐसी घटना न कभी आंखों देखी थी, न कानों सुनी थी। इसलिए इस घटना की खबर बहुत दिनों तक एक कान से दूसरे कान तक में, एक जुबान से दूसरी जुबान तक में फिरने लगी। मुकदमा भी था अजब किस्म का। लखनऊ के वकील, एटर्नी, बैरिस्टर की जमात में इस मुकदमे की चर्चा बहुत दिनों तक चलती रही।

मेरे मित्र शिवनाथ ने इस मुकदमे की कार्रवाई को अपनी आंखों से देखा है, अपने कानों से सुना है। और शिवनाथ झूठ बोलेगा, मुझे यह यकीन नहीं होता क्योंकि इस मुकदमे के बादी या प्रतिवादी दोनों में से किसी से भी उसका लगाव न था। तब वह लॉ कालेज से पास करके निकला ही था और अदालत के इर्द-गिर्द चक्कर काटा करता था।

शिवनाथ ने कहा था, 'गुलमुहर स्टेट की सालाना आमदनी पन्द्रह लाख रुपये की थी। उतने रुपये के स्टेट के चलते अगर खून-खराबी हो जाये तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है···मैंने पूछा था, 'तो यह स्टेट आखिर में किसे मिला। शिवनाथ ने कहा था, वह नैना चौहान को ही मिला।'

'नैना चौहान ?'

'हां, जो आनन्द मिश्र के लिए गौरव की बात थी।'

आनन्द मिश्र ने इतना कुछ नैना चौहान के ही लिए किया। और अगर आनन्द मिश्र न रहता तो बुलबुल चौधरी नहीं पकड़ाता, पकड़े जाने पर अदालत में उसकी हत्या भी नहीं होती···।

यह आज से लगभग चालीस-पैंतालीस वर्ष पहले की बात है। तब नैना चौहान की श्रेणी की औरतें आज की औरतों की तरह रास्ते में गाड़ी नहीं चलाती थीं। क्लब या पार्टी में स्लीवलेस ब्लाउज पहनकर, सबके सामने होठों से व्हिस्की का ग्लास नहीं लगाती थीं। जो कि मौज से जिन्दगी गुजारने के लिए नैना के पास रुपये-पैसे थे। गुलमुहर स्टेट की जो महिला एकमात्र वारिस थी, उसके लिए सब कुछ करना आसान था। लेकिन ऐसा लगता है कि नैना चौहान दूसरे ही किस्म की औरत थी। गुलमुहर स्टेट की भांति नैना चौहान थी जैसे जलजंतु गुलमुहर। जैसा रंग था, वैसी ही छटा और वैसी ही आग की लपट जैसी सुन्दरता। कहानी की नायिका सुन्दरी ही हुआ करती है। यही हमेशा से नियम चला आ रहा है। मगर नैना चौहान गुलमुहर फूल की तरह खूबसूरत थी। यह मैं अपनी कहानी की

सहूलियत के लिए नहीं कह रहा हूं। आनन्द मिश्र आर्टिस्ट था लगता है इसलिए ऐसे रूप को देखकर उसकी टकटकी बंध गई। हम लोग जिसे रूपवती कहते हैं, आर्टिस्ट उनकी ओर निगाह उठाकर भी नहीं देखते हैं। आर्टिस्ट का देखना और तरह का देखना होता है, और आंखों से देखना होता है। आर्टिस्ट आनन्द मिश्र ने जब उसे रूपसी मानकर उसके ढेरों स्केच बनाये थे, तब कहना ही पड़ेगा कि नैना चौहान सचमुच रूपवती थी।

पर नैना चौहान का रूप उसकी बर्बादी का कारण नहीं हुआ। बर्बादी का कारण हुआ उसका स्टेट। उसके पन्द्रह लाख की आय के गुलमुहर स्टेट के कारण ही इतना मुकदमा, इतना झंझट, इतनी खून-खराबी की वारदातें हुई थीं।

मिस्टर पुरोहित नैना चौहान के सॉलिसीटर थे।

पहले-पहल उन्हें यकीन नहीं हुआ।

उन्होंने आनन्द मिश्र को बुलाकर पूछा था—'आपका परिचय ?'

आनन्द मिश्र बोला—'जी, मैं एक आर्टिस्ट हूं...'

'आपसे नैना चौहान का क्या रिश्ता था ?'

आनन्द मिश्र बोला—'किसी तरह का कोई रिश्ता नहीं, मैं नैना चौहान का भला चाहने वाला हूं, वेलविशर हूं...'

'इतने लोगों के रहने के बावजूद आप नैना के भला चाहने वाले क्यों हुए ? उसकी खूबसूरती देखकर या उसके गुलमुहर स्टेट की दौलत के लालच में।"

बात सुनकर आनन्द के दिल में हल्की-सी ठेस लगी थी। क्योंकर समझाये कि उसे रुपये-पैसे का लोभ नहीं है। पहले-पहल जब चित्रकारी के क्षेत्र में आया था, उसी समय उसे मालूम था कि इस काम से पैसा नहीं मिलेगा। खासकर इण्डिया में तस्वीर बनाकर बड़ा आदमी बनने की आशा दुराशा है।

कभी उसकी हालत अच्छी थी। शायद उस पैसे के कारण उन लोगों के पास किसी समय घोड़ागाड़ी थी, घर था और वे बाबूगीरी करते थे।

यह सब बहुत दिन पहले की बात है। तब वह छोटा था। उस धन-दौलत की बात उसने सिर्फ कानों से सुनी है, आंखों से उसे देखा नहीं है। जब उसे होश हुआ तो उसने अपने को लखनऊ के मध्य श्रेणी के लोगों के मुहल्ले में एक टूटे-फूटे मकान में पाया। गुजारे के लिए हर महीने की पहली तारीख को मिलने वाले मकान किराये की ओर टकटकी लगाये रहना पड़ा है।

इसी हालत में कला की चर्चा और उस कला-चर्चा के दौरान वह वारदात !

आनन्द मिश्र ने कहा था, 'मैं आपसे अनुनय करता हूं, मिस्टर पुरोहित आप बुलबुल चौधरी पर मुकदमा दायर कर···।'

'मगर मुकदमा करने से लाभ क्या होगा ? पहले यह तो बताइये···।'

आनन्द मिश्र ने कहा था—'लाभ यही होगा कि नैना चौहान को गुलमुहर स्टेट वापस मिलेगा···'

'मगर नैना चौहान तो मर गई है।'

'कौन कहता है कि मर गई है ?'

मिस्टर पुरोहित बोले—'मैं कहता हूं, मर गई है। मरने के बाद उसे काठगोदाम में जलाया गया है, मिस्टर बुलबुल चौधरी ने अपने हाथों दाह-कर्म किया है। वहां बहुत सारे गवाह थे, यहां तक कि जिस डाक्टर ने उसे आखिरी वक्त देखा था, उसका दिया हुआ डैथ-सर्टिफिकेट तक है। इस पर भी आप कहते हैं कि नैना चौहान मरी नहीं है ?'

आनन्द मिश्र ने कहा था—'नहीं, मैं कहता हूं वह मरी नहीं है जो मरी है वह नैना चौहान की तरह ही थी···'

'वह कौन है ?'

'आप तो सब कुछ जानते हैं। वह एक और महिला थी। उसका नाम जानकी था।'

लेकिन इतना कुछ कहने पर भी मिस्टर पुरोहित मुकदमा दायर करने को राजी न हुए। मिस्टर पुरोहित चौहान-परिवार के पुराने सॉलिसीटर हैं। वह नैना चौहान के पिता के पुराने दोस्त ठहरे। दोनों व्यक्ति बहुत दिनों तक एक साथ रहे हैं। आत्मा चौहान के साथ शिकार पर जाते थे। दोनों में गहरी दोस्ती थी। आत्मा चौहान नैनीताल के बड़े जमींदार थे। उनके पास चाय के बगीचे थे, जंगल था। मरने के समय इकलौती लड़की नैना चौहान को रखकर मरे थे। जो कुछ पैतृक सम्पत्ति थी, उसका थोड़ा हिस्सा भी अपनी लड़की को नहीं दिया। अपनी मेहनत से उपार्जित हुए गुलमुहर स्टेट की वसीयत लड़की के नाम कर गये थे। वसीयत में लिखा हुआ था—उनकी लड़की नैना चौहान गुलमुहर स्टेट की एकमात्र उत्तराधिकारिणी है—उनका अपना और कोई था भी नहीं। जो था, वह था उनका भाई आशीष चौहान।

इसी आशीष चौहान के पास नौकरी करने के लिए जाने पर आनन्द मिश्र की नैना चौहान से पहली मुलाकात हुई थी।

अजीव आदमी थे आशीष चौहान !

आशीष चौहान तब बूढ़े हो गये थे। नैनीताल के चौहान स्टेट के तब वह मालिक थे। मगर मनमौजी आदमी होने के नाते इतने आलीशान मकान में किसी से भी ज्यादा मिलते-जुलते नहीं थे। स्टेट की आमदनी से ही परिवरिश हो जाती थी। तब राजा-महाराजा की तरह ही उनका दिन कट जाता था। इसलिए मौज-मजा करने का भरपूर अवसर मिल जाता था।

आशीष चौहान कहा करते थे—'आदमी का अर्थ ही है जानवर···'

अपने नौकर-चाकरों की एक बड़ी जमात लिये महल में ही वक्त गुजारते थे।

हर काम के लिए अलग-अलग नौकर था। कोई कुर्त्ता-पाजामा पहनाता था, कोई उनके पैर दबाता था, कोई बाहर की फरमायश पूरी करता था। नौकर ही थे उनके लिए सब कुछ ! नौकर ही उनके अपने आदमी थे।

किसी को पुकार कर कहते—'मेरे सामने खड़ा रह···' नौकर खड़ा रहता। किस काम के लिए उसे बुलाया है, न तो वह कहते थे और न ही वह पूछता था। वह चुपचाप सामने खड़ा रहता।

कुछ क्षण बाद कहते—'अब जाओ···'

कभी-कभी सामने पुकार कर कहा करते—'किस काम के लिए तुझे बुलाया है ?'

नौकर कहता. 'पता नहीं हुजूर···'

आशीष चौहान रंज हो जाया करते थे।

बोलते थे, 'याद कर तुझे किस काम के लिए बुलाया है···'

नौकर कहता, 'जी, मैं कैसे याद करूं ?'

'तू न याद रखेगा, तो मैं याद रखूं मैं तेरा मालिक हूं या तू मेरा मालिक है ?'

'जी, आप मेरे मालिक हैं।'

'तब ! तब बोलता क्यों नहीं कि मैंने तुझे क्यों बुलाया है ?'

मालिक के चलते एक बड़ी समस्या खड़ी हो जाती। घर के दाई, नौकर, खानसामा, बावर्ची, दरबान, कोचवान—सभी को बड़ी कठिनाई होती। किन्तु करने के लिए किसी के पास कुछ न था।

इसी पागल आदमी के पास नौकरी करने के लिए एक दिन आनन्द आया। आनन्द ने पहले सोचा था, शायद आशीष चौहान की तस्वीर बनानी पड़ेगी। किन्तु बात ऐसी न थी।

आशीष चौहान ने चिल्लाकर पुकारा—'शंकरजी···' ज्यादा पुकारना नहीं पड़ा। बगल के घर से एक बिलाव म्याऊं-म्याऊं करता हाजिर हुआ। नजदीक आने पर आशीष चौहान ने उसे गोद में भर लिया।

बोले, 'इसका नाम शंकर है—इस शंकर जी की तस्वीर बना पाओगे?'

सुनकर आनन्द मिश्र हैरत में आ गया। सिर्फ हैरत में ही नहीं आया, उसकी आवाज ही बंद हो गयी। उस दिन कुछ क्षणों तक उसके मुंह से आवाज ही नहीं निकली। मगर जब उसे नौकरी करनी है तो इतना सोच-विचार करने से क्या फायदा? जैसे आदमी की तस्वीर बनाना। वैसे जानवर की तस्वीर बनाना। आशीष चौहान आदमी से ज्यादा जानवर की कद्र करते थे। वह कहा करते, 'आदमी नमकहराम होता है।'

सो यही सच है। चौहान स्टेट में यह नियम नहीं है कि कोई आशीष चौहान की बात काटे। चौहान स्टेट के वह एकमात्र स्वामी थे। आनन्द मिश्र ने इसलिए बगैर वाद-विवाद किये उनकी बात मान ली।

'इस उपन्यास की शुरुआत मैंने अदालत में हुई खून-खराबी की वारदात से की है। मगर जिस वारदात के फलस्वरूप हत्या हुई, उसकी भी एक शुरुआत है।' शिवनाथ ने मुझे शुरू से सब कुछ कहा था। कहा था कि किस प्रकार आनन्द मिश्र धीरे-धीरे इस चौहान परिवार के साथ पहली रात में घुल-मिल गया था।

सुबह की ट्रेन से आनन्द मिश्र नहीं आ पाया, इसी से पहले दिन उसे आने में देर हुई। जब चौहान स्टेट पहुंचा, शाम हो गयी थी। उस दिन अशीष चौहान से मुलाकात न हुई। लेकिन मकान कितना बड़ा है, उसका बहुत कुछ अन्दाज लगा।

बड़ा लम्बा-चौड़ा बगीचा था। बगीचे में छोटी-सी झील। आकाश को जैसे छू रहे हों, ऐसे बड़े-बड़े पेड़। वे पेड़ किस वक्त के थे इस अन्दाज से ही यह बात समझ में आती है। रात में एक कमरे के अन्दर नौकरों ने ही खाना खाने को दिया। कमरे की दीवार में कितने ही आदमियों की तसवीरें थीं। बड़े-बड़े आकार के तैल-चित्र थे। कितने ही पुरुष, कितनी ही महिलाएं। एक महिला की ओर देखते ही आंखों में टकटकी लग गयी थी। बड़ा ही सुन्दर चेहरा था।

लेकिन आनन्द मिश्र उस ओर ज्यादा देर तक ताक नहीं सका। खानसामा-बाबर्ची कहीं कुछ सोच न बैठें।

आनन्द मिश्र ने नौकर से पूछा, 'साहब क्या मुझसे रात में ही

मिलेंगे ?'

नौकर बोला, 'मैं साहब से पूछ कर कहूंगा हुजूर…' उसके बाद और बातचीत नहीं हुई। कमरे में ईज़ल रखकर अपने को निढाल छोड़ दिया।

तब शायद गहरी नींद नहीं आई थी। एकाएक लगा कि एक गोरा चेहरा खिड़की के कांच के ऊपर जैसे उभर आया हो। हू-ब-हू उस तैल-चित्र के चेहरे की तरह।

देखते ही आनन्द मिश्र को भय-सा लगा। चिल्ला पड़ा, 'कौन, कौन है ?'

आवाज सुनते ही वह चेहरा ओझल हो गया। आनन्द मिश्र ने जल्दी-जल्दी खिड़की खोली। देखा—कहीं कोई नहीं है। बाहर स्वच्छ चांदनी फैली हुई है। फिर जल्दी-जल्दी कमरे का दरवाजा खोलकर बाहर आ खड़ा हुआ। तब भी कोई नजर न आया। केवल ढेर सारे जुगनू बगीचे की झाड़ियों में जगमगा रहे हैं और माथे के ऊपर सफेद आसमान ! सब कुछ जैसे निस्तब्धता में डूबा हुआ है।

लेकिन दूसरे दिन आनन्द मिश्र ने उस चेहरे को फिर देखा। उसे चेहरा कहना ठीक न रहेगा। चेहरे का अक्स ! जैसे यह कोई अलौकिक घटना हो। कहा जाय तो नैना चौहान से जान-पहचान होना भी एक अविश्वसनीय घटना है। उसे तस्वीर बनाने की नौकरी मिली थी। आशीष चौहान के बिल्ली-कुत्तों की तस्वीर बनाते-बनाते नैना चौहान से घनिष्ठता हो गयी।

दूसरे दिन आशीष चौहान ने कहा, 'जरा ऐनक ले आओ तो…।'

तस्वीर बनाते-बनाते जब आनन्द खिड़की के निकट रखा हुआ बूढ़े का ऐनक लाने गया तो एकाएक खिड़की के बाहर नजर गयी। देखा, वही लड़की एक पेड़ के नीचे झूले में पेंग लगा रही है। हू-ब-हू रात में देखा हुआ चेहरा !

आनन्द ने आंखों को और फैलाकर देखा।

'ऐनक लाने में इतनी देर क्यों कर रहे हो ?'

ज्यादा वक्त तक ताक नहीं पाया। आकर फिर शंकर जी की तस्वीर बनाने लगा। शंकर जी काबुली विलाव था। उसके बड़ी-बड़ी मूंछें थीं। पश्मीने की तरह देह का रोआं !

आशीष चौहान पशु-पक्षियों के बड़े शौकीन थे। बगीचे में मयूर था, हरिण था और मकान में था चिड़ियाखाना। बिल्ली, कुत्ते, काकातुआ,

गिनी पीग, खरगोश—कितनी ही तरह के पालतू जानवर। उन्हीं पशु-पक्षियों को लेकर वे वक्त गुजार रहे थे। आदमी के वनिस्बत पशु-पक्षी ही उन्हें अधिक प्यारे थे।

बूढ़े से छुटकारा मिलने पर सीधे बगीचे में पहुंचा। लेकिन वह लड़की अब उस झूले पर नहीं थी, केवल झूला ही आगे-पीछे की ओर हिल-डुल रहा था। आनन्द मिश्र ने अगल-बगल नजर दौड़ाई।

सहसा कहीं से खिलखिलाहट की आवाज कानों में आयी।

पर इधर-उधर देखने के बावजूद कहीं किसी का कोई अता-पता नहीं चला। आहिस्ते-आहिस्ते कमरे के अन्दर आने पर दृष्टि पड़ी, उसके ईज़ल में खुंसे कागज में किसी ने लकड़ी के कोयले से आंके-बांके अक्षरों में लिख दिया है—

'हमारे घर पर एक बंदर आया है।' अचरज की बात! आनन्द को अचरज हुआ। कौन इस तरह यह सब लिख गया है।

अकस्मात् पीछे से दुबारा उसी तरह की हंसी की आवाज आते ही कमरे के बाहर की ओर देखा। दस-बारह साल की एक छोटी लड़की उसे देखते ही भागी जा रही है।

जल्दी-जल्दी जाकर जब उसे पकड़ा तो लड़की जोरों से चिल्ला पड़ी, 'मुझे मार डाला, मार डाला।'

और तुरन्त ही नौकर-चाकरों की जमात दौड़ पड़ी।

'क्या हुआ? क्या हुआ?'

मानो सब कोई एक साथ आनन्द मिश्र की ओर तीखी नजर से देख रहे हों।

छोटी लड़की बोली, 'इसने मुझे पीटा है।'

आनन्द ने इसका प्रतिवाद किया। लेकिन लगा जैसे कोई यकीन न कर रहा हो।

आनन्द अपने कमरे के अन्दर चला गया। ईज़ल से कागज को उतार कर नीचे रखा।

किन्तु कुछ क्षण बाद बूढ़े ने उसे बुला भेजा। नौकरों ने बूढ़े का कान भरा है।

वे बोले, 'आर्टिस्ट को बुलाओ···।'

आनन्द के आकर खड़े होते ही बूढ़ा बोला, 'तुमने अलका को पीटा है?'

आनन्द बोला, 'मैंने पीटा नहीं है सर, झूठ-मूठ को चिल्ला उठी है···'

'अच्छा किया है जो पीटा है, और पीटो।'

आशीष चौहान मानो बहुत खुश हुए हों। पहले दिन आनन्द ने सोचा था कि बूढ़े ने हंसना सीखा ही नहीं है। रोगी की तरह दुबला-पतला वदन। सिर्फ झांव-झांव करता रहता है। कोई नहीं जानता कि क्यों बूढ़ा झांव-झांव करता रहता है। शायद लिवर में गड़बड़ी है। इतनी जायदाद, इतनी संपत्ति फिर भी ऐसा क्यों है? काफी दिनों तक रहने के बावजूद भी आनन्द मिश्र समझ नहीं पाया।

बूढ़ा बोला, 'मैं एक अरसे से तुम पर बहुत प्रसन्न हूं आर्टिस्ट, बहुत प्रसन्न! औरतों की नजर पड़ते ही उसको पीटो, समझे? तुमने शादी की है?'

आनन्द बोला, 'नहीं सर!'

बूढ़ा बोला, 'बहुत अच्छा किया है, शादी-ब्याह कभी मत करना। देखो इसीलिए मैंने शादी नहीं की है। यदि अय्याशी करना चाहते हो तो शादी-ब्याह मत करो भैया, यह मैं तुम्हें कहे देता हूं।'

एक रोज उसी छोटी लड़की ने एक और बखेड़ा खड़ा कर दिया।

उस दिन अपने कमरे के अन्दर आने पर आनन्द ने देखा, उसके ईज़ल पर फिर किसी ने कुछ लिख दिया है। कमरे में घुसते ही समझ गया कि वही लड़की यहां छिपी हुई है। मगर इस तरह खाट पर बैठ गया मानो उसने देखा ही न हो। फिर जेब से रूमाल निकालकर एक चूहा बनाया और उस चूहे को हाथ पर नचाने लगा।

अब वह लड़की अपने को छिपाकर रख नहीं पायी। चूहे के लालच में सामने आ खड़ी हुई।

'तुम्हारा नाम अलका है न!' आनन्द ने चूहे को नचाते हुए पूछा।

'आपको कैसे पता लगा?'

आनन्द बोला, 'मैं जानता हूं कि तुम इस चूहे को लेना चाहोगी।' उसने चूहे को अलका की ओर बढ़ाया।

'कैसे इसे बनाया?'

'मैं तुम्हें सिखा दूंगा।'

अलका चूहे को लेकर खेलने लगी।

'तुम्हारा नाम अलका चौहान है न? और तुम्हारी दीदी का नाम?'

लड़की को ताज्जुब हुआ। बोली, 'आपको कैसे मालूम हुआ कि मुझसे बड़ी बहन है।'

'मैं तुम्हारी दीदी को जानता हूं···' आनन्द ने कहा।

'कैसे जान-पहचान हुई?'

'तुम्हारी दीदी से मेरी काफी घनिष्ठता है। तुम नहीं जानती इसे ?'

आपके साथ कब घनिष्ठता हुई ? दीदी ने तो मुझे इसके बारे में कुछ भी नहीं बताया।'

'वाह, तुम्हारी दीदी तुम्हें सारी बातें क्यों बतायेंगी ?'

अलका का आश्चर्य और भी बढ़ गया।

बोली, 'दीदी मुझे हर बात बताती है···'

'सो बता सकती है। लेकिन यह नहीं बतायेंगी कि मुझसे घनिष्ठता है।'

'पर सच-सच कहिए कि आपसे कब घनिष्ठता हुई ?'

आनन्द हंसने लगा। जैसे बड़ा ही मजा मिला हो।

बोला, 'तुम्हारी दीदी उस दिन मेरे कमरे में आई थीं···'

'ऐं ! सच ! कब की बात है ?'

आनन्द बोला, 'उस दिन रात के वक्त···'

'अच्छा, मैं दीदी को पूछकर आऊं···'

चूहे को लिये, दौड़ती हुई कमरे से बाहर चली गयी।

बाहर से सुनायी पड़ा जोरों से पुकारती हुई जा रही है—

'दीदी ऐं दीदी···'

शिवनाथ कहानी कह रहा था, 'तुम्हें इतनी बातों का पता कैसे चला ये सारी तो व्यक्तिगत बातें हैं ?' मैंने पूछा।

शिवनाथ बोला—'सब कुछ कोर्ट की प्रोसीडिंग से।'

'इन सारी बातों की भी चर्चा कोर्ट में चली थी ?'

'जरूर ! दिनों पर दिन, महीनों पर महीने तक गवाहों ने गवाही दी है। अलका ने भी गवाही दी थी। मैं हर रोज जाकर सुना करता था। मेरे हाथ में उन दिनों कोई मुकदमा नहीं था—मोवक्किल भी नहीं था; हर रोज जाकर मुकदमे की कार्रवाई सुनता था···'

कुछ रुककर शिवनाथ बोला, 'मैं तुम्हें मुख्य-मुख्य बातें बता रहा हूं। अगर इच्छा हो तो इस पर तुम उपन्यास लिखना। इस मुकदमे के जितने भी गवाह थे, सभी लखनऊ आये थे। आशीष चौहान आया था, अलका चौहान आयी थी, बुलबुल चौधरी की पत्नी आयी थी···'

'बुलबुल चौधरी की पत्नी ? वह कौन थी ?'

शिवनाथ बोला, 'सब कुछ कहूंगा तुम्हें, इतना हड़बड़ा क्यों रहे हो। उपन्यास के लिए सामग्री लेने आये हो। बिना सब कुछ बताये रहूंगा। अगर चाहो तो उन सबों को तुम बंगाली बना देना। उपन्यास लिखने के वक्त लखनऊ के बदले कलकत्ता कर देना। नैना चौहान के बजाय नयना चौधरी कर देना···हम लोगों के कोर्ट में कितनी कहानियों की सामग्री है, बाहर रहने पर इसे समझ नहीं पाओगे···'

'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'उसके बाद उसी दिन शाम के वक्त नैना चौहान ने आनन्द मिश्र को अपने कमरे में बुलवाया।'

'नैना चौहान के कमरे का क्या मतलब ?'

'मतलब यह है कि लाइब्रेरी में नैना चौहान को तुमने तो देखा नहीं है। देखते तो समझते कितनी खूबसूरत थी वह ! देखने पर मेरे जैसे यथार्थवादी व्यक्ति को भी कलाकार बनने की इच्छा होती थी। परन्तु आनन्द मिश्र ने जिस खूबसूरती को देखा था, उस खूबसूरती को मैं कहां से देखता ? मैंने कचहरी के अन्दर जब नैना चौहान को देखा, तब उसकी आंखों के नीचे स्याहपन उभर आया था। बाल रूखे-सूखे थे। तब नैना चौहान का मस्तिष्क ठीक नहीं था। बुलबुल चौधरी ने उसे पागलखाने में डाल दिया था। उसकी आंखों से आंसू की बूंदें टपटप गिर रही थीं। उस वक्त जो भी नैना चौहान को देखता, उसका दिल नैना चौहान के लिए दुखी हो जाया करता था···'

'क्यों ? पागलखाने में क्यों डाल दिया था ?'

'उसके बारे में बाद में बताऊंगा। पहले शुरुआत की बातें तो सुनो। चौहान स्टेट के आत्माराम चौहान के इकलौती बेटी नैना चौहान थी। पन्द्रह लाख की आय के गुलमुहर स्टेट की वह मालकिन थी। उसका जब बुलावा आया, वह सहम गया।

पहले तो यकीन ही न हुआ।

आनन्द ने पूछा, 'मुझे ?'

'जी हां।'

नैना चौहान की आया बुलाने आयी थी। आया की उम्र ज्यादा न थी—चेहरा थोड़ा-थोड़ा गम्भीर दीखता था। ज्यादा बातें नहीं करती थी। आनन्द ने उसे बहुत बार देखा है। मानो जुबान ही नहीं हो उसे। झकाझक सफेद सलवार और पंजाबी कुरता पहनती थी। थोड़ा भरा-भरा गोल चेहरा था। लड़की के माता-पिता नहीं हैं, इसलिए हमेशा आया ही

उसकी देखभाल करती है। नैना को कपड़ा-लत्ता पहनाना, उसका जूड़ा बांध देना, देह में साबुन लगाना—सारे काम की जिम्मेदारी उसी पर है।

जल्दी-जल्दी कमीज पहनकर, आया के पीछे-पीछे दुतल्ले की लाइब्रेरी में उपस्थित हुआ।

बहुत बड़ा कमरा था। चारों तरफ अनेकों प्रकार की तस्वीरें थीं जो पत्थर की क्यूरी में सजी पड़ी थीं। दीवार की आलमारी में किताबों का ढेर था। एक कुर्सी पर बिठाकर आया बगल के कमरे में चली गयी। कुछ ही देर बाद नैना चौहान लाइब्रेरी के अन्दर आयी।

आनन्द कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया।

बोला, 'आपने मुझे बुलाया है?'

'हां, बैठिए! आपने अलका से मेरे बारे में कुछ कहा है।'

'अलका से? आपकी छोटी बहन से?'

'हां! आपने उससे कहा है कि मैं एक दिन शाम के वक्त आपके कमरे के अन्दर गयी थी।'

आनन्द की समझ में न आया कि क्या जवाब दे।

बोला, 'मैंने बिल्कुल ऐसा कुछ नहीं कहा है…'

'ऐसा नहीं कहा है इसके क्या मानी! आपने क्या यह नहीं कहा है कि मैं आपके कमरे के अन्दर गयी थी?'

नैना चौहान के सामने खड़े आनन्द का चेहरा घबराहट से सूख गया। नैना चौहान के केवल गले की आवाज ने ही नहीं, बल्कि उसके नाक-नक्शे, शरीर की कांति ने आनन्द मिश्र को मूढ़ जैसा बना दिया। इतने दिनों से वह तस्वीर बनाता आया है, बहुत सारे मॉडलों के पोर्ट्रेट बनाये हैं लेकिन यह तो जैसे और ही तरह की है। इसके समान दूसरी और कोई नहीं। मुंह, नाक, आंख और कान का गठन इस तरह का था कि मानो इसके पहले ऐसा कभी न देखा हो।

'आप यकीन मानें, मेरा मतलब आपको अपमानित करने का बिल्कुल नहीं था।'

'लेकिन मैं कब आपके कमरे के भीतर गयी थी? और आपके कमरे में जाने का मेरा उद्देश्य हो क्या सकता है?'

आनन्द ने कहा, 'बात तो आपकी सही है। लेकिन उस दिन मुझे लगा था कि आपके जैसा ही चेहरा मेरे कमरे के अन्दर झांक रहा है…।'

'क्या—क्या बेकार की बातें कर रहे हैं आप?'

'सच कह रहा हूं, यकीन मानिये, मैं आपसे झूठ नहीं कहूंगा। मैं जब

पहले-पहल जिस दिन इस घर में आया था और जब रात के वक्त सब कोई नींद में खो गये थे, अकस्मात् एक किस्म की आवाज से मेरी नींद टूट गयी। आंख खुली तो देखा, एक चेहरा खिड़की से झुककर अन्दर की ओर झांक रहा है...'

'किस चीज को झांक रहा था?'

'पता नहीं। पहले मैं चौंक पड़ा। डायनिंग हॉल में आपका जिस प्रकार का पोर्ट्रेट टंगा हुआ है, बिल्कुल वही चेहरा—हू-ब-हू आपके चेहरे की तरह चेहरा, आपकी आंख की तरह आंख। नाक, कान, केश—सब आपके जैसे। सो मैं भी दंग रह गया। यह कैसे हो सकता है?'

'आपने गलत देखा है या सपना देखा है। मैं आपकी खिड़की से झांकूंगी, यह कैसे हो सकता है, आप सोच सकते हैं?'

आनन्द अब क्या कहे, सोच नहीं पा रहा था। बोला, 'मुझे क्षमा करें। मैंने मजाक-मजाक में अलका से कहा था, इसके सिवा और कोई मतलब न था...'

नैना ने कहा, 'आप यहां मेरे चाचाजी का काम करने आये हैं। चाचाजी को ही देखें। मैं नहीं चाहती कि बाहर का कोई आदमी हमारे घर के काम-धाम में दखल दे...'

आनन्द कुछ देर तक चुप रहा।

नैना फिर बोली, 'इसके बाद अगर दुबारा ऐसी बात हुई तो आपका यहां रहना जिससे मुमकिन न हो, इसका इन्तजाम करूंगी। अब आप जा सकते हैं...'

आनन्द इसका क्या जवाब दे। चुपचाप अभिवादन कर चले आने के सिवा चारा ही क्या था!

आनन्द लौटकर आ रहा था। किन्तु बाहर से अकस्मात् कानों में चिल्लाहट की आवाज आई। वह ठिठक गया। नैना चौहान की ओर नजर गई, वह भी चिल्लाहट सुनकर हैरत में आ गई। मानो अलका बहुत बड़े खतरे से घिर गई हो।

अलका की ही आवाज है न?

आनन्द को लगा, अलका के गले की ही आवाज है। चिल्लाहट की आवाज बगीचे की ओर से आई है। शायद खलते-खेलते गिर गई है या इससे बढ़कर कोई खतरा हुआ है।

बगल के कमरे से अकस्मात् वही आया बाहर निकल आयी।

'चलो तो दाई, लगा, जैसे अलका चिल्ला पड़ी हो...।' नैना बोली।

कमरे के बाहर बरामदा है। सब कोई उसी तरफ दौड़े। आनन्द भी जाने लगा। आवाज मकान के सदर पोर्टिको के पार बगीचे की ओर से आई थी। नैना उसी ओर जाने लगी। आया उसके पीछे-पीछे चली। आनन्द भी उसी ओर जाने लगा। कई दिनों के अन्दर ही आनन्द अलका को दुलारने लगा था। बड़ी शोख लड़की है। एकाएक किस विपत्ति में फंस गई वह ?

बगीचे में नौकर-चाकरों का जमघट लग गया। किसी की समझ में कुछ नहीं आ रहा है। अलका जमीन पर लुढ़की पड़ी है। उसे होश नहीं है।

कोई कह रहा है, 'क्या हुआ मालकिन ?'

कोई कह रहा है, 'डाक्टर साहब को बुलवा लें।'

नैना भी वहां पहुंची। नैना की आया भी तब तक पहुंच गई थी। उनके साथ आनन्द मिश्र भी आ गया।

किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि यह कैसे हुआ ? पेड़ से गिर गई या खेलते-खेलते गिर पड़ी ? बगीचे में इस जगह क्यों आई थी ? यहां उसे किस चीज की जरूरत थी ?

इतनी बातों का उत्तर कौन दे ? जो उत्तर दे सकती है वह तो बेहोश होकर पड़ी है।

नैना ने अलका को उठाकर घर के अन्दर ले चलने को कहा।

नौकर अलका को उठाकर घर के भीतर ले गये।

सबके चले जाने पर भी आनन्द वहां खड़ा रहा। उसे कुछ शक हुआ। इसके पीछे जरूर कुछ रहस्य है। इस मकान में आते ही उसे एक प्रकार का शक हुआ था। सब कुछ जैसे आश्चर्यजनक है यहां। इस घर के नौकर-चाकर, दाई, आया, खानसामा, चपरासी, सबके-सब कितने आहिस्ते-आहिस्ते बातचीत करते हैं। सभी मानो बड़े चुस्त-दुरुस्त हों। कोई किसी के साथ जी खोलकर बातचीत नहीं करता है। और सबके ऊपर जो बूढ़ा मालिक है, वह तो निहायत पागल आदमी है। हालांकि रुपया-पैसा की उसे कमी नहीं है, वैभव का अभाव नहीं है। मालिक की भतीजी भी अजीब किस्म की है। उस झुटपुटी शाम की वेला में बगीचे में खड़ा-खड़ा आनन्द मिश्र बहुत कुछ सोचने लगा।

यहां आने पर उसे क्या मिला ? रुपया-पैसा ? रुपये-पैसे के ही लिए

क्या वह कुत्ते-बिल्ली की तस्वीर बनाया करता है ? और किसी वस्तु के लिए नहीं ?

एकाएक नैना चौहान का चेहरा याद आया। ऐसी अद्भुत आंखें, ऐसा अद्भुत चेहरा, नाक-नक्श और देह का रंग। काश उसे उस चेहरे की तस्वीर बनाने का मौका मिलता ! लेकिन यह कैसे हो सकता है ? बड़े आदमी की लड़की है, उसका अनुरोध क्यों स्वीकारेगी ? उसे क्या लेना-देना है ?

बगीचे के पेड़ों पर चिड़ियां किचमिच-किचमिच आवाज कर उठीं। आहिस्ते-आहिस्ते वह अपने कमरे की ओर ही आ रहा था। एकाएक उसे लगा बगीचे के एक बड़े दरख्त के तने की ओट में न जाने कौन हिल-डुल रहा है।

उसे एक प्रकार का शक हुआ। इच्छा हुई कि उस ओर जाकर एक बार भली-भांति देख आऊं। अभी इस वक्त वहां कौन खड़ा है ? चोर है क्या ?

लेकिन आश्चर्य की बात। पेड़ की ओट से जो आदमी बाहर हुआ, वह एक औरत थी।

वह औरत दरख्त की ओट से चुपचाप बाहर निकलकर फाटक की ओर दौड़ी।

फाटक दिन-भर खाली ही रहता है। फाटक पार कर बगल में मुड़ते ही लगा, हू-बहू नैना चौहान के जैसा ही चेहरा है।

आश्चर्य की बात है। नैना चौहान तो अपनी आया के साथ घर के अन्दर चली गई है। फिर यह लड़की कौन है ? दबे-पांवों चुपचाप चोरों की तरह क्यों भाग गई ? कहां भागकर गई ?

अब वह पीछे लौट न सका। आनन्द फुर्ती से फाटक पार कर आ खड़ा हो गया। शायद उस लड़की ने उसे देख लिया। आनन्द को देखकर ही शायद भागने की कोशिश की।

आनन्द पीछे-पीछे दौड़ने लगा। चकमा देने के लिए वह लड़की दूसरे रास्ते में मुड़ गई। अंधेरे में साफ-साफ दिखाई नहीं पड़ा। लेकिन आनन्द को लगा कि जैसे नैना चौहान ही उसे अपने पीछे आते देखकर भाग रही हो। आनन्द सचमुच पीछे-पीछे आ रहा है या नहीं, यह देखने के लिए उसने मुंह एक बार घुमाकर देखा और फिर बेतहाशा दौड़ने लगी।

अनजाना रास्ता है। पहाड़ी जंगल है, रास्ता ढालू है। आनन्द को लगा इसके पीछे कहीं जरूर कोई रहस्य है। इस रहस्य का उसे पता लगाना होगा। पता न चला तो रात में उसे नींद ही नहीं आएगी ! घुमावदार,

ऊबड़-खावड़, चढ़ाव और उतराव से भरी राह में दौड़ते-दौड़ते आनन्द के पैरों में कई बार ठेस लगी।

आनन्द जितनी तेजी से पीछे-पीछे दौड़ रहा है, वह लड़की मानो उतना ही आगे निकलती जा रही है। लगता है, वह लड़की इस रास्ते से भली-भांति परिचित है। ये सारे रास्ते उसको जवानी याद हैं।

बहुत दूर जाने के बाद रास्ते के एक मोड़ में वह लड़की मानो गुम हो गयी। फिर वह दीख न पड़ी।

आनन्द मिश्र वहीं चुपचाप खड़ा हो गया। कहां, कितनी दूर चला आया है, समझ नहीं पाया। इधर सब कुछ अजनबी है! शायद दूर कोई बस्ती है। हो सकता है, छोटा-मोटा कोई गांव हो। वहां कई रोशनियां टिमटिमा रही हैं। उस अंधेरे में आगे बढ़ने में डर लगा। वहां खड़ा-खड़ा आसमान की ओर देखता हुआ मानो रहस्य के कुहरे को भेदने की कोशिश करने लगा।

मैंने कहा, 'इतना घुमा-फिराकर क्यों कह रहे हो। वह लड़की कौन थी?'

शिवनाथ बोला, 'भई तुम लोग किस्सा-कहानी लिखते हो। इसलिए तुम्हें जरा रच-रचाव के साथ कह रहा हूं। वकील रहने से क्या मुझे यह हक नहीं है कि कविता की भाषा में कह सकूं।'

मैं बोला, 'कविता की भाषा मेरे लिए रहने दो। तुम सिर्फ मुख्य-मुख्य बातें कह जाओ, बाद-बाकी मैं स्वयं कर लूंगा। हां, तो वह लड़की कौन थी? वह लड़की क्या देखने-सुनने में नैना चौहान की ही तरह थी?'

'हां···' शिवनाथ ने कहा।

'दो बहनें थीं क्या? जुड़वां बहनें!'

शिवनाथ बोला, 'नहीं, देखने में एक जैसी थीं। इसीलिए तो मुकदमा हुआ। बुलबुल चौधरी क्या सीधा-सादा आदमी था? सब कुछ पक्का कर काम में उतरा था।'

'बुलबुल चौधरी कौन था?'

'इस मुकदमे का मुलजिम।' शिवनाथ ने कहा!

शिवनाथ से जो कुछ सुना उससे पता लगा कि बुलबुल चौधरी भी कम बड़ा आदमी नहीं था। यानी काठगोदाम के एक बहुत बड़े जमींदार का बेटा था, इकलौता बेटा! बुलबुल चौधरी के पिता धर्मेन्दर चौधरी उस

जमाने में नामी शिकारी गिने जाते थे। उस जमाने में धर्मेन्दर चौधरी ही उस इलाके के एक ऐसे आदमी थे जो विलायत से हो आये थे। वह नैना चौहान के पिता आत्मा चौहान के घनिष्ठ मित्र थे। दोनों मित्र खेलने के लिए जयपुर एक साथ जाया करते थे। दोनों एक साथ शिकार पर निकलते थे। दोनों बड़े आदमी थे। दोनों मनमौजी थे। नई जवानी के दिनों की धर्मेन्दर चौधरी और आत्मा चौहान की रईसी की कहानी लखनऊ की वेश्याओं के मुहल्ले के घर-घर की चर्चा थी। धर्मेन्दर चौधरी ने किसी वेश्या को महल खरीदकर दिया है। किसी वेश्या का मुजरा सुनकर आत्मा चौहान ने उसका तानपूरा सोने से मढ़वा दिया है, यह सब कहानी लखनऊ के नवाब आग्रह के साथ, रस ले-लेकर सुना करते थे। जब तुम उपन्यास लिखना, तब पृष्ठ का पृष्ठ इसके ब्योरे में रंग सकते हो। पाठक उन्हें पढ़ना पसन्द करेंगे, पढ़कर सुनाना उन्हें अच्छा लगेगा। अभी मैं सिर्फ मुख्य-मुख्य बातें कह रहा हूं।

सो धर्मेन्दर विलायत से एक मेम साहब को ब्याह कर लाया था। मेम साहब के आने से धर्मेन्दर चौधरी के घर में रौनक आ गई।

ब्याह करने के बाद धर्मेन्दर चौधरी ने वेश्या के घर पर आना-जाना छोड़ दिया। उसी मेम साहब की कोख से एक लड़का पैदा हुआ। वही लड़का इस मुकदमे का मुलजिम बुलबुल चौधरी है।

आत्मा चौहान का ब्याह इसी देश की लड़की से हुआ था, जैसे कि भले आदमी की जमात और चार जनों का हुआ करता है। चौहान स्टेट में धूम-धाम आतिशबाजी, भोज-भात, डिनर, पार्टी किसी चीज की चौहान स्टेट में कमी न हुई थी। लखनऊ, नैनीताल और काठगोदाम में जितने भी खानदानी रईस थे, सभी न्योते पर आये थे।

उसी आत्मा चौहान के ब्याह के एक साल बाद एक लड़की पैदा हुई। उस लड़की का नाम रखा गया, 'नैना। नैना चौहान!'

धर्मेन्दर चौधरी और आत्मा चौहान ब्याह के बाद दूसरे ही किस्म के आदमी हो गये। आत्मा चौहान ने वादा किया कि मित्र के लड़के बुलबुल चौधरी के साथ अपनी बेटी नैना चौहान का ब्याह रचेंगे। धर्मेन्दर चौधरी ने भी हामी भरी। हामी ही नहीं भरी, बल्कि बहुत खुश हुए थे।

लेकिन आदमी की इच्छा और ईश्वर की योजना—दोनों बिल्कुल भिन्न वस्तुएं हैं। आत्मा चौहान यह भी देख न सके कि धर्मेन्दर की मेम पत्नी अपने लड़के बुलबुल चौधरी को लेकर फिर विलायत वापस चली गई। पत्नी के अपने पुत्र को साथ लिए चले जाने पर धर्मेन्दर चौधरी भी मानो दूसरे किस्म का आदमी हो गया। लोगों से मिलना-जुलना बिल्कुल

बन्द कर दिया। वेश्या का कोठा पहले ही सूना कर गया था। आत्मा चौहान की मृत्यु के बाद लखनऊ शहर की रईसी मानो खत्म हो गई। लेकिन वे वसीयत कर गये थे। वसीयत में लिखा हुआ था कि धर्मेन्दर चौधरी के लड़के बुलबुल के साथ नैना का व्याह होने पर दामाद को तिलक में गुलमोहर स्टेट मिलेगा। पन्द्रह लाख रुपये की आय का गुलमुहर स्टेट धर्मेन्दर के लड़के को देकर मानो वह वेफिक्र होकर मरे थे।

न आत्मा चौहान रहे, न आत्मा चौहान की पत्नी। और न रही धर्मेन्दर चौधरी की विलायती मेम औरत। एक दिन गोद के बच्चे को साथ लिये हिन्दुस्तान से लापता हो गई।

आत्मा चौहान का एकमात्र भाई आशीष चौहान हमेशा से पागल जैसा आदमी है। न तो रुपये-पैसे जगह-जायदाद का लालच है और न औरतों की ख्वाहिश, अपने स्टेट के एक महल को चिड़ियाखाना बनाकर उसी में रहते हैं। कहीं से किसी अच्छी चिड़िया, किसी अच्छे पालतू जानवर की खबर मिलते ही ढेर सारा पैसा देकर खरीद लेते थे। उन्हें ही लेकर जिन्दगी गुजार रहे थे। घर में भतीजियां कैसे दिन काट रही हैं। उनके लिए माथा-पच्ची करने का वक्त उसके पास न था।

थोड़ी-सी चिल्लाहट भी कानों में जाती तो खिड़की-दरवाजे बन्द कर लिया करते थे। उनके जीव-जन्तु बीमार पड़ने से उन्हें जितना फिक्र होता था, भतीजियों का उसकी तुलना में कुछ भी नहीं। उसके पास एक बढ़िया-सा पेकनीज कुत्ता था। उस कुत्ते के एकाएक मर जाने से उनका स्वास्थ्य गिर गया। उसी कुत्ते के सदमे में जो सेहत गिरी तो फिर कभी संभली नहीं। उसी वक्त उन्होंने तय किया कि उनके जितने भी कुत्ते, बिल्ली, हिरण, मोर हैं, सबकी तसवीरें बनवाकर रख लेंगे। अगर बुद्धिमानी से काम लेकर पेकनीज कुत्ते का तैल-चित्र बनवा लेते तो आज उन्हें इतनी तकलीफ नहीं होती। उनकी सेहत भी इतनी खराब नहीं होती। जरूरत पड़ने पर उस ओर देख-देखकर हृदय में शान्ति पाते।

यही सोचकर अपने सॉलिसीटर को लखनऊ खबर भेजी कि एक आर्टिस्ट भेज दें। और वह आर्टिस्ट है आनन्द मिश्र। आनन्द मिश्र ने समाचार-पत्र में विज्ञापन देखकर आवेदन-पत्र भेजा और उसे यह नौकरी मिली।

मैंने पूछा, 'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'आनन्द मिश्र के चौहान स्टेट का आर्टिस्ट होकर पहुंचने के पहले ही बुलबुल चौधरी इण्डिया लौट आया था।'

'और उसकी मेम मां ?'

'मेम मां का तब तक देहान्त हो चुका था। इण्डिया में उसकी इतनी बड़ी जायदाद है, इसका पता उसे बड़े होने पर चला। जब तक मेम साहब जिन्दा थीं, उसे इण्डिया न आने दिया। यानी इन बातों की जानकारी भी हासिल न हुई। पहले जब चौधरी-परिवार के एटर्नी का इण्डिया से लिखा हुआ पत्र मिला तो सारी बातों की जानकारी हुई। तब पता चला कि इण्डिया में कोई उसके पिता थे। उसके पिता का स्टेट था। सिर्फ स्टेट का ही नहीं नैना चौहान से उसके व्याह होने की बात का भी पता चला और पता चला कि नैना चौहान की पन्द्रह लाख रुपये की आय का गुलमुहर स्टेट है। एटर्नी की चिट्ठी मिलने पर पच्चीस साल के बाद बुलबुल चौधरी इंडिया वापस आया।

एटर्नी से मिलकर काठगोदाम स्टेट की दलील देखी। धर्मेन्दर चौधरी स्टेट में तब कोई नौकर-चाकर नहीं था। थी केवल बाप के जमाने की एक सिर्फ बूढ़ी और उसकी लड़की।

वहां से सीधे वह आशीष चौहान से मिलने गया। एटर्नी का पत्र उसके पास था। उसी पत्र को दिखाकर बुलबुल चौधरी बूढ़े का अपना आदमी जैसा हो गया।

बूढ़े चौहान जी बोले, 'अच्छा, तुम लौट आये हो !'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'हां चाचाजी, मैं बिना लौटे रह न सका। और रहता भी कब तक विदेश में पड़ा···'

बूढ़े ने कहा, 'और कुछ पहले आते तो अपने पिता को देख पाते···'

'मेरे भाग्य में न था, मैं क्या करता ?' बुलबुल चौधरी बोला।

'पिता की तुम्हें याद आती है ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'नहीं चाचाजी, मुझे कुछ भी याद नहीं··· याद रहे भी तो कैसे···'

'क्यों ? तुम्हें याद क्यों नहीं है ? तुम्हारी उम्र उस वक्त कितनी थी ?'

'जी, बारह या तेरह—ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा···'

'बारह-तेरह साल की उम्र की बातें याद नहीं भी रह सकती हैं। और उसके बाद तो कितने सारे साल बीत गये हैं। कितनी दूर है वह सात समुन्दर तेरह नदी पार का मुल्क ! यहां है क्या ? उस मुल्क में एक बार जाने पर आदमी इण्डिया की बातें कहां याद रखता है !

अगर दोषी कहा जाय, तो वह तुम्हारी मां ही थी। तुम्हारे पिता धर्मेन्दर, मेरे भैया का जिगरी दोस्त थे। मेरे भाई साहब और तुम्हारे पिताजी दोनों दो शरीर में एक प्राण थे। अगर एक दिन भी भेंट मुलाकात न होती तो दोनों का मन खराब हो जाया करता था।'

कितनी दूर है काठगोदाम, फिर भी भाई साहब वहां गाड़ी लेकर पहुंच जाते थे। दूसरे दिन अड्डावाजी कर लौट आते थे। ऐसा हमेशा होता था। आजकल ऐसी दोस्ती दीखती नहीं है। विना देखभाल के इतना बड़ा चौधरी स्टेट बर्बाद हो रहा था। स्टेट की आमदनी कमते-कमते नाममात्र की रह गई थी। वापस आने पर बुलबुल चौधरी उसी टूटे हुए स्टेट को जोड़ने लगा। चौधरी लॉज फिर से आवाद हो उठा। फिर कमरे-कमरे में रोशनी जगमगाने लगी। इलेक्ट्रीशियन आया, मेकेनिक आया, नया मैनेजर आया। बुलबुल चौधरी का नाम-यश दुबारा उसके पिता की तरह चारों तरफ फैल गया। बुलबुल चौधरी ने नई बन्दूक का लाइसेंस लिया, गाड़ी खरीदी। काठगोदाम के रईस लोगों के मुहल्ले में चर्चा होने लगी कि धर्मेन्दर बाप का वेटा है। इसी को कहते हैं, 'बाप का वेटा है और सिपाही का घोड़ा।'

चौहान जी बोले, 'तुम कल यहां आना। मैं एटर्नी को पत्र लिख दूंगा। भाई साहब के सॉलिसीटर मिस्टर पुरोहित हैं। वे ही तुम्हें भाईसाहब की वसीयत दिखा देंगे। नैना को तो इन वातों का पता ही नहीं है। उसे सब कुछ खुलासा कहना होगा।'

'अभी उसे यह सब कहने की जरूरत नहीं है चाचाजी।' बुलबुल चौधरी ने कहा।

'क्यों ?'

'न कहना ही अच्छा रहेगा। जब इतने दिनों तक मालूम न हुआ तो वात और कुछ दिनों तक दवी ही रहे···'

'लेकिन जिसके साथ तुम्हारा ब्याह होगा, उसे एक बार देखोगे भी नहीं।'

'सो तो देखूंगा ही चाचाजी। जिन्दगी-भर देखूंगा ही। हमारी सारी जिन्दगी तो सामने पड़ी है। पहले जायदाद की बातें ठीक हो जाएं।'

चौहानजी बोले, 'जायदाद में तो कोई गड़बड़ नहीं है सब कुछ ठीक ही है। साल में अभी भी स्टेट से पन्द्रह लाख रुपये की आय होती है···'

'लेकिन नैना चौहान अगर मुझसे व्याह करने को राजी न हो चाचाजी तब ?'

चौहान जी रंजिदा हो उठे।

'राजी न होगी—इसका मतलब ? मतलब क्या है, कहो तो सही। भाई साहब ने मरने से पहले वसीयत नहीं की है ? भाई साहब ने सब कुछ साफ-साफ लिख दिया। तुम्हारे पिताजी अगर जिन्दा रहते तो उनकी जुबान से ही सब कुछ मालूम हो जाता…'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'पर यह तो बहुत पहले की बात है। तब की और आज की बात में फर्क है। अब उनकी लड़की उस बात को मानने को राजी न हो तो ?'

'इसके मानी ?'

चौहान जी बुलबुल चौधरी की बातें सुनकर और ज्यादा बिगड़ पड़े। वह बोले, 'इसका मतलब यह कि तुम मेरी भतीजी के साथ व्याह नहीं करना चाहते हो। तुमने भी क्या अपने पिता की तरह मेम से शादी की है ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'नहीं चाचा जी. मैं विवाह क्यों करने लगा ? मैंने तो अपनी मां से सब कुछ सुना है, आपको बिना पूछे मैं शादी कर सकता हूं ?'

'तब ? तब ऐसी बातें क्यों कहते हो ? मैं बूढ़ा हो गया हूं, कब तक चल बसूं, कोई ठीक नहीं। अभी यदि मेरा बुलावा आ जाय तो उन लोगों की देखभाल कौन करेगा ?'

ये बातें बहुत पहले की हैं। यानी कि आनन्द मिश्र के तस्वीर बनाने के लिए चौहान स्टेट में आने के बहुत पहले की बातें। मिस्टर पुरोहित ने आकर जायदाद की सारी बातें समझा दी हैं। बुलबुल चौधरी बीच-बीच में यहां आता है, मिलता-जुलता है, बातचीत करता है। चौहान जी उसके पास बैठते हैं। शान्त सुशील बच्चे की तरह मन लगाकर बूढ़े की बात सुनता है। नैना चौहान से दो-चार बातें कर चला जाता है। शादी की बात करीब-करीब तय है। यानी तिथि लग्न सब कुछ तय हो गया है। इसी समय झमेला आ खड़ा हुआ।

शिवनाथ ने कहा, 'अगर यह शादी होती तो वास्तव में कोई घटना न घटती…'

मैं अचरज में डूब गया।

मैं बोला, 'बुलबुल चौधरी के साथ नैना चौहान की शादी हो गई ?'

शिवनाथ बोला, 'क्यों ? अवाक् क्यों हो गये ?'

सचमुच मैं अवाक् हो गया था। शिवनाथ की कहानी बड़ी रोमांटिक लग रही थी। मन-ही-मन कल्पना की थी, आर्टिस्ट आनन्द मिश्र के साथ

नैना चौहान का रोमांस चलेगा। रस ले-लेकर उसे लिखूंगा। पर इसी बीच बुलबुल चौधरी के साथ ब्याह हो गया। अब पाठक इस उपन्यास को क्यों पढ़ने लगे !

शिवनाथ ने कहा, 'तुम जितना चाहो, रोमांस का पुट भर दो। मुझे कोई आपत्ति नहीं। कोई तुम्हें रोक तो नहीं रहा है। मैं तो सिर्फ मुख्य-मुख्य बातें बता रहा हूं।'

'दूसरे की औरत से कहीं प्रेम होता है ? यह तो अवैधानिक है। आनन्द मिश्र को इन सारी बातों की जानकारी नहीं थी। नैना चौहान भी नहीं जानती थी। जब तक जानकारी न हो जाय तब तक आनन्द को नैना चौहान से प्रेम करा दो···'

'प्रेम कैसे करा दूं ? शिवनाथ ने कहा, पर ऐसा हुआ भी है।'

मैंने कहा, 'कैसे ?'

शिवनाथ ने कहा, 'उसी दिन प्रेम की शुरुआत हुई जिस दिन अलका बगीचे में बेहोश होकर पड़ी थी और आनन्द उस लड़की के पीछे-पीछे गांव की ओर आ गया था।'

'सो कैसे ?'

शिवनाथ ने फिर कहना शुरू किया।

नैना चौहान तब अलका के चेहरे की ओर झुककर खड़ी थी। जब अलका ने आंखें खोलीं तो करीब-करीब एक घंटा गुजर चुका था। अलका के माथे पर बर्फ डाली जा रही थी।

अलका ने आहिस्ते-आहिस्ते जैसे ही आंखें खोलीं, नैना चौहान ने झुक कर पूछा, 'क्यों री, कैसी है ? वहां उस तरह गिर कैसे पड़ी थी ?'

अलका तब भी डरी-डरी-सी दीख रही थी। उसके चेहरे पर आतंक छाया हुआ था।

बोली, 'मैंने भूत देखा था दीदी।'

'क्या बकती है तू ?'

'हां दीदी, मुझे मालूम था कि तुम उस वक्त घर के अन्दर थीं। लेकिन फिर भी ठीक तुम्हारी ही तरह की एक औरत मेरे सामने आकर खड़ी हो गई···'

नैना बोली, 'दुत् ? ऐसा भी कहीं होता है ?'

'हां दीदी, सच-सच कह रही हूं, बिलकुल तुम्हारे जैसा ही चेहरा आंख, नाक, कान—सब कुछ ! सिर्फ लगा कि तुम जैसे थोड़ी दुबली हो गई हो। सो देखते ही मेरे माथे में चक्कर आ गया। मैं पछाड़ खाकर गिर पड़ी।'

सुनकर नैना चौहान अवाक् हो गई, पर बोली कुछ भी नहीं। नैना की आया पास खड़ी थी।

नैना ने उससे कहा, 'गुलाबी, तू तनिक यहां बैठ, मैं अभी आई···।' फिर अलका की ओर देखकर बोली, 'अलका तू चुपचाप पड़ी रह, मैं अभी तुरन्त आती हूं···।'

कहकर कमरे की सीढ़ी तय कर नीचे उतर आयी। बरामदे वाले कमरे में तब रोशनी जल चुकी थी।

सीढ़ी उतरने पर एक मंजिला हाल था। उसके बाद बरामदा। बरामदे से सीधे चलते-चलते उसे एक तरह के संकोच ने आ दबाया, फिर चलने लगी। बरामदे के आखिरी छोर के कमरे में चाचाजी का आर्टिस्ट आनन्द रहता है।

आर्टिस्ट के कमरे के सामने आने पर जाने क्यों उसे फिर संकोच ने आ घेरा। कुछ देर पहले ही तो नैना ने आर्टिस्ट को खरी-खोटी सुनाई है। वह मन-ही-मन पछताने लगी। उससे अगर क्षमा न मांगी तो बड़ा अन्याय होगा।

बगल से एक नौकर जा रहा था। नैना ने उसे बुलाया।

कहा, 'एं, इधर आ!'

नौकर नजदीक आया।

नैना बोली, 'जा, कमरे के अन्दर जाकर देख तो, आर्टिस्ट साहब हैं कि नहीं। कहना कि मैं मिलना चाहती हूं।'

कमरे में अंधेरा रेंग रहा था। हो सकता है कि आर्टिस्ट अंधेरे ही में कमरे में चुपचाप बैठे हों।

नौकर अन्दर जाकर देख आया। बोला, 'नहीं मालकिन जी, अन्दर कोई नहीं है।'

साथ-ही-साथ पीछे से किसी के पैरों की आवाज सुनाई पड़ी। गर्दन घुमाकर देखते ही पता चला आनन्द है।

नैना चौहान को उस हालत में अपने कमरे के सामने पाकर आनन्द को आश्चर्य हुआ।

ज्यों ही दोनों की नजरें मिलीं आनन्द ने पूछा, 'आप?'

नैना ने आनन्द की ओर देखकर कहा, 'आपसे एक बात कहनी है···।'

'मुझसे?'

'हां!'

'क्या है, कहिये?'

'मैंने आपको तीखी बातें कही थीं। लेकिन आपने जो कुछ कहा था, बिलकुल सही है। अलका भी यही बात कह रही थी।'

'सच ?'

'हां, एक औरत को देखकर वह भी डर गई थी। उसे मालूम था कि मैं कमरे के अन्दर हूं। अकस्मात् हू-बहू मुझसे मिलते-जुलते चेहरे वाली एक लड़की को बगीचे में देखते ही वह डर से बेहोश होकर गिर पड़ी थी।'

'वह देखने-सुनने में कैसी है ?'

'हू-बहू मुझ जैसी ही। मेरे जैसा ही चेहरा, नाक-नक्श सब कुछ···।'

आनन्द को भी आश्चर्य लगा।

बोला, 'लेकिन यह हुआ कैसे ? आपके कोई बहन भी है क्या ?'

'नहीं।'

'तब ? अलका ही क्या आपकी एकमात्र बहन है !'

'नहीं, अलका मेरी सगी बहन नहीं है, वह मेरी दूर के रिश्ते की मौसेरी बहन है, उसके मां-बाप कोई नहीं है। मैं इस मकान में अकेली रहती हूं इसलिए मेरे पास है, आप कृपया बुरा न मानें।'

आनन्द बोला, 'नहीं, मैंने बुरा नहीं माना है···।'

जाते-जाते नैना बोली, 'मैं यही कहने आई थी···'

आनन्द ने निकट आकर कहा, 'मैं भी आपसे एक बात कहना चाहता हूं। आप नहीं आतीं तो भी मैं भरसक प्रयत्न करके आज आपसे मिलने जाता···।'

'क्यों ?'

'मैं भी इस घटना के सम्बन्ध में एक बात सुनकर आया हूं···।'

'क्या बात ?'

'बगीचे से जब आप लोग सब कोई अलका को ले आईं, मेरे मन में बहुत शक हुआ। मैंने देखा कि बिल्कुल आप जैसी एक महिला फाटक से बाहर निकली···।'

'उसके बाद ?'

'उसके बाद मैं पीछे-पीछे गया। लेकिन कुछ दूर जाने पर वह कहां छिप गई, मेरी समझ में नहीं आया। उसके बाद लौट आया। मुझे एक तरह के सन्देह ने जकड़ लिया था। रास्ते में एक आदमी से पूछा, 'उधर किसी औरत को जाते हुए देखा ? वह आदमी उलटी दिशा में आ रहा था···'

'उसके बाद ?'

'उस पर उन्होंने जो कहा, सुनकर मैं दंग रह गया। उन्होंने कहा, 'एक औरत लखनऊ के पागलखाने से निकल कर यहां नैनीताल में आयी है। उसे बुलबुल चौधरी के आदमी खोज रहे हैं।'

बुलबुल चौधरी के आदमी ?'

'बुलबुल चौधरी कौन हैं ?—समझ नहीं पाया। उस औरत का चेहरा भी क्यों आपके जैसा है—यह भी समझ में न आया। इसलिए सोचा कि आपसे कहूं, हो सकता है कि आपको कुछ मालूम हो···'

पता नहीं, नैना कुछ देर तक क्या-क्या सोचती रही। उसके बाद बोली, 'वह आदमी कौन है ?'

'मुझे मालूम नहीं। रास्ते में मैंने उस आदमी से नाम-धाम कुछ भी नहीं पूछा।'

'लेकिन एक और औरत का चेहरा मेरे जैसा कैसे हुआ ?'

'मैं कैसे कहूं ? मैं तो यहां नया आदमी हूं। इसके पहले मैं यहां कभी आया भी नहीं हूं···मुझे लगता है कि इसके पीछे जरूर कोई राज है···'

'क्या राज हो सकता है ?'

आनन्द ने कहा, 'कह नहीं सकता, लेकिन मुझे बड़ा डर लगता है।'

'डर क्यों लगता है ?'

'पता नहीं, डर क्यों लगता है। इतना जरूर है कि इसके बारे में मुझे कुछ नहीं कहना चाहिए। मैं आपके परिवार के बाहर का आदमी हूं। मैं दो दिनों के लिए यहां आया हूं, दो दिन बाद काम खतम होते ही फिर लौट जाऊंगा। लेकिन आपसे एक अनुरोध करूं ?'

'कहिये !'

'आप जरा सतर्क रहा करें।'

नैना चौहान चुपचाप रही। कोई उत्तर न दिया।

आनन्द कहने लगा, 'जानता हूं कि मेरे डर का कोई मानी नहीं है। तर्क करके भी आपको कुछ समझा न पाऊंगा, लेकिन यहां आने के बाद शुरू दिन से ही आपके मकान की हर चीज देख-सुनकर हैरत में आ गया हूं···'

नैना बोली, 'किन्तु कौन मुझे किस तरह की हानि पहुंचायेगा ?'

आनन्द बोला, 'आपको कौन हानि पहुंचायेगा, मैं कह नहीं सकता। सो मुझसे ज्यादा आप ही समझ सकती हैं।'

'मगर मैं सचमुच कुछ भी नहीं समझ पा रही हूं।'

आनन्द ने कहा, 'मुझे कहना चाहिए, इसलिए मैंने आपसे कहा। अगर

कुछ अनाधिकार चर्चा की हो तो आशा है, क्षमा करेंगी।' फिर एकाएक अपनी बात को रोककर कहा, 'अच्छा अब मैं चलूं···'

कहकर आनन्द मिश्र अपने कमरे के अन्दर गया।

आर्टिस्ट के इस बर्ताव ने नैना चौहान को मानो विचलित कर दिया हो। फिर वह मन में सब कुछ गुनते-गुनते अपने कमरे की ओर चली गयी।

उस दिन फिर से मुलाकात हुई।

शिवनाथ ने कहा, 'ऐसे एक नये रहस्य के जाल में दोनों आहिस्ते-आहिस्ते किस प्रकार उलझते गये इसे लिखकर समझा नहीं सकोगे क्या? ऐसा तो हजारों उपन्यासों में लिखा जा चुका है। अपनी इच्छा से···'

मैं बोला, 'लेकिन वह औरत कौन थी? दोनों का चेहरा एक जैसा कैसे हुआ?'

शिवनाथ ने कहा, 'वही बात नैना चौहान ने दूसरे दिन पूछा।'

'किससे?'

शिवनाथ ने कहा, 'आर्टिस्ट तस्वीर बनाकर मालिक के कमरे से लौट रहा था। एकाएक बरामदे के पीछे से आवाज आई।'

'आनन्द···सुनिये···'

आनन्द मुड़कर खड़ा हो गया। उसके बाद नैना की ओर आगे बढ़ आया और पूछा, 'अलका कैसी है?'

नैना ने कहा, 'अच्छी है।'

'मैंने कई दिनों से उसे देखा नहीं, सो आपसे पूछा। कई दिन से मेरे पास नहीं आई है···'

'मैंने आपको दूसरे मकसद से बुलाया था।'

'कहिये।'

'अलका ने बताया था कि आप हम लोगों का मकान छोड़कर जा रहे हैं—चाचाजी का काम खत्म हो गया है?'

आनन्द ने हंसकर कहा, 'अलका ने बताया है आपसे? मैंने उसे डराने के खयाल से कहा था···'

'इसका मतलब?'

'अलका मुझे प्यार करती है न! सो जांच की थी कि उस बात से···'

'ओह, यह बात है! आज जब अलका ने मुझे यह बात बताई तो मैं भी

चकित हो उठी।'

'क्यों, आप क्यों चकित हो उठीं ?'

'सोचा, इतनी जल्दी आपका काम खत्म हो गया ? चाचाजी को बिल्ली-कुत्तों की कमी नहीं है। इतनी जल्दी आपने सबों की तस्वीर कैसे बना डाली ?'

आनन्द ने कहा, 'देखिये सच कहूं, मुझे और ज्यादा दिन रुकना अच्छा नहीं लगता। जब आपके चाचाजी का काम लेकर यहां आया था, तो सोचा था, आदमी की तस्वीर बनानी पड़ेगी···'

'लेकिन आपने तो आदमी की तस्वीर बनाई है।'

'आदमी की तस्वीर कहां बनाई है ? सिर्फ आपके चाचाजी के बिल्ली-कुत्ते और चिड़ियों की तस्वीरें बनाई हैं। बनाते-बनाते उंगली में गड्ढा पड़ गया।'

सहसा नैना बोली, 'आपने मेरी तस्वीर नहीं बनाई है ?'

आनन्द ने नहीं सोचा था कि रंगे-हाथ पकड़ा जायेगा। शुरू में तो सकते में आ गया।

फिर बोला, 'सच आप गुस्सा गयी हैं क्या ? यकीन मानिए, जीव-जंतुओं की तस्वीर बनाते-बनाते मैं थक गया था। सुन्दर-सा कोई मुखड़ा मिल नहीं रहा था कि उसकी तस्वीर बनाऊं। सो आपका चेहरा जितना याददाश्त में था सोच-सोचकर उसकी तस्वीरें बनायीं। सोचा नहीं था कि आपको पता चल जाएगा·· ।'

उसके बाद नैना की ओर देखकर बोला, 'लेकिन आपको सूचना किसने दी ? मैंने तो किसी से भी नहीं बताया था। मैंने तो दरवाजे की सिटकनी बन्द करके तस्वीर बनाई है। कोई जान तो सकता नहीं है। अलका को भी इसके बारे में कुछ नहीं बताया है···।'

नैना हंसने लगी। बोली, 'आपने जो किया है, मैं चाचाजी से कहने नहीं जा रही हूं।'

'नहीं, नहीं, कृपया मत कहें। गरीब आर्टिस्ट हूं, आप लोगों जैसा बड़ा आदमी नहीं हूं। नौकरी चली जाएगी तो मुझे कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। इसके अलावा मैं दो-चार दिनों के लिए आया हूं, कुछ दिनों के बाद ही चल देना है, फिर कहां रहेंगी आप और कहां रहूंगा मैं, कभी-कभी उन तस्वीरों को देखूंगा और जब रुपये-पैसे की कमी होगी ! तब···।'

नैना ने कहा, 'तब क्या करेंगे आप, बेच देंगे ?'

आनन्द ने कहा, 'आपने ऐसा सोचा ही क्यों कि मैं इन्हें बेच डालूंगा।'

नैना बोली, 'आप मेरी तस्वीर बनाकर इसके सिवा क्या करेंगे ?'

आनन्द ने कहा, 'सो मैं क्या करूंगा, आपके सामने कहने का साहस मुझमें नहीं है। हां चाचाजी से मत कहें। लेकिन सच बताइये तो, आपसे यह बात किसने कही ? वह कौन है ?'

नैना बोली, 'मेरी आया गुलाबी !'

'गुलाबी ? क्या उसने मेरे कमरे में घुसकर सब कुछ देखा है ? आश्चर्य की बात है।'

नैना ने कहा, 'गुलाबी के देख लेने से कोई हर्ज नहीं है। वह मेरी बड़ी खातिरजमा आया है···।'

सहसा बाहर जूतों की आवाज हुई। आनन्द ने दृष्टि फेंकी, नैना की भी नजर गई। दोनों ने देखा कि बुलबुल चौधरी घर के भीतर आ रहे हैं।

आनन्द ने जल्दी-जल्दी कहा, 'मैं चला···।'

कहकर अपने कमरे की ओर चला आया। वहां और रुका नहीं।

यह वाकया उसी दिन शाम के वक्त का है।

नैना चौहान तीसरे पहर बगीचे से लौटकर अपने कमरे की सीढ़ियां चढ़ रही थी। आखिरी सीढ़ी की बगल के दरवाजे की ओट से सहसा एक लड़की बाहर निकली। लड़की को देखते ही नैना चौंक पड़ी।

'कौन ? कौन हो तुम ?'

लड़की सामने आई, मुंह के पास मुंह ले जाकर बोली, 'चुप रहो बहन, चिल्लाना मत···।'

'मगर तुम हो कौन ?'

लड़की बोली, 'कहती हूं, तुम चिल्लाओ मत। मैं तुमसे मिलने को ही आई हूं। तुमसे दो बातें कर लौट जाऊंगी।'

'लेकिन तुम हो कौन ? यहां किस तरह आई ?'

'बहुत तकलीफ से आई हूं, सबकी नजरें बचाकर आई हूं।' मुझे अपने कमरे के अन्दर ले चलो ! एकान्त में तुमसे दो बातें करूंगी।'

नैना समझ गई, यह वही लड़की है—वही, जिसे आर्टिस्ट ने देखा था। अलका ने देखा था। सच, उसी के जैसा चेहरा है। मानो दोनों बहनें हों।

'मैं बहुत दिनों से इस कोशिश में हूं कि तुमसे मिलूं। मेरे सामने मुसीबत है, तुम्हारे सामने भी मुसीबत है ?'

'मेरे सामने ? मेरे सामने क्या मुसीबत है ?'

'तुम्हारे सामने मुसीबत है, इसी से तो कह रही हूं। वर्ना मैं क्यों आती ? मुझे अपने घर के अन्दर ले चलो बहन, वर्ना कोई मुझे देख लेगा।'

नैना को एक तरह का सन्देह हुआ। आर्टिस्ट ने भी उसे होशियार रहने को कहा है। यह लड़की भी कह रही है।

जल्दी-जल्दी अपने कमरे के अन्दर ले जाकर दरवाजा बन्द कर दिया। अन्दर जाकर लड़की बोली, 'यक़ीन मानो, तुम्हारी भलाई के लिए ही मैं आयी हूं। तुम मुझे पहचानती नहीं हो, लेकिन मैं तुमको पहचानती हूं।'

'कैसे पहचानती हो?'

'सब कुछ कहने का वक्त नहीं है। शायद तुम जानती नहीं कि तुम्हारे व्याह की बातचीत चल रही है।'

'मेरे व्याह की?'

नैना हैरत में आ गई।

बोली, 'किसने तुमसे कहा?'

मैं सब जानती हूं। बुलबुल चौधरी को पहचानती हो? काठगोदाम के धर्मेन्द्र चौधरी के लड़के बुलबुल चौधरी को? असल में वह बुलबुल चौधरी नहीं है···।'

'इसका मानी है?'

'हां, मैं जो जानती हूं, तुम्हें सब कुछ बता जाती हूं। उसी आदमी ने मुझे पागलखाने में डाल दिया था। मैं वहां से भाग आई हूं। मुझे उसने बर्बाद कर दिया है, अब वह तुम्हें बर्बाद करेगा।'

बात कहते-कहते लड़की की आंखें ज़ाने किस तरह नाचने लगीं।

सच लड़की पागल है क्या?

सहसा बाहर से किसी ने दरवाजे पर दस्तक दी।

सुनते ही लड़की चौंक पड़ी—अब क्या होगा? इस कमरे में कोई आ जाये तो?

'तुम्हें सब कुछ कहूंगी, सब कहने के लिए ही आई हूं बहन? यकीन मानो, मुझे पागल करार कर झूठ-मूठ को रोक रखा है···।'

दरवाजे पर फिर दस्तक पड़ी।

नैना ने चिल्लाकर पूछा, 'कौन? कौन दरवाजे पर धक्का दे रहा है?'

'मैं चलूं बहन, मुझे कहीं छिपा दो, बहन! मुझे पकड़ लेगा। पकड़कर वे मुझे पागलखाने में डाल देंगे। तब मेरा क्या होगा?'

अब नैना को किसी भी तरह का सन्देह न रहा। लड़की जरूर पागल है। इसके बाद बगल के बरामदे का दरवाजा खोलकर बोली, 'तुम यहां छिपी रहो, मैं दरवाजा खोलकर देखती हूं कि कौन है···'

लड़की को बरामदे में निकालकर नैना ने दूसरा दरवाजा खोल दिया। गुलाबी थी।

'क्यों गुलाबी, दरवाजे पर धक्का क्यों दे रही थी?'

गुलाबी बोली, 'चौधरी साहब आये हुए हैं मालकिन जी! आपको बुला

रहे हैं।'

नैना ने कहा, 'कह दे, अभी मुझे मिलने की फुर्सत नहीं है।

'चाचाजी ने आपको वुला देने को कहा है।'

'वुलाने दे चाचाजी को। मैं नहीं जाऊंगी, जा नहीं सकती···।'

इस पर कुछ बोलने का साहस नहीं हुआ। फिर भी गुलावी खड़ी रही।

'यहां से जा, 'कह रही हूं, यहां से जा।'

गुलावी चली गई।

दरवाजे पर सिटकनी चढ़ाकर वगल के दरवाजे से नैना बरामदे की तरफ गई। लड़की की वहीं छुपे रहने की वात थी। पर अंधेरे में कोई दिखाई नहीं पड़ा। इधर-उधर खोजा। वगल से नीचे उतरने की सीढ़ी थी। उसी सीढ़ी से नीचे उतर गई क्या? शायद डर लगा।

नैना सीढ़ियों से नीचे उतरी। इसके वाद सदर हाल पारकर बिल्कुल पोर्टिको के नजदीक आकर देखा। लड़की कहीं भी नहीं है। सच, लड़की पगली है क्या?

नैना वहां वहुत देर तक खड़ी रही। तव वुलवुल चौधरी की गाड़ी पोर्टिको के नीचे खड़ी है। दो-चार नौकर इर्द-गिर्द चक्कर लगा रहे हैं। एक वार नैना के जी में आया कि पूछे···किन्तु जरूरत नहीं।

सहसा पीछे से वुलवुल चौधरी के गले की आवाज आने से नैना चौंक पड़ी।

वुलवुल चौधरी वड़े ही शान्त शिष्ट और संभ्रान्त पुरुष थे। नैना से जव बतियाते तो वड़े अदव के साथ।

'यह क्या? तुम यहां?'

नैना ने सर उठाकर देखा।

'मैं बहुत देर से आया हुआ हूं। गुलावी ने बताया, तुम वहुत व्यस्त हो, इसी से तुम्हें तंग न किया। किसी को खोज रही हो क्या?'

नैना ने इतना ही कहा, 'नहीं तो···।'

फिर भी वुलवुल चौधरी हटने का नाम नहीं ले रहा है। मानो नैना से दो घड़ी वातें करना चाहता है।

कुछ क्षण रुककर बोला, कल भी आया था। शायद मालूम हो।'

नैना ने कहा, 'नहीं, मालूम नहीं···।'

वुलवुल चौधरी बोला, 'चाचाजी आने के लिए वहुत दबाव डालते हैं। इसी से आता हूं। जोकि मुझे भी ढेरों काम हैं। न आने से वह बुरा मानेंगे।'

उसके वाद हलकी हंसी हंसकर कहा, 'एक नया फोरेस्ट खरीदा है।

शायद सुना होगा।'

नैना ने कहा, 'नहीं···।'

'ऐं ! मैंने तो उस दिन चाचाजी को बताया था। डेढ़ लाख रुपया कीमत लिया। सो ले, मैं उस फोरेस्ट से दस गुना प्रोफिट करूंगा। कुल मिलाकर कई महीने के अन्दर तीन फोरेस्ट खरीदे।'

बुलबुल चौधरी इसी किस्म की बहुत बातें बताने लगा। लाख रुपये के अलावा दूसरी बात नहीं बोलता है बुलबुल चौधरी। जब भी इस घर में आता है, लाख की बात सुना जाता है। सुनने वाला कोई नहीं है फिर भी सुना जाता है। बात करते-करते जब उसे महसूस होता है कि कोई भी उसकी बात पर कान न दे रहा है तो कहता है, 'अच्छा नैना, मैं चलूं।'

कभी कहता है, 'बचपन की बातें तुम्हें याद हैं नैना ?'

नैना कहती है, 'नहीं।'

बुलबुल चौधरी कहता है, 'तुम्हें याद नहीं है, लेकिन मुझे याद हैं—तुम्हारे पिताजी की बातें याद हैं, अपने पिताजी की बातें याद हैं। तुम तब से अब और ज्यादा खूबसूरत लगती हो···।'

नैना देर तक सुनती नहीं। देर तक सुनना उसे अच्छा नहीं लगता है।

नैना एकाएक बातचीत के दौरान ही बोल उठी, 'अच्छा, मैं चलूं···'

तभी मानो बुलबुल चौधरी को खयाल हुआ। उठकर खड़ा हो गया।

बोला, 'बेशक तुम्हें ठंड लग रही होगी। तुम कमरे में जाओ।'

आज भी लाख रुपये की कहानी सुनना नैना को अच्छा नहीं लग रहा था।

नैना ने कहा, 'मैं चलूं···।'

'जरूर, जरूर, तुम क्यों व्यर्थ ही ठंड में खड़ी हो, जाओ, अन्दर चली जाओ···'

बुलबुल चौधरी के जाने के पहले ही नैना चौहान घर की ओर मुड़ गयी।

शिवनाथ ने कहा, 'इतना होने पर भी इसके बाद नैना चौहान के साथ बुलबुल चौधरी की शादी हो गई।'

मैंने कहा, 'नैना ने क्या इसका विरोध नहीं किया ?'

शिवनाथ बोला, 'विरोध तो करेगी ही। चाचाजी के पास जाकर

विरोध किया। चाचाजी बिगड़ पड़े। चाचाजी की भी तो जिम्मेदारी है। ब्याह जब करना ही है तब देरी करने से क्या फायदा ? चाचाजी के घर में उस दिन हो-हल्ला मच गया। यों चाचाजी के कमरे में नैना कभी जाती नहीं। ऐसे आदमी से बातचीत करने से सुख नहीं मिलता है। किन्तु नैना ने सीधे कहा, 'ब्याह के पहले मैं कुछ बातें साफ-साफ समझ लेना चाहती हूं...'

'कौन-सी बातें ?'

नैना बोली, 'वह मैं आपसे क्यों कहूं ?'

'तब किससे कहोगी ?'

'मिस्टर पुरोहित से। अपने स्टेट के सॉलिसीटर...'

'ठीक है, यही करो। मैं मिस्टर पुरोहित को आने के लिए पत्र लिख देता हूं।'

मिस्टर पुरोहित इस चौहान परिवार के पुराने सॉलिसीटर थे। आत्मा चौहान के उस जमाने में मित्र भी थे। इन्होंने नैना को पैदा होते देखा था। इतने दिनों से नैना के गुलमुहर स्टेट की देखभाल कर रहे हैं—हिसाब-किताब साफ-साफ रखते हैं। बैंक के रुपये-पैसे का हिसाब रखते हैं। कहना चाहिए कि वहां एकमात्र इस घर का भला चाहने वाले हैं। वर्ना आशीष चौहान के हाथ में रहने से मटियामेट हो जाता। पत्र पाकर वह आये। उन्होंने बुलबुल चौधरी को भी बुला भेजा। कमरे के अन्दर जाकर तीनों जने क्या-क्या बातचीत करने लगे, किसी को मालूम नहीं।

आनन्द को इन बातों का पता नहीं था। हर रोज मालिक के कमरे में जिस वक्त तसवीर बनाने जाता था, उस दिन भी गया।

दरवाजा ढेलते ही चौहानजी झल्ला पड़े, 'क्या है ? तुम ? तुम्हें आने का दूसरा वक्त न मिला ?'

आनन्द सकपकाकर खड़ा हो गया।

'इस वक्त तुम्हें आना चाहिए था ? देखते नहीं कि नैना के ब्याह के सिलसिले में बुलबुल चौधरी से कॉनफिडेनशियल बातें चल रही हैं।' चौहानजी ने मिस्टर पुरोहित की ओर देखकर पूछा, 'कितना वक्त लगेगा मिस्टर पुरोहित ?'

आनन्द के कान में मानो कोई बात ही नहीं पहुंच रही हो। क्यों वह वहां इस वक्त आ पड़ा ? मानो वहां से चले जाने से ही वह राहत की सांस ले पायेगा।

बोला, 'मैं बाद में आऊंगा।'

कहकर वह बाहर चला आया।

जल्दी-जल्दी बाहर आकर सीढ़ियां उतर अपने कमरे की ओर जा रहा था।

पीछे से अलका ने पुकारा, 'आर्टिस्ट, आर्टिस्ट ?'

और दिन अलका को देखते ही आर्टिस्ट उसे दुलारता था, उससे बातें करता था। उस दिन बगैर कुछ बोले सीधे नीचे उतर आया।

नीचे आकर बरामदा पार किया और अपने कमरे में घुस गया।

आर्टिस्ट के व्यवहार से अलका को आश्चर्य हुआ।

अलका भी कमरे के अन्दर आयी। कितनी बार इस तरह अलका आर्टिस्ट के कमरे में गई है, फिर दोनों बातचीत में मशगूल हो गए हैं। लेकिन उस दिन आर्टिस्ट ने जैसे उसे देखा ही नहीं हो। अलका बिछावन के पास आई। तब आनन्द बिछावन पर लेट गया और उसने अपना चहरा तकिये में छिपा लिया था।

अलका को लगा आर्टिस्ट जरूर ही गुस्से में है। निकट जाकर पुकारा, 'आर्टिस्ट।'

आर्टिस्ट ने फिर भी उत्तर न दिया।

और निकट जाकर अलका ने माथा नीचे झुकाकर कहा, 'तुम मुझसे नाराज हो आर्टिस्ट ?'

तब भी आर्टिस्ट ने उत्तर न दिया।

'मैंने क्या किया है, कहो न ! मैंने दीदी को तुम्हारी बात नहीं लगाई है।'

आर्टिस्ट ने फिर भी अपने चेहरे को नहीं हटाया।

अलका ने आर्टिस्ट के चेहरे के पास अपना चेहरा ले जाकर कहा, 'सच कह रही हूं आर्टिस्ट, अब दीदी से तुम्हारी बात नहीं लगाऊंगी। मैं वचन देती हूं...'

सहसा आनन्द ने अलका को अपनी बांहों में जकड़ लिया और उसे दुलारने लगा। उसने कभी अलका को इस तरह नहीं दुलारा था। दोनों बांहों में भरकर अपनी छाती से कसकर दबा लिया, मानो पीस डालेगा उसे।

अलका कहने लगी, 'मैं अब दीदी से तुम्हारी कोई बात नहीं लगाऊंगी। तुम्हें वचन देती हूं, वादा करती हूं...'

शिवनाथ ने कहा, 'मुख्य-मुख्य बातें कहना चाहता था और सब कुछ

कह गया। लेकिन अब वह सब नहीं कहूंगा। उपन्यास लिखते समय तुम अपनी इच्छानुसार सब कुछ मिला देना। मैं भी मोटे तौर से कहानी कहकर निश्चिन्त हो जाऊंगा···'

मिस्टर पुरोहित हमारे लखनऊ शहर के नामी वकील थे। उन्होंने बुलबुल चौधरी को सब कुछ खुलासा कहा।

बोले, 'मैं जानता हूं कि नैना के साथ तुम्हारा व्याह होना तय हो गया है। मैंने स्वयं आत्मा चौहान की वसीयत तैयार की थी। मुझे यह भी पता है कि तुम्हारे पिता धर्मेन्दर चौधरी के साथ आत्मा चौहान की दोस्ती थी। मगर अब एक गड़बड़ी पैदा हो गयी है···।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'क्या गड़बड़ी है, कहिये ?'

मिस्टर पुरोहित बोले, नैना ने तुमसे कुछ बातें पूछने को कहा है···'

'कौन-सी बातें ?'

'एक लड़की अकस्मात आकर नैना से मिली थी। वह देखने-सुनने में बहुत कुछ नैना की तरह है। वह कौन है ?'

'और कहिये। मैं सभी बातों का उत्तर दूंगा।'

'उस लड़की ने नैना को बताया है कि तुमने उसे पागल करार कर पागलखाने में डाल दिया है। वह कह गयी है कि नैना तुमसे व्याह न करे। करने से उसकी भी हालत वही होगी। इस बात का तुम उत्तर दो।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'यह बात ? मैंने तो यह सब सुना ही नहीं···'

मिस्टर पुरोहित ने कहा, 'यह जानकर कि आपको कहने से कोई फायदा नहीं है, मुझसे कहा है—इसका जब तक उत्तर नहीं मिलता है तब तक मैं नैना के साथ तुम्हारी शादी करने का इन्तजाम नहीं कर सकता।'

बुलबुल चौधरी बोला, 'मैं भी ऐसा नहीं चाहता चाचाजी। यदि किसी के मन में कोई शंका हो तो उसका भलीभांति निवारण कर ही लेना चाहिए···'

मिस्टर पुरोहित ने पूछा, 'वह लड़की कौन है ?'

'कौन-सी लड़की ?'

'वही लड़की जो नैना से मिलकर उतनी सारी बातें बता गयी थी।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'वह मेरे मकान की एक बूढ़ी दाई की लड़की है। उसका दिमाग गड़बड़ा जाने से मैंने ही उसे पागलखाने में भर्ती करा दिया है। फिलहाल वह वहां से भाग आयी है। जानते हैं, उसके चलते महीने में मेरा तीन सौ रुपया खर्च होता है।'

'लेकिन वह हू-बहू नैना की तरह देखने में क्यों है ?'

'मैं इसे क्योंकर बताऊं ! बुढ़िया के चरित्र के बारे में मेरी कोई जान-

कारी नहीं है, क्योंकि मैं छुटपन से ही मां के साथ विलायत में था। इतने दिनों बाद यहां आया हूं। उन दिनों की बातें मुझे याद नहीं हैं ···'

मिस्टर पुरोहित इतने ही में छोड़ने वाले नहीं थे। बोले, 'लेकिन तुम्हारी बातें सही हैं, इसका क्या सबूत है? मैं वकील ठहरा, अपने क्लाइन्ट को किन तर्कों से समझाऊंगा?'

'मैं उसका सबूत आपको दूंगा। आप चाहें तो आज ही मेरे साथ चलें···'

'कहां?'

'मेरे चौधरी लॉज में इस जानकी की मां वहीं है। बुढ़िया अब आंख से देख नहीं पाती है। इस सिलसिले में आप उससे बातचीत करके देखें···'

शिवनाथ ने कहा, 'जिस दिन नैना चौहान कोर्ट में उपस्थित हुई थी, उस दिन जानकी की मां भी गवाह की हैसियत से आयी थी।'

वकील ने पूछा, 'उस ओर जो महिला बैठी हुई है, उसे आप पहचानती हैं?'

बुढ़िया बोली, 'हां हुज़ूर, मैं उसे पहचानती हूं। वह मेरी लड़की जानकी है ··'

'तुम्हें ठीक-ठीक मालूम है कि वह आत्मा चौहान की लड़की नैना चौहान नहीं है?'

'नहीं हुजूर, वह मेरी ही लड़की है।'

'तुम्हारी लड़की पागल हो गयी थी?'

'हां हुजूर, छुटपन में ही उसका दिमाग खराब हो गया था। उस लड़की के चलते मैं बड़ी मुसीबत में फंस गयी थी···'

'मुलजिम ने क्या तुम्हारी जानकी को जबरन पागलखाने में दाखिल कर दिया है?'

'नहीं हुजूर, जबरन क्यों करेंगे? मेरी लड़की के लिए चौधरी साहब हर महीने तीन सौ रुपये खर्च करते आ रहे हैं।'

जानकी ने जिरह के वक्त सब कुछ सुना था। एकाएक कोर्ट के अन्दर चिल्ला पड़ी, 'नहीं, नहीं, सारी बातें झूठी हैं। मैं जानकी नहीं हूं, मैं नैना चौहान हूं, मेरे पिताजी का नाम आत्मा चौहान है, मैं गुलमुहर स्टेट की मालकिन हूं।'

जानकी की चिल्लाहट से कोर्ट के पुलिस पहरेदारों ने आकर उसे वहां

से हटा दिया। और उस दिन के लिए कोर्ट एडजार्न हो गया।

मैंने पूछा, 'उसके वाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'लेकिन यह तो वाद का वाकया है। इसके पहले का वाकया भी तो तुम्हें कुछ कहना चाहिये। सम्पत्ति के चलते आज भी कितना अनर्थ होता है, उसका सवूत उस मुकदमे में मिला आदमी से आदमी का सम्वन्ध आज कितना जटिल हो गया है, उसकी ही वानगी यह मुकदमा है। अगर आर्टिस्ट आनन्द मिश्र न होता तो शायद इस मुकदमे का रहस्य हमेशा के लिए दवा पड़ा रह जाता।'

फिर कुछ देर ठहरकर शिवनाथ वोला, 'इसके लिए वेशक और एक व्यक्ति ने तारीफ का काम किया है—वह है नैना चौहान की आया गुलाबी। वह हर वक्त, हर दिन नैना चौहान के साथ एक ही घर में रह चुकी है। वह नैना चौहान के दिल की वातें जानती थी। वह जानती थी कि आनन्द मिश्र के साथ दिन-व-दिन किस तरह नैना का एक तरह का रिश्ता कायम हो गया। आनन्द मिश्र को भी कोर्ट में गवाही देते हुए मैंने देखा है। हल्के पीले रंग की लंवी पंजावी, उस पर जवाहर वंडी और चुस्त पजामा—यही थी उसकी पोशाक। हर रोज वह कोर्ट में आता था और जव जानकी आती तो अपलक उसकी ओर ताकता रहता।'

मुलजिम के गवाह कहते, 'वह जानकी है···'

सरकारी गवाह कहते, 'वह नैना चौहान है···'

मैंने कहा, 'दोनों दो घर की लड़कियां थीं। उनका चेहरा एक जैसा क्योंकर हुआ ?'

शिवनाथ वोला, 'अव वही वात वताता हूं।'

वहुत दिन पहले एक वार नैना चौहान चौहान-स्टेट से खो गयी, तव दूसरी आया थी। नैना आया के साथ गाड़ी से नैनीताल लेक के निकट घूमने गयी हुई थी। तव चेंजर आये हुए थे। चेंजर लोगों की जमात नाव लेकर घूम रही थी। अकस्मात् आया की नजर पड़ी, नैना नहीं है। उसके माथे पर मानो पहाड़ गिर पड़ा।

तव आत्मा चौहान जिंदा थे। खवर सुनकर वे भी चौंक पड़े। उसकी इकलौती वेटी ठहरी। थाने में स्वयं जाकर खवर दी। शहर और गांव-वस्ती में तहलका मच गया। आत्मा चौहान ने पुलिस को लड़की की तस्वीर दी। उसी तस्वीर से मिलान कर दूसरे दिन पुलिस दो लड़कियों को ले आई और वोली, 'वताइये कि आपकी लड़की कौन-सी है···?'

सव कोई दंग रह गये। ऐसा तो होता नहीं।

फिर जब सुना कि धर्मेन्दर चौधरी के मकान की एक दाई की लड़की

है तो सब कुछ आईने की तरफ साफ हो गया। सब कुछ याद हो आया। जल्दी से काठगोदाम के धर्मेन्दर चौधरी के मकान पर गाड़ी से भेज दिया।

कोर्ट में मुकदमा न चलता तो उस दिन की घटना का किसी को पता नहीं चलता। लेकिन यह तो प्रोशीक्यूशन की गवाही है। मुलजिम ने इसके लिए कोई आपत्ति न की। बहुत दिन पहले की घटना है सो घटना के पक्ष में वे लोग कोई लिखी डाकुमेंट दाखिल न कर सके।

कोर्ट ने जानकी से पूछा, 'इस घटना की बातें तुम्हें थोड़ी-बहुत याद हैं?'

जानकी बोली, 'नहीं।'

आखिरकार आनन्द मिश्र गवाही देने के लिए खड़ा हुआ···।

शिवनाथ की कुछ भी बातें मेरी समझ में न आ रही थीं।

पूछा, 'पहले आरंभ की बातें न बताकर अंत की बातें क्यों बता रहे हो?' कचहरी में मुकदमा क्यों दायर हुआ? और मुकदमा था किस चीज के लिए? कौन अभियोक्ता, कौन अभियोगी—तुमने तो यह सब कुछ बताया ही नहीं।'

शिवनाथ बोला, 'कहता हूं, सब कुछ कहता हूं। बहुत दिन पहले का मुकदमा है न। सारी बातें अच्छी तरह याद भी नहीं हैं। और तुम लोगों की तरह मैं कहानी भी नहीं लिखा करता सो थोड़ी गड़बड़ी हो गयी थी। अब सुनो···'

शिवनाथ ने फिर कहानी की शुरुआत की और लौट आया।

उस दिन मिस्टर पुरोहित ने नैना चौहान को बुलाया।

वह बोले, 'मैंने सब कुछ भलीभांति समझ लिया है, बेटी! काठगोदाम जाकर मैं उस लड़की की मां से भी मिला। तुम्हारे लिए डर की कोई बात नहीं है···'

'लेकिन चाचाजी, आपने तो साफ-साफ बताया होगा कि चूंकि यह सब कुछ सिर्फ मेरे पिताजी की इच्छा थी और इसीलिए मैं अपनी सम्मति दे रही हूं—सिर्फ पिताजी की स्मृति के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए ही मैंने उसकी पत्नी बनना स्वीकारा है···'

'कहा है—सब कुछ कहा है। ब्याह के बाद अलका भी तुम्हारे साथ रहेगी। तुम्हारी आया भी रहेगी···'

'और आपने अच्छी तरह खोज-पड़ताल की है न कि डर की कोई बात नहीं है।'

'नहीं बेटा, मैंने उस बुढ़िया से भी पूछा है कि उसकी लड़की पगली है या नहीं। बुलबुल चौधरी जानकी के लिए हर महीने तीन सौ रुपये अपनी

जेव से खर्च करता है—जानकी की मां ने भी यह बात वताई। लड़की सचमुच पागल है। नहीं तो तुमसे मिलकर इतनी वतियाती ? यही तो पागल का लक्षण होता है।'

नैना ने कहा, 'आप जब सम्मति दे रहे हैं तो मुझे क्या आपत्ति हो सकती है···'

मिस्टर पुरोहित बोले, 'मैं आशीर्वाद देता हूं वेटी, कि तुम लोगों का जीवन सुखी हो।'

मिस्टर पुरोहित को लखनऊ में वहुत काम था। वे उसी दिन सारा इंतजाम कर चले गये और इसके दूसरे दिन ही इस घर के व्यक्तियों को मालूम गया कि चौहान स्टेट की लड़की के साथ बुलबुल चौधरी का व्याह होगा।

ऐसे घर में व्याह वहुत धूमधाम से होता है।

आनन्द मिश्र मात्र कई एक तस्वीरें वनाने आया था। रुपये-पैसे के कारण आया था और तब इसके अलावा किसी चीज की उम्मीद भी न की थी। उससे ज्यादा उसे कुछ मिला भी न था। लेकिन उम्मीद के कारण आदमी का कुछ खर्च तो नहीं होता। सो कई दिनों तक इस मकान में रहने की वजह उसकी आशा मानो आकाश छूने लगी। सुवह से शाम तक दिन-भर अपनी तस्वीर और नौकरी के पीछे लगा रहता था। जब मन एकदम नहीं लगता तो लेक की ओर सड़क पर निकल जाता था—जहां जिस ओर दो आंखें घसीट कर ले जायें और जब शाम उतर आती तो अपने कमरे में चला आता।

किन्तु उस दिन अपने को रोक नहीं सका। नैना की आया गुलाबी पर नजर पड़ते ही उसे बुलाया।

वोला, 'मालकिन को एक बार बुला दोगी गुलाबी ?'

गुलाबी ऐसे भी कम वोलती है। वात सुनकर महल के अन्दर चली गयी।

आनन्द वाहर खड़ा रहा। जाने के पहले एक वार नैना चौहान से मिलने का लोभ उसे सता रहा था। सिर्फ मिलना चाहता है और कुछ नहीं। मिलकर क्या कहेगा, उसे स्वयं नहीं मालूम था। मन-ही-मन दुविधा भी हो रही थी। योंही निरुद्देश्य मिलने का कारण जब नैना पूछ वैठेगी, तब क्या उत्तर देगा वह ?

एक बार जी में हुआ--जरूरत नहीं। बड़े आदमी की लड़की है। कई बार उससे हंसकर वतियाने से ही क्या उस पर अधिकार हो गया ? उसके जैसे गरीब आर्टिस्ट को नैना खरीद सकती है। इतने रुपये की मालकिन है

वह। आर्टिस्ट है तो क्या हुआ ? वह नैना चौहान की कलाई थामना चाहता है।

सहसा गुलाबी लौटकर आयी।

आनन्द उत्सुकता में डूबा बरामदे पर खड़ा था।

गुलाबी ने आकर कहा, 'मालकिन अभी नहीं आ पायेंगी…'

आनन्द के सर पर मानो पहाड़ टूटकर गिर पड़ा हो।

विश्वास नहीं हुआ।

'पूछा, 'तुमने मेरा नाम कहा था न।'

'हां जी !'

'तुमने बताया था न कि मैं एक बार मिलना चाहता हूं।'

'हां जी !'

'मेरे नाम कहा था ?'

'हां, जी हां…'

आनन्द और वहां रुका नहीं। मानो गुलाबी को भी चेहरा दिखाने में शर्म हो रही हो। फुर्ती से सीढ़ियां उतरकर अपने कमरे में आया। उसके बाद कपड़े बदले और हमेशा की तरह रास्ते पर निकल पड़ा।

पूरे मकान की तब पुताई चल रही थी। ऊपर की खिड़की से उसका बहुत बड़ा हिस्सा दीखता है। वहां खड़ी चारों तरफ देखते-देखते सहसा नैना चौहान अनमनी हो उठी।

अलका दौड़ती हुई निकट आई।

बोली, 'दीदी, आर्टिस्ट चला गया।'

'कहां चला गया ?'

'नौकरी छोड़कर चला गया अब नहीं आएगा।'

'क्यों, नौकरी क्यों छोड़ दी…?'

'पता नहीं।'

'कब गया ?'

अलका बोली, 'मुझे मालूम नहीं कि कब चला गया। मुझे गुलाबी ने आकर बताया।'

नैना बोली, 'गुलाबी को पुकारो।'

गुलाबी ज्यों ही आई, नैना ने पूछा, 'आर्टिस्ट साहब चले गए हैं ? मुझे तो तूने नहीं बताया।'

गुलाबी की समझ में न आया कि क्या कहे।

'क्यों चला गया, मालूम है ?'

'नहीं मालकिन !'

'चाचाजी ने नौकरी से हटा दिया क्या ?'

'नहीं मालकिन, वह मुझे मालूम नहीं है।'

'मुझे पहले सूचना क्यों नहीं दी ?'

गुलाबी अच्छी तरह कुछ भी नहीं बता पाई। अलका भी मरियल जैसी दीख रही थी। इतने दिनों से एक आदमी था, आज वह नहीं है। घर कैसा सूना-सूना दीख रहा है।

गुलाबी के जाने पर अलका बोली, 'दीदी, मैं आर्टिस्ट के कमरे में गई थी···?'

'क्यों ?'

'ऐसे ही गई थी। जाने पर एक चीज देख आयी हूं।'

'क्या चीज री ?'

अलका बोली, 'चलो न, तुम भी देख पाओगी···'

'कह न, क्या है ?'

'तुम न जाओगी तो नहीं बताऊंगी। चलो, मेरे साथ चलो।'

कोई खास चीज न थी। तब दोपहर था। दीदी को लिये अलका एक मंजिले पर आई। आर्टिस्ट का घर बिल्कुल खाली था। कुछ दिन पहले इस कमरे में एक आदमी रहता था। उसका चिह्न तब तक था।

अलका बोली, 'उस अलमारी के अन्दर·· '

अलका ने अलमारी खोलकर दिखाया, 'यह देखो···'

अलका ने देखा, नैना चौहान ने भी देखा—कसीदा काढ़कर एक रूमाल नैना ने आर्टिस्ट को दिया था, वह पड़ा हुआ था। उसके निकट सूखे फूलों का एक गुच्छा था। अलका ने एक दिन फूलों का वह गुच्छा आर्टिस्ट को दिया था। एक अलबम था। अलबम नैना से मांग कर लिया था। नैना की लाइब्रेरी में अलबम देखकर आर्टिस्ट ने उसे देखना चाहा था। सारी चीजें आस-पास सजी पड़ी थीं। इसके पूर्व नैना की नजर नहीं पड़ी थी। एक किनारे एक पत्र भी पड़ा हुआ था। उस पर अलका का नाम लिखा हुआ था। अपना नाम देखकर अलका चिट्ठी खोलकर पढ़ने लगी।

आर्टिस्ट ने लिखा है, 'स्नेह की अलका, तुम लोगों की जो कुछ चीजें मेरे पास थीं, सब लौटा रहा हूं। अपनी दीदी की चीज उन्हें दे देना। अपनी दीदी से कहना, जाने के पहले उनसे मिलना चाहा, पर तुम्हारी दीदी मुझसे नहीं मिलीं। मिलने के पीछे मेरा कोई मतलब न था, सिर्फ तुम्हारी दीदी का दिया हुआ रूमाल और अलबम उनके हाथ में लौटा देने की इच्छा थी। उसका मौका नहीं मिला। तुम्हारा दिया फूलों का गुच्छा सूख गया है। उसे भी छोड़ रहा हूं क्योंकि सब कुछ जब छोड़ गया तो सूखे फूल के

गुच्छे से मेरा मन जुड़ेगा क्या ? तुम इसे अन्यथा न लेना। इति...'

चिट्ठी पढ़कर अलका कैसी-कैसी तो हो गई।

बोली, 'तब चिट्ठी मैंने नहीं देखी थी दीदी। आर्टिस्ट बड़ा अच्छा आदमी था। था न दीदी ?'

तब नैना चौहान कमरे से बाहर आ रही थी। उसकी जुबान बिलकुल बन्द थी।

अलका ने कहा, 'आर्टिस्ट तुमसे मिलना चाहता था। तुम मिली क्यों नहीं दीदी...?'

नैना बरामदा से होकर जाने लगी।

बोली, 'तू तो थी; तूने मुलाकात क्यों न की ?'

अलका ने कहा, 'वाह, आर्टिस्ट ने तो मुझसे मिलना नहीं चाहा, वह तुमसे ही मिलना चाहता था...'

इसके बाद आप कहां चले गये ?

आनन्द ने कहा, 'इसके बाद मैं लखनऊ लौट आया। लौटकर फिर से तसवीरें बनाने लगा।'

'इसके बाद आपने कहीं नौकरी की ?'

'नहीं, चौहान-स्टेट में नौकरी कर मेरे दिल में जो सदमा पहुंचा, फिर से कहीं नौकरी करने पर दिल में राहत मिलेगी—ऐसी मैंने कल्पना तक न की।'

'ऐसा क्या सदमा पहुंचा कि और कहीं नौकरी नहीं कर सके ?'

'उस सदमे की बात अदालत में सबके सामने कहने लायक नहीं है।'

'मैं इसके लिए दावा करता हूं कि आपको खोलकर कहना ही पड़ेगा।'

'मैं कहने को मजबूर नहीं हूं।'

आनन्द के उत्तर से उस दिन कोर्ट शोरगुल से भर गया। कानून का तर्क-वितर्क अभियोगी और अभियुक्त के वकीलों में शुरू हो गया।

आखिर आनन्द को अदालत में कहना पड़ा कि वह नैना चौहान से प्रेम करता था। उसका प्रेम अकट और मौन था। उसके जैसे गरीब आर्टिस्ट के लिए गुलमुहर स्टेट की मालकिन नैना चौहान से प्रेम करना गुनाह था—इसे वह भली-भांति जानता था। चूंकि जानता था इसीलिए चुपचाप, बग़ैर किसी को जताये चौहान स्टेट से विदा होकर चला आया। आशीष चौहान से अनुमति भी नहीं ली। आने के समय उसने तनखा का बाकी पैसा नहीं लिया। यहां तक कि किसी को भी पता नहीं चला कि कब वह चौहान स्टेट छोड़कर चला आया।

'इसके बाद आप फिर चौधरी-लॉज क्यों गए ?'

'क्योंकि खबर मिली कि नैना चौहान विवाह के बाद तकलीफ में है।'

'कैसे खबर लगी ? किसने आपको खबर दी ?'

'मिसेज चोपड़ा ने।'

मिसेज चोपड़ा अजीब किस्म की औरत थी।

ऐसी जो हर व्यक्ति से कहती फिरती है कि उसके पति जैसा किसी दूसरे का पति नहीं है।

मिस्टर चोपड़ा सीधा-सादा आदमी है। पैतृक संपत्ति मिली है अपनी लगन से उस संपति को खूब बढ़ाया है। मिसेज चोपड़ा दस-बारह बाल-बच्चों की मां है लेकिन पत्नी को इतना प्यार करने वाला दूसरा आदमी खोजने से भी नहीं मिलेगा। शहर आते ही दुकान में जाकर पहले पत्नी के लिए कुछ सामान खरीदते हैं—या तो साड़ी या सलवार, या ब्लाउज, नहीं तो सोने, हीरे या मोती का गहना। मिसेज चोपड़ा को मिस्टर चोपड़ा सब कुछ देकर भी जैसे सन्तुष्ट नहीं हो रहे हैं। अगर आकाश का चांद मिल जाता तो यह भी शायद पत्नी को ही देते। मिसेज चोपड़ा बहुत खुले दिल की औरत है।

लखनऊ में आनन्द के चित्रों की प्रदर्शनी हो रही थी। आर्टिस्टों की जमात सबके कुछ-न-कुछ दोस्त और कुछ-न-कुछ दुश्मन होते हैं। दोस्तों ने ही खर्च कर प्रदर्शनी लगवाई थी। लेकिन प्रदर्शनी देखने के लिए इतनी भीड़ होगी, आनन्द ने इसकी कल्पना न की थी। सब कोई देखने आते हैं। एक के बाद एक तस्वीर देखते-देखते एक तस्वीर के सामने सभी अवाक् होकर खड़े हो जाते हैं।

आश्चर्यजनक एक पोर्टेट है। चारों तरफ सफेद कुहरे की तरह धुंधली-धुंधली-सी पृष्ठभूमि उसके ठीक बीच में एक मुखाकृति। केवल मुखाकृति ही नहीं मुंह से लेकर पैर तक हैं। चारों ओर के फ्रेम के बीच का चेहरा ऐसा दीख रहा है मानो कमल का खिला हुआ फूल हो।

'इस तस्वीर की कितनी कीमत है ?'

सभी आकर तस्वीर को देख जाते हैं। खरीदने की इच्छा न रहने पर भी कीमत पूछते हैं।

मिस्टर चोपड़ा अपने कारोबार के सिलसिले में आये थे। मिसेज चोपड़ा के लिए नई पोशाकें खरीदीं, कॉसमेटिक्स खरीदी और बहुत सारी

चीजें खरीदीं। एकाएक किसी ने तस्वीर की प्रदर्शनी की बात कही। वह भी एक दिन आये; आर्टिस्ट की खोज की। लेकिन आर्टिस्ट है कहां? आनन्द का अता-पता नहीं है।

लेकिन मिस्टर चोपड़ा आसानी से छोड़ने वाले नहीं हैं। खोज-पड़ताल कर ढूंढ़ निकाला।

आनन्द ने कहा, 'मैं यह तस्वीर नहीं दूंगा!'

मिस्टर चोपड़ा बोले, 'मेरी पत्नी इससे ज्यादा खूबसूरत है। आप उसकी एक तस्वीर बना दें।'

आनन्द ने कहा, 'मैं अब किसी की नौकरी नहीं करूंगा।'

'लेकिन यह नौकरी तो नहीं है। आप पैसा लेकर काम कीजिये और काम खतम कर लौट सकते हैं···'

'आप कितना पैसा दीजियेगा?'

'आपको कितना चाहिएगा।'

सच, पत्नी के लिए खर्च करने में मिस्टर चोपड़ा कंजूसी नहीं करते थे। उसी दिन आनन्द को अपने साथ घर ले आए।

मिस्टर चोपड़ा का मकान बड़ा है। चारों तरफ वैभव और विलासिता की छाप है। बगीचा है, बगीचे के लिए माली है। मोर है, घोड़ा है, और हैं दस-बारह लड़के-लड़कियां।

इतने बाल-बच्चों की मां होने के बावजूद मिसेज चोपड़ा बड़ी दुलारी हैं। आनन्द को देखते ही बोली, 'मेरी तस्वीर अच्छी तरह बना सकिएगा?'

आनन्द ने कहा, 'सकूंगा।'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'आप यह मत सोचें कि मैं बूढ़ी हो गई हूं। दस-बारह बच्चों की मां होने के कारण मैं बूढ़ी हो गई हूं—यह मत सोचें। बहुत अच्छी तरह मेरी तस्वीर उतारनी पड़ेगी···।'

फिर आर्टिस्ट की ओर देखकर बोली, 'बना सकियेगा न?'

उम्र होने से क्या होता है। मिसेज चोपड़ा जैसे बच्ची हो। रात-दिन सजी-गुजी रहती हैं। जब तस्वीर बनाई जा रही हो तो चुप रहना चाहिए। हिलना-डुलना मना है। लेकिन उस वक्त भी धारा प्रवाह बोले जा रही है। पैर पसार कर, देह को नचा-नचाकर बात करती है।

बोलती है, 'आपने मिस्टर चोपड़ा को तो देखा है मिस्टर मिश्र?'

'जरूर देखा है।' आनन्द कहता।

'कैसे आदमी हैं, कहिए तो सही ?'

आनन्द कहता, 'मुझे तो भले मालूम पड़ते हैं।'

मिसेज चोपड़ा कहती, 'तब आपको कुछ भी मालूम नहीं।'

आनन्द मानो अपने को गुनाहगार महसूस करता।

कहता, 'नहीं-नहीं, मैंने उन्हें खराब नहीं कहा। वह तो बड़े भले आदमी हैं।'

'आपने उनकी भलमनसाहत देखी ही कितनी है मिस्टर मिश्र ! वैसा हसबैंड मिलना मुश्किल है।'

आनन्द कहता, 'यह तो देख ही रहा हूं।'

'नहीं-नहीं, मिस्टर चोपड़ा कितने अच्छे हसबैंड हैं, यह कोई देख ही नहीं पा रहा है। मालूम है, मुझे कितना प्यार करते हैं ?'

ऐसे में आनन्द मिश्र को बड़ी कठिनाई होती है।

कहता, 'हो सकता है, आप खुद जब कह रही हैं···।'

मिसेज चोपड़ा कहती है, 'नहीं, मिस्टर मिश्र, मेरे हसबैंड जैसा भला किसी का भी हसबैंड नहीं है। यहां कितनी ही औरतों के कितने ही हसबैंड मैंने देखे हैं। ऐसा हसबैंड आपको नहीं दिखेगा ?'

अन्त में लाचार होकर आनन्द कहता, 'आप जरा चुपचाप बैठें मिसेज चोपड़ा, मुझे थोड़ी दिक्कत हो रही है।'

तब शांत होकर मिसेज चोपड़ा कहती, 'अच्छी बात है ! अब नहीं बोलूंगी, मगर जरा ध्यान दीजिएगा कि मेरी तस्वीर अच्छी बने।'

'उसके लिए आपको जिक्र करने की जरूरत नहीं।' कहकर आनन्द फिर से तस्वीर बनाने लगता।

लेकिन मिसेज चोपड़ा चुप रहने की आदी नहीं है, बिना बोले मिसेज चोपड़ा को भात हजम नहीं होता।

कुछ क्षण तक चुप रहने के बाद फिर कहती, 'मेरी उम्र थोड़ी कम कर दीजिएगा मिस्टर मिश्र···।'

आनन्द कहता, 'ना ना, कम करने की क्या जरूरत है ! आपकी उम्र यों ही कम है।'

मिसेज चोपड़ा को बड़ी खुशी होती।

कहती, 'ठीक कह रहे हैं आप ! अच्छा, कहिए तो सही, मेरी उम्र क्या है ?'

आनन्द बड़ी मुश्किल में फंस जाता।

कहता, 'बहुत कम···।'

'फिर भी कहिए तो कितनी ? देखूं आपका कैसा अन्दाज है ? यह मत

सोचिएगा कि दस बच्चे हो गये हैं इसलिए···।'

इतने में मिस्टर चोपड़ा कमरे में आते हैं।

कहते हैं, 'क्या हो रहा है? काम कैसा चल रहा है मिस्टर मिश्र?'

मिसेज चोपड़ा बिगड़ने लगती।

कहती, 'तुम फिर तंग करने आ गये। जानते हो कि काम हो रहा है और तुम इस वक्त तंग करने आ गये।'

मिस्टर चोपड़ा प्रसन्नचित्त व्यक्ति हैं। वे भी अपनी पत्नी को पहचानते हैं। हंसने लगते हैं।

कहते, 'अच्छा-अच्छा, मैं कमरे से चला जाता हूं। तुम लोगों की कला-चर्चा में मैं बाधक नहीं बनूंगा···' कहकर चले जाते।

जाते-जाते आर्टिस्ट की ओर देखकर कहते, 'मिसेज चोपड़ा भी एक बड़ी आर्टिस्ट हो सकती थी। इसकी जानकारी है आपको मिस्टर मिश्र।'

आनन्द को मानो आश्चर्य हुआ हो, इस प्रकार के हाव-भाव से पूछता, 'ऐसी बात है?'

मिस्टर चोपड़ा इस पर हंस पड़ते।

हंसते-हंसते जवाब देते, 'यकीन न हो तो मिसेज चोपड़ा से ही पूछकर देखिएगा···।'

आनन्द मिसेज चोपड़ा की ओर देखकर कहता, 'तस्वीर बनाने का काम आपने छोड़ क्यों दिया?'

मिस्टर चोपड़ा कहते, 'इसका कारण मैं हूं मेरी खातिर···।'

'आपकी खातिर? इसका मानी?'

मिस्टर चोपड़ा और जोर से हंस पड़ते।

कहते, 'बहुत से बाल-बच्चे हो गये। उसके लिए तो मैं ही जिम्मेदार हूं···'

इस पर मिसेज चोपड़ा सचमुच बिगड़ पड़ती है।

कहती, 'छिः छिः, तुम जो-सो बोलने लगते हो···।'

कहकर कुर्सी से उठती और मिस्टर चोपड़ा को ठेलते-ठेलते कमरे के बाहर कर देती।

कहती, 'तुम यहां से जाओ; सिर्फ डिस्टर्ब करने आते हो···।'

और दरवाजे पर चिटकनी लगाकर फिर से कुर्सी पर बैठ जाती—और कहती, 'देखा न, मुझे मेरा हसबैंड कितना प्यार करता है। किसी का हसबैंड ऐसा नहीं है। यहां तो कितने ही हसबैंड हैं। कितना प्यार करता है मुझे···।'

शिवनाथ ने कहा, 'असल में मिस्टर या मिसेज चोपड़ा की इतनी बातें मैं तुमसे नहीं करता। किन्तु मिसेज चोपड़ा की तस्वीर बनाना आनन्द मिश्र के जीवन की एक उल्लेखनीय घटना है। अगर यह घटना न होती तो नैना चौहान की जिन्दगी और तरह की होती। अगर यह घटना न घटती तो शायद मुकदमा भी न चलता। और यदि यह मुकदमा न होता तो बाहरी आदमी को इस कहानी का पता न चलता।'

'वही बात अब कह रहा हूं।'

मिसेज चोपड़ा ने अकस्मात् एक दिन कई तस्वीरों को ढूंढ़कर निकाला, आनन्द के स्केच की कापी बाहर पड़ी हुई थी। उसे उलटते-उलटते एकाएक मिसेज चोपड़ा की नजर पड़ी।

'मिसेज चौधरी की तस्वीर आपको कहां मिली आर्टिस्ट ?'

तस्वीरों को देखकर मिसेज चोपड़ा हैरत में आ गयी है। एक नहीं, दो नहीं, अनेकों हैं।

'मिसेज चौधरी की तस्वीरें आपने कब बनायीं। लगता है, मिसेज चौधरी के हसबैंड ने आपको एंगेज किया था ?'

आनन्द हैरत में आ गया।

कहा, 'आप उनको पहचानती हैं ?'

'भला पहचानूंगी नहीं ! आपने तो मुझे अवाक् कर दिया मिस्टर मिश्र, मिसेज चौधरी को मैं नहीं पहचानूंगी ? यही मेरे घर के पास ही तो रहती है। मुझसे खूब बातचीत होती है। जानते हैं मिस्टर मिश्र, मिसेज चौधरी को देखकर बड़ा ही दुख होता है।'

आनन्द के पास मानो शब्द ही नहीं हों ! विश्वास करने में जैसे उसे आतंक हो रहा हो। कुछ देर तक उसकी जबान से एक भी शब्द न निकला।

'सच, आप पहचानती हैं ?'

'सच नहीं तो क्या झूठ बोल रही हूं। किसे यहां नहीं पहचानती, सभी को पहचानती हूं। किसका हसबैंड कैसा है—सो भी जानती हूं। वहां तो कितनी महिलाएं हैं पर किसी का हसबैंड मेरे हसबैंड जैसा नहीं है। मैं शर्त लगा सकती हूं कि एक भी नहीं है। इसी से तो मिसेज चौधरी के लिए मुझे दुख होता है।

आनन्द को मानो विश्वास ही नहीं हो रहा हो।

बोला, 'सच कहती हैं—आप पहचानती हैं ?'

मिसेज चोपड़ा को आश्चर्य हुआ।

बोली, 'क्यों, आपको विश्वास क्यों नहीं हो रहा है ? अगर विश्वास नहीं हो रहा हो तो अभी मेरे साथ चौधरी-लॉज चलिए। दिखा दूंगी कि

पहचानती हूं या नहीं। लीजिए, चलिये मेरे साथ। ड्राइवर को तुरंत गाड़ी निकालने को कहती हूं।'

आनन्द ने कहा, 'नहीं, इसकी जरूरत नहीं···।'

'आज अगर नहीं तो कल ही चलिये। कल ही दोनों जने साथ चल सकेंगे। जाकर साबित कर दूंगी। मैं साबित कर दूंगी कि मेरे हसबैंड अच्छे हैं या मिसेज चौधरी के···।'

आनन्द के पूरे शरीर में जैसे उत्तेजना-सी दौड़ गई।

बोला, 'आप उसको मत कहियेगा कि मैं यहां हूं। यहां आपकी तस्वीर बनाने को आया हूं···।'

'क्यों? कहूंगी क्यों नहीं? आपको किस बात का डर लगता है? मिस्टर चौधरी क्या मिस्टर चोपड़ा की अपेक्षा बड़े आदमी हैं? मेरे पास क्या कम पैसे हैं? मेरा यह मकान क्या चौधरी-लॉज से छोटा है। सुनिये मिस्टर मिश्र, मिसेज चौधरी को भी मैंने देखा। मेरा हसबैंड अगर वैसा होता तो मैं उसकी हत्या कर देती···।'

आनन्द अब अपने को रोक नहीं सका।

पूछा, 'क्यों?'

मिसेज चोपड़ा कहने लगी, 'बहुत सारी बातें हैं मिस्टर मिश्र। वैसा मैंने अपने लाइफ में नहीं देखा···।'

'क्यों?'

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'जानते हैं दोनों जने एक बिछावन पर नहीं सोते। रात-दिन दोनों झगड़ते रहते हैं। शादी के बाद दोनों जब आये, तब से देख रही हूं कि मिस्टर चौधरी कहां-कहां का चक्कर लगाते रहते हैं। वाइफ की उसे कोई जरूरत नहीं है और मेरे हसबैंड को देखिये कि एक दिन के लिए भी अगर वह मेरे पास न लेटे तो उसे नींद ही नहीं आयेगी···।'

फिर आनन्द के चेहरे की ओर देखकर मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'क्या हुआ मिस्टर मिश्र, आपको हुआ क्या? आप बहुत टायर्ड ही हो गये हैं?'

आनन्द ने कहा, 'अब तस्वीर बनाना अच्छा नहीं लग रहा है। सिर कैसा-कैसा तो कर रहा है···।'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'ठीक है, आज इतना ही रहे। बहुत काम किया है, अब आप रैस्ट करें···।'

उसके बाद आर्टिस्ट की ओर देखकर बोली, 'मेरी तस्वीर बहुत अच्छी बनेगी मिस्टर मिश्र! जरा मेरी उम्र थोड़ी कम कर दीजिएगा, समझे!

वास्तव में देखने में बड़ी लगती हूं मगर मेरी उम्र कम है···।'

इस बीच आर्टिस्ट ने अपनी कूची, रंग और सभी चीजों को सहेज लिया और अपने कमरे के अन्दर चला गया। तब उसे एकाकी रहना ही अच्छा लग रहा था।

यह इलाका ऐसे भी सूना-सूना है। यहां दूकान एक-दूसरे से काफी दूरी पर हैं। बड़े-बड़े बगीचे हैं और उनमें एक-एक घर। एक मकान से दूसरा मकान दिखता नहीं। बड़े-बड़े पेड़ हैं। अनादिकाल से एक ही जमीन पर पेड़ खड़े हैं। मगर उनकी छाया के नीचे आदमी का बदलाव हो रहा है।

एक घर के सामने आकर एक गाड़ी रुकी।

गाड़ी से एक महिला उतरी। उसके पीछे एक छोटी लड़की। उसके बाद गुलाबी।

आनन्द ने दूर से गौर से देखा—नैना चौहान, उसकी बहन अलका और नैना की आया है।

गाड़ी से आहिस्ते-आहिस्ते उतरकर तीनों जने घर के भीतर घुसे। शाम हो आयी है। भली-भांति दिखाई नहीं पड़ा। फिर भी अरसे के बाद यहां आने पर यह देखने को मिलेगा, उसके लिए अप्रत्याशित है, सच, इस तरह देखना शायद उसके लिए उचित नहीं है। शादी हो जाने के बाद नैना चौहान की बातें दिल में रखना भी मानो गुनाह है। फिर भी आनन्द लोभ का संवरण नहीं कर सका। तीसरे पहर टहलने को निकला है। टहलते-टहलते जाने किस चीज के खिंचाव से यहां चला आया और कुछ देर रुकने पर यह सब दिखाई पड़ा।

जल्दी-जदी वहां से हट जाने पर आनन्द को राहत मिली।

मानो यहां खड़े रहने से उसे और निकट जाने की इच्छा होगी, दो बातें करने को जी चाहेगा और चले आने के सिवा विकल्प ही क्या है। चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ों के जंगल हैं। आहिस्ते-आहिस्ते हर तरफ अंधेरा उतर आया। लगा, इसी तरह उसके जीवन में भी अंधेरा गहरा गया है। तस्वीरों की दुनिया में खोया हुआ जो था तो अच्छी तरह था। क्यों वह मिसेज चोपड़ा की तस्वीर बनाने यहां आया? यहां आकर वह क्या देखना चाहता था कि नैना चौहान सुखी है या नहीं, सुखी क्यों नहीं रहेगी? उसके इतना बड़ा स्टेट है, पति के पास इतना बड़ा चौधरी-लॉज है। सुख से रहने के जितने भी उपकरण हो सकते हैं सब कुछ तो उसकी मुट्ठियों में हैं। मिसेज चोपड़ा को पता नहीं है, इसी से उतनी बातें कहती है। मिसेज चोपड़ा अपने पति के प्यार से ही गद्‌गद् है इसलिए दूसरे का सुख देख नहीं

पातीं। सभी पति क्या मिस्टर चोपडा की तरह दिखा-दिखाकर पत्नी को प्यार करते हैं? प्यार प्रकट करने का तरीका भी भिन्न-भिन्न पति के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।

ज्योंही घर लौटकर आया, मिसेज चोपड़ा को खबर मिली। हंसती हुई घर के अन्दर आयी।

बोली, 'कहां गये थे मिस्टर मिश्र ? मैं आपको तब से खोज रही हूं···'

'क्यों ?'

'मैं आज मिसेज चौधरी से मिलने गयी थी। आपके बारे में बताया।'

'मेरे बारे में क्यों बताया ?'

'क्यों नहीं बताऊंगी। हजारों बार बताऊंगी। मैं मिसेज चौधरी से बोली—आपने जिस आर्टिस्ट से अपना पोर्टेट बनवाया है, उसी आर्टिस्ट से मैं अपना पोर्टेट बनवा रही हूं।'

सुनकर आनन्द का चेहरा उतर गया।

बोला, 'आपने यह बात क्यों कही। हो सकता है कि उसके मन में दुख पहुंचता हो ?'

'दुःख क्यों होगा ? उनके हसबैंड मिस्टर चौधरी को सुनाने की गरज से कहा था। मैं उनके घर बहुत बार हो आयी हूं लेकिन उन्होंने एक बार भी मिसेज चौधरी को मेरे घर पर आने नहीं दिया है। सिर्फ उन्हीं के पास पैसा है क्या ? हमारे पास पैसा नहीं है क्या ? मिस्टर चौधरी मिस्टर चोपड़ा की बनिस्बत बड़े आदमी हैं ? मैं फिर कल भी जाऊंगी। कल फिर वही सब कह आऊंगी···'

'आपने क्या मिसेज चौधरी से बताया है कि मेरे स्केचों की कॉपी में आपने उनकी तस्वीर देखी है ?'

'हां, सुनाना मैंने बाकी नहीं रखा। मैं सब कुछ कह आयी हूं।'

'वहां कौन-कौन थे ?'

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'वहां सब कोई थे—मिसेज चौधरी थीं, मिस्टर चौधरी था। मिसेज चौधरी की छोटी बहन अलका चौहान भी थी और उनकी आया गुलाबी थी।'

आनन्द से कुछ बोलते न बना। हल्का-सा प्रतिवाद करे, उसके लिए भी उसके पास शब्द न था।

मैंने पूछा, 'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'असल में गुलाबी की गवाही से ही सबूत मिला कि मिसेज चोपड़ा वास्तव में मिसेज चौधरी के पास गयी थी। बात यह है कि अपने वैभव के प्रदर्शन के बिना आदमी को तृप्ति नहीं मिलती है। घर, गाड़ी, संपत्ति सिर्फ अपने भोग के लिए होता है? लोगों के सामने अगर प्रदर्शन न किया जाय तो बेकार है। किन्तु मिसेज चोपड़ा का पता ही नहीं चला कि उस दिन वह मिसेज चौधरी को कितनी हानि पहुंचा आयी।'

'क्यों, हानि क्या पहुंचाई ?'

शिवनाथ ने कहा, 'वही बात तो अब तुम्हें कहने जा रहा हूं।'

सचमुच नैना के लिए जो कुछ हानि होना बाकी रह गया था, उसे मिसेज चोपड़ा उस दिन पूरा कर गयी।

बुलबुल चौधरी नाम में मानो एक प्रकार की शैतानी छिपी हुई थी। जिस दिन पहले-पहल आनन्द चौहान-स्टेट में आया था, उसी दिन उसे पता चल गया था कि एक तरह का अन्याय नैना का छिपकर पीछा कर रहा है। निस्पृह और मधुर भाषी था बुलबुल चौधरी। उसे देखकर आनन्द को किसी तरह का संदेह नहीं हुआ था। सो आनन्द समझ नहीं पा रहा था कि अन्याय ने किस दरवाजे से अन्दर पैर रखा। मगर जब उसे अधिकार नहीं है कि वह अन्याय का विरोध करे तब वहां से चले आने के सिवा उसके लिए दूसरा कोई रास्ता न था।

बुलबुल चौधरी ऐसा आदमी था कि कोई उससे हेल-मेल बढ़ाकर अगर उसके असली चेहरे का पता लगाना चाहे तो यह बड़ा मुश्किल था।

नैना चौहान भी शुरू में उसके वास्तविक स्वरूप को समझ नहीं पायी। कोहबर की रात में सिर्फ एक तरह का सन्देह पैदा हुआ था। बुलबुल चौधरी के चेहरे पर एक किस्म का हल्का-सा अनमनापन तैर रहा था।

तब रात के बारह बजे थे। काठगोदाम के चौधरी-लॉज में नैना की यह पहली रात थी।

बुलबुल चौधरी बार-बार नैना के चेहरे की ओर देख रहा था। क्यों देख रहा है, नैना शुरू में समझ नहीं पायी। किन्तु कुछ क्षणों के बाद ही लगा कि उसका पति चेहरे की ओर नहीं देख रहा है, उसके गले में जड़ाऊ हार को देख रहा है। आखिरकार हार की ओर एकाएक हाथ बढ़ाते देखकर नैना चौहान चौंक पड़ी।

'इतना चौंक क्यों पड़ी ?'

नैना चौहान बोली, 'नहीं, मैं चौंकी नहीं हूं।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'ओह, मैंने सोचा, तुम चौंक पड़ी हो।'

'मैं तुम्हारा हार देख रहा था। यह क्या असली हीरा है ?'

नैना ने कहा, 'मालूम नहीं।'

'मालूम नहीं है—का क्या मानी ?'

'यह मेरी मां के गले का हार है। बाबूजी ने खरीद दिया था।'

'अच्छा इसकी कीमत कितनी होगी ?'

'मुझे मालूम नहीं।'

पहली रात में इस तरह का प्रश्न, इस तरह का प्रसंग—बिल्कुल अस्वाभाविक लग रहा था। मगर ज्यादा देर तक बातचीत नहीं चली।

आधी रात में ही किसी ने चौधरी-लॉज के बैडरूम के दरवाजे पर दस्तक दी। उस आवाज से बुलबुल चौधरी बाहर निकल आया, फिर लौटकर बोला, 'मैं तुरन्त आ रहा हूं, तुम सो रहो।'

'कहां जा रहे हो ?'

उस बात का जवाब न देकर बुलबुल चौधरी ने कहा, 'तुम फिक्र मत करना। मैं लौटकर तुरन्त आता हूं···'

कहकर बुलबुल चौधरी खो गया तो फिर तीन दिन तक उसका चेहरा ही दिखाई न पड़ा।

बात नैना को अस्वाभाविक भी लगी थी। अगर कम उम्र की न हो तो हर लड़की कोहबर की रात की एक प्रकार की कल्पना करती है। उसकी कल्पना उसी रात में मिट्टी में मिल गयी। उस दिन रात-भर उसे नींद नहीं आयी। इसलिए नहीं कि उसने पति के रूप में बुलबुल चौधरी की कामना की थी। लेकिन यह अवहेलना ? मानो पुरुष ने पहले-पहल उसकी उपेक्षा की हो। चाहे जिस किसी ने उपेक्षा की हो, वह अक्षम्य है। जिसने छुटपन से ही वैभव-विलास में जीवन व्यतीत किया। आज सहसा उसकी यह पहली पराजय है। मानो, किसी ने उसे पैरों से ठुकरा दिया हो। पैरों से भी यदि कोई उसके शरीर पर चोट करता तो इतनी चोट नहीं लगती।

लेकिन वह किसके पास फरियाद करे ? अलका छोटी है। उसको उतनी समझ नहीं है। अब तक उसकी समझदारी की उम्र नहीं हुई है। और कोई नहीं मिला तो हया-शर्म को ताक पर रख कर गुलाबी से ही पूछ बैठी। पूछने में थोड़ी शर्म हो रही थी। फिर भी बिना पूछे रह नहीं सकी।

नैना ने पूछा, 'वह कहां गये हैं, तुझे मालूम है गुलाबी ?'

गुलाबी बोली, 'जानती हूं, मालकिन।'

'कहां?'

'चौधरी-स्टेट के एक मजदूर की औरत मर गयी है। खबर मिलते ही चौधरी साहब वहां गये हैं।'

नैना को अजीब-अजीब-सा लगा। किसी को कितनी बड़ी मुसीबत क्यों न पड़ी हो मगर कोहबर की रात में चला जायेगा? यह किस तरह का परोपकार है?

गुलाबी ने कहा, 'नहीं मालकिन, चौधरी बड़े ही ईमानदार आदमी हैं...'

'तुझे कैसे मालूम हुआ?'

'सब कोई कहते है।'

वह व्यक्ति तीन दिन तक नहीं आया। तीन दिनों तक बुलबुल चौधरी की खबर किसी को न मिली। फिर भी किसी के दिल में किसी तरह का संदेह न हुआ। मानो चौधरी साहब का यही नियम है।

और संदेह करने के लिए है ही कौन? सोचने के लिए कौन है? धर्मेन्दर चौधरी का लड़का बुलबुल चौधरी उसी लड़के ने इतने दिन इण्डिया के बाहर बिताये हैं। घर में पुराने दाई-नौकर कोई भी नहीं हैं। जब बाहर से बुलबुल चौधरी इण्डिया लौटकर आया तो घर की ऐसी हालत न थी। घर के खिड़की-दरवाजे, ईंट-पत्थर सब टूट-फूट गये थे। बगीचा जंगल हो गया था। उसी व्यक्ति ने सब कुछ मरम्मत कराया। फिर से लॉज बना, बगीचा बना और उस बगीचे में फूल खिला। मकान का अंदरूनी रूप-रंग निखर उठा।

'लोग कहते, 'धर्मेन्दर चौधरी का लड़का बहादुर है...'

पुराने नौकर-चाकरों में से कोई नहीं था। थी सिर्फ एक बुढ़िया जानकी की मां। तब जानकी की मां की आंखों में चर्बी छा गयी थी। काम करने की उसमें ताकत न थी।

जानकी की मां कहती, 'चौधरी साहब हैं इसलिए जिन्दा हूं बेटी। दो कौर खाने को मिलता है...'

जानकी की मां कभी खूबसूरत रही होगी। देखने से मालूम होता है कि हड्डियां मजबूत हैं। अब शरीर की चमड़ी ढीली पड़ गयी है।

जानकी की मां को सारी पुरानी बातें मालूम हैं। धर्मेन्दर चौधरी और आत्मा चौहान की मजलिस जमती थी। लखनऊ से बाई जी आती, मुजरा होता था। सारी रात मजलिस चलती रहती थी। उन दिनों की बातें करते-करते उसकी चर्बी छाई आंखें जैसे बाहर निकल जाना चाहती हों।

जानकी की मां कहती, 'मेरी लड़की भी देखने में तुम्हारी जैसी ही है बेटी…'

अलका कहती, 'तुम्हारी लड़की को देखकर मैं एक वार वेहोश हो गयी थी। तुम जानती हो?'

बुढ़िया कहती, 'मेरे भाग्य का दोष है वेटी। भाग्य में अगर न लिखा हो तो क्या होगा? मेरे भाग्य का दोष तो है, मेरी लड़की के भी भाग्य का दोष है। जानकी का दिमाग ठीक रहता तो आज उसका भी व्याह होता, उसके भी पति होता। मैं उसका व्याह चौधरी साहव जैसे शहजादे के साथ करती…'

अलका पूछती, 'अच्छा, तुम्हारी लड़की देखने में मेरी दीदी की तरह कैसे हुई?'

इस सवाल को सुनकर जानकी की मां सकपका जाती। जवाव नहीं दे पाती।

कितने दिन आत्मा चौहान इस घर में आये हैं, कितनी रातें इस छत के नीचे गुजारी हैं, इसकी कोई सीमा नहीं है। मेम पत्नी आने के पहले धर्मेन्दर चौधरी जैसे थे वैसे ही थे आत्मा चौहान। तव उनकी मौज की जिन्दगी थी। दोनों जने संगीत के प्रेमी थे। कभी-कभी शाम पुड़िया से शुरू होती। और उसके बाद मालकेश चलता। मालकेश के बाद दरबारी कान्हड़ा। दरवारी कान्हड़ा से कोमल निषाद। दोनों नशे में चूर हो जाते। तव दोनों की आंखें लाल हो जातीं, दृष्टि में धुंधलापन उतर आता था। तव कौन अख्तरी वाई है और कौन है दाई—इसका अता-पता नहीं चलता। उस हालत में भैरवी या आसावरी में रात समाप्त होती थी। उन दिनों की वातें जानकी की मां किसी से कहना पसन्द नहीं करती। पूछने पर उसका उत्तर नहीं देती है।

जानकी की मां के लिए यह शर्म की कहानी भी है और है खुशी की भी कहानी। बुढ़ापे में अगर कोई सवाल करता है तो उसका सम्पूर्ण चेहरा आरक्त हो उठता है।

कहती, 'चौधरी साहब के विलायत से लौटने पर जानकी को ठौर-ठिकाना मिला।'

अलका पूछती, 'क्यों, ठौर-ठिकाना मिला—क्या कह रही हो?'

'जानकी का दिमाग खराव हो गया वेटा!'

'दिमाग क्यों खराब हुआ?'

जानकी की वातें करते-करते जानकी की मां की आंखों से टप-टप आंसू की बूंदें चूने लगतीं।

कहती, 'मेरा भाग्य ही खोटा है, बेटा वर्ना मेरी बच्ची पागल क्यों होती ?'

अलका पूछती, 'उस लड़की को पागलखाने में किसने भेजा ?'

'चौधरी साहब ने। चौधरी ने ही आकर मेरी जान बचाई। मैं तो बेटा, आंख से देख नहीं पाती हूं। मेरे पास कानी कौड़ी भी नहीं है कि खर्च करूं। खर्च भी क्या कम है बेटा ? महीने में तीन सौ रुपया लगता है, चौधरी साहब थे इसी से आज मेरी बेटी खाती-पहनती है…'

'पागलखाने से फिर भागी क्यों ?'

'कौन कह सकता है, बेटा ? पागल का दिमाग अगर ठीक रहे तो उसे पागल कहा क्यों जाय ?'

इसी तरह तीन दिन कटे। चौथे दिन बुलबुल चौधरी फिर घर आया। वह जैसे बदला हुआ आदमी हो। और तरह का चेहरा। दूसरी ही मूर्ति। इतने दिन कहां थे, किसी को पूछने का साहस न हुआ। चेहरा बड़ा गंभीर दिख रहा था। नैना ने पूछा, 'तुम्हारी तबीयत खराब है क्या ?'

बुलबुल चौधरी ने मुस्कराने की कोशिश की मगर वह मुस्कराहट बड़ी फीकी थी।

बोला, 'नहीं, मतलब…कहां, मेरी तबीयत कहां खराब है…।'

'तब क्या कुछ घटा है तुम्हारे साथ ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'क्यों, तुम ऐसी बात क्यों पूछती हो ?'

'तुम्हें देखने से तो ऐसा ही लगता है।'

बुलबुल चौधरी ने और जोर से हंसने की कोशिश की।

बोला, 'होगा क्या ! प्रोपर्टी रहने पर झंझट लगा ही रहता है…।'

नैना ने कहा, 'सुना कि तुम्हारे स्टेट में कोई बीमार है, उसी को देखने गये थे।'

'किसने तुमसे कहा ?'

'जानकी की मां से खबर मिली है।'

खबर सुनकर बुलबुल चौधरी मानो बेफिक्र हुआ हो।

बोले, 'अपना दुःख ही देखने से दुनिया में नहीं चलता है। मेरे मातहत जो काम कर रहे हैं, उनका मेरे सिवा कोई नहीं है…।

'तो अब कैसा है ?'

'अच्छा है।'

शुरू-शुरू में ऐसे ही चल रहा था। बुलबुल चौधरी कहीं वाहर चला जाता और फिर हठात् एक दिन लौट आता, आशीष चौहान जैसे पागल आदमी ही घर पर बैठे रहते हैं। नहीं तो सब कोई कामकाज में फंसा रहता है। किन्तु काम-धंधा रहने से क्या आदमी रात में भी घर में न रहेगा!

गुलाबी ने ढाढ़स वंधाया।

कहा करती, 'कुछ खयाल न करें, मालकिन! साहव जरूर ही ज्यादा काम-धन्धे में फंस गये हैं।

नैना कुछ नहीं वोली। आया के साथ इस तरह की वातें असंगत और अनुचित हैं।

फिर भी गुलाबी जबरन् नैना को समझाती-वुझाती। कहती, 'तुम्हारे पति देवता के समान हैं, ऐसा पति भाग्यवान को ही मिलता है।'

नैना विगड़ पड़ती, 'तू इतनी बातें क्यों करती है? मैंने तुझसे कुछ पूछा है?'

इस पर गुलावी चुप हो जाती और बातें नहीं करती। पर अलका के सामने अपने को और सम्हाल नहीं पाती। अलका एक छोटी वच्ची है। दूर के रिश्ते की मौसेरी वहन। छुटपन में ही उसके मां-वाप न रहे। सो उसी वक्त से अलका को लाकर अपने पास रखा है। जानकी की मां का कहना है कि इतने बड़े मकान में अलका साथ न रहती तो नैना भी शायद पागल हो जाती। अलका भी इस चौधरी लॉज में आने पर दूसरी तरह की हो गयी है। दीदी को छोड़कर जाने का उपाय भी नहीं है। जायगी ही कहां वह? और अलका अगर चली जाय तो वह वैसे इस अनात्मीय नगरी में बास करेगी?

अलका ही दीदी के पास सोती थी। हर वक्त दीदी के पास रहती थी। दीदी के चेहरे की ओर देखकर चुपचाप पड़ी रहती··· निःशब्द!

नैना पूछती, 'क्या री, कुछ कहेगी क्या?'

शुरू-शुरू में अलका को कुछ कहने का साहस नहीं होता। लेकिन जब सह नहीं पाती तो कहती, 'दीदी, मुझे डर लगता है।'

नैना को भी डर लगता।

वोलती, 'क्यों री, तुझे डर क्यों लगता है?'

'मालूम नहीं दीदी, मुझे डर लगता है।'

'डरने की क्या वात है? मैं जो हूं।'

'नहीं दीदी, तुम्हारे लिए ही मुझे डर लगता है।'

'मेरे लिए! वेवकूफ कहीं की। मुझे क्या हुआ है? मुझे तो कुछ हुआ नहीं है।'

अलका कहती, 'ना दीदी, तुम यह मत सोचो कि मैं कुछ नहीं समझती। मैं सब समझती हूं। तुम्हारी आंखों के नीचे स्याहपन क्यों उभर रहा है! तुम अस्वस्थ क्यों होती जा रही हो।'

नैना अब अपने को संभाल नहीं पाती। दोनों हाथों से अलका को अपनी छाती से चिपका लेती और आंसू छिपाने की कोशिश करती।

कहती, 'कह, क्या करूं अलका, भाग्य में कुछ और ही हो तो मैं क्या करूं और तू ही क्या करेगी।'

'लेकिन तुम तो चौधरी साहब से कुछ कहती ही नहीं।'

'कह, मैं क्या कहूं—चौधरी साहब से रुकने के लिए ही न? वह सारा काम-धाम छोड़कर रात-दिन मुझे लेकर पड़ा रहेगा? रात-दिन हम लोगों की रखवाली करेगा?'

अलका कहती, 'तो क्या एक दिन भी घर पर नहीं रहेंगे? इतना ज्यादा क्या काम है।'

कहीं जाने की जगह होती तो शायद नैना वहीं चली जाती। चौहान-स्टेट में ही उसका कौन है? वहां रहना जैसा यहां रहना वैसा ही।

दोनों जने एक ही मकान के कोटर में बैठकर दिन-पर-दिन और महीने-पर-महीने घड़ियां गिन रही थीं।

जाने के लिए कौन-सी जगह है उनके लिए? आस-पास के घर की औरतें आती थीं। उनमें से मिसेज चोपड़ा हमेशा आती थी। आकर बात-चीत कर जाती थी लेकिन मिसेज चोपड़ा से भी ज्यादा बातचीत करना अच्छा नहीं लगता।

अलका कहती, 'वह औरत कैसी-कैसी तो मालूम होती है दीदी।'

'क्यों?'

'मैं सब समझती हूं, वह सिर्फ अपना गहना तुम्हें दिखाने आती है।'

सच, मिसेज चोपड़ा आते ही अपने वैभव की कहानी शुरू कर देती है। मिस्टर चोपड़ा ने कितने गहने दिये हैं, कितने सलवार और कुरते दिए हैं, कितने जोड़े जूते दिए हैं, कितनी गाड़ियां दी हैं, उसी की कहानी विस्तार के साथ नैना चौहान से कह जाती है। शायद यही सब बात कहने आती है। सुनाना उसे अच्छा लगता है।

मिसेज चोपड़ा कहती, 'पता है मिसेस चौधरी, कल क्या घटना घटी?'

'क्या?'

'मिस्टर चोपड़ा कल लखनऊ से एक गाड़ी खरीद लाये हैं...।'

'गाड़ी? गाड़ी का मतलब?'

नैना चौहान को भी आश्चर्य होता है।

मिसेज चोपड़ा कहती, 'लखनऊ में चालीस हजार रुपये की फीयेट गाड़ी आयी थी—उसे खरीद लाए हैं।'

'क्यों, गाड़ी तो आपके पास थी ?'

'कौन कहने जाए। इतनी मंहगाई में मेरे लिए इतना रुपया खर्च करना उचित है ? लेकिन मेरी बात तो सुनते ही नहीं। मैं अगर कुछ कहती हूं तो बोलते हैं कि मैं तुम्हारे लिए सब कुछ कर सकता हूं···।

बोलकर मिसेज चोपड़ा नैना चौहान के दिल में ईर्ष्या जगाना चाहती हैं।

पर नैना चौहान के चेहरे पर इसका आभास न मिलने पर मिसेज चोपड़ा का उत्साह दूना हो जाता है।

कहती हैं, 'मेरा हसबैंड मुझे इतना प्यार करता है कि क्या कहूं आपसे मिसेज चौधरी। अगर मैं नाराज हो जाती हूं तो मुझे मनाने के लिए दिन-भर खुशामद करते हैं।'

अलका कहती, 'लगता है, आज मिस्टर चोपड़ा घर पर नहीं हैं।'

'क्यों ? तुम यह क्यों पूछती हो ?'

'आप हमारे घर आए हैं न ! मिस्टर चोपड़ा आप पर नाराज न होंगे ?'

मानो मिसेज चोपड़ा को अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया हो।

कहती, 'तुम्हारा अनुमान बिल्कुल ठीक है। वह घर पर रहते तो मैं यहां आ पाती क्या ? आज मिस्टर चोपड़ा लखनऊ गये हुए हैं।

नैना ने मिसेज चोपड़ा को आड़ में ले जाकर एक दिन कहा, 'आप अलका के सामने यह सब मत बोला करें। वह छोटी है न, इसलिए ऐसी बातें उसके लिए न सुनाना ही अच्छा रहेगा···'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'सुनाने से हानि क्या है ? अभी से सब कुछ सीखना चाहिए। दो दिन बाद शादी होगी—तब ? तब काम में आयेगा।'

नैना ने कहा, 'नहीं-नहीं; उसकी उम्र अभी बहुत कम है···।'

किन्तु मिसेज चोपड़ा ने तब तक प्रसंग बदल दिया।

बोली, 'मिस्टर चौधरी कहां है ?'

'वह लखनऊ गये हैं।'

'आज रात लौटेंगे न ?'

नैना ने कहा, 'ठीक-ठीक नहीं बता सकती हूं···।'

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'सच, मैं तो यह देखकर हैरान हो जाती हूं मिसेज चौधरी। मिस्टर चौधरी रात में एक दिन भी घर पर नहीं रहते हैं। आप कुछ नहीं पूछतीं कि कहां जाते हैं वह ?'

नैना ने कहा, 'हो सकता है उन्हें बहुत काम रहता हो···।'

'काम रहने से ही क्या ? रहने से भी क्या मिसेज के पास मिस्टर न रहेंगे। नहीं, यह ठीक नहीं है। मेरे मिस्टर को तो देखिये। एक दिन भी अगर मेरे पास न सोयें तो उन्हें नींद ही नहीं आयेगी। उन्हें भी नींद न आयेगी और मुझे भी नींद न आयेगी···।'

नैना इन बातों का जवाब नहीं देती। यह भी एक तरह का अपमान है। लेकिन बुलबुल चौधरी की वजह से जबान बंद रखकर उसे सहना पड़ता है। मुंह खोलकर वह कुछ कह नहीं पाती। मिसेज चोपड़ा का आना-जाना भी बन्द नहीं कर पाती है।

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'नहीं-नहीं, आप इसे बर्दाश्त मत करें मिसेज चौधरी। मिस्टर चौधरी के आने पर उनसे कहें। मर्द की जात जानवर की जात होती है। अगर पालतू हो गया तो आपका तलवा सहलाने में भी आनाकानी न करेगा। मिस्टर चोपड़ा पहले से क्या ऐसे थे ! मैंने ही चाबुक मार-मार कर पालतू बनाया !'

मिसेज चोपड़ा जिस दिन घर पर आती हैं, नैना का दिल कांपने लगता है। अच्छे-अच्छे उपदेश देने के बहाने अपने पति की बड़ाई कर जाती है और नैना के लिए सुनने के सिवा और कोई चारा नहीं था। कान लगाकर सब कुछ सुनना पड़ता था।

उस दिन बुलबुल चौधरी लौटे। बहुत दिनों पर लौटे।

लेकिन आते ही नैना की खोज शुरू कर दी।

नौकर-चाकरों में पूछा, 'कहां गई हैं मिसेज चौधरी ?'

नौकरों ने बताया, 'घूमने गई हैं···'।

'किसके घर गई हैं ?'

बुलबुल चौधरी ने नैना को किसी के घर घूमने को मना कर दिया था। कहीं आना-जाना पसन्द नहीं करता।

बुलबुल चौधरी कहता, 'इस मुहल्ले के सभी लोग खराब हैं। किसी के घर जाने की जरूरत नहीं।'

नैना ने एक बार कहा था, 'लेकिन वे बार-बार मुझसे आने का आग्रह करते हैं।'

'करने दो ! इनमें कोई अच्छे नही हैं। सिर्फ तुम्हारी बात सुनकर उससे कहेगी और उसकी बात सुनकर तुमसे कहेगी। ये लोग एक-दूसरे का भला देखना नहीं चाहते।'

नैना ने एक बार हिम्मत वांधकर कहा, 'मिसेज चोपड़ा अक्सर आती हैं मगर···।'

'क्यों आती हैं ?'

नैना ने कहा, 'कैसे कहूं कि क्यों आती हैं। शायद गपशप करने···।'

'क्या गपशप करती हैं ?'

'तुम्हारे बारे में पूछती हैं।'

'मेरे वारे में ? मेरे वारे में क्या पूछती हैं ?'

नैना ने कहा, 'यही कि तुम कहां जाते हो, क्या सब करते हो। मिस्टर चोपड़ा के साथ तुम्हारी तुलना करती हैं···।'

मिस्टर चोपड़ा का नाम सुनते ही वुलबुल चौधरी बिगड़ पड़ा।

बोला, 'मेरे साथ मिस्टर चोपड़ा की तुलना ? वह तो एक स्त्रैण है, तुम मुझे वैसा हसबैंड बनाना चाहती हो ?'

'नहीं, मैंने तो ऐसा कुछ कहा नहीं है।'

तुम्हारी वात का तो यही मतलब निकलता है। मिस्टर चोपड़ा वह तो औरत है औरत ! बीवी का गुलाम ! सिर्फ बीवी के पीछे-पीछे चक्कर लगाता है। तुम मुझे वैसा ही औरताना-मर्द समझती हो ?'

नैना बोली, 'मैंने तो ऐसा नहीं कहा।'

'तब उस बात की चर्चा क्यों करती हो ?'

नैना ने कहा, 'लेकिन मुझे वड़ी शर्म मालूम पड़ती है।'

'शर्म किसलिए ?'

'सभी को मालूम है कि तुम घर पर नहीं रहते हो ! उसी की बावत जब कोई कुछ कहता है तो मुझे शर्म मालूम पड़ती है।'

'तुम क्या चाहती हो कि मैं मिस्टर चोपड़ा की तरह हो जाऊँ ?'

नैना ने कहा, 'तुम अगर घर पर रहते तो इन बातों की चर्चा नहीं चलती।'

बुलबुल चौधरी क्रोधित हो उठे।

बोला, 'मैं क्या उन लोगों की तरह बीवी का गुलाम हूं ? मैं क्या उन लोगों की तरह औरत हूं ?'

उत्तर देने में नैना चौहान का कलेजा फटने लगता। लेकिन जबान से कह सकने का साहस नहीं कर पाती। उस आदमी को देखते ही नैना को मानो डर लगता। उस पर विश्वास नहीं होता था। जब वह व्यक्ति घर पर रहता तो मन में होता था कि नहीं रहने से ही अच्छा रहता और जब नहीं रहता था तो उसके न रहने के कारण शर्म मालूम पड़ती। मानो बुलबुल चौधरी का घर पर न रहना नैना चौहान के लिए शर्म की बात है।

यह एक अजीब तरह की समस्या उसके जीवन में थी। वह एक अजीब यातना थी।

उस दिन बुलबुल चौधरी ने आकर जैसे ही पूछा, गुलाबी सामने आकर खड़ी हुई।

बुलबुल चौधरी ने पूछा, 'तुम्हारी मालकिन कहां गई हैं ?'

'घूमने गई हैं।'

'कहां घूमने गई हैं ? अभी उसे हवा खाने का वक्त मिला ? और काम के मारे मैं नाकों दम हो रहा हूं···।'

'मालकिन को बुला लाऊं···।'

अजीब ही समां थी। उस दिन चौधरी लॉज की बैठक में कई एक अजनबी दिखाई पड़े। वे भी बुलबुल चौधरी के साथ आये थे। किसी को मालूम नहीं कि उन्हें क्या काम है, वे क्यों आये हैं या वे कब तक ठहरेंगे ?' चौधरी लॉज की बैठक में बैठकर उन लोगों ने बहुत देर तक बातचीत की। सभी बड़े रईस हैं। अन्दर रसोईघर में खबर भेजी गई कि पांच व्यक्तियों का खाना पकेगा।

तब तक गुलाबी मालकिन को बुला लाई।

नैना चौहान घूमने के लिए जाती ही कितनी दूर है ? घर से निकलकर कुछ दूर जाने पर ही एक पहाड़ है। पहाड़ के नीचे कुछ बड़े-बड़े पेड़ हैं। गाड़ी वहीं खड़ी कर दी जाती। गाड़ी से नैना उतरती, अलका भी और फिर कुछ देर तक टहलती। फिर कुछ देर एक पत्थर पर बैठ जाती। बैठे-बैठे गपशप करती और जब शाम उतर आती तो ठंड पड़ने लगती। नैना अलका की देह पर कोट रख देती। अपने शरीर को भी स्कार्फ से ढंक लेती। उसके बाद रात उतर आती। किसी-किसी दिन आकाश के एक कोने में चांद उग आता।

नैना अलका से पूछती, 'घर चलेगी ?'

अलका पूछती, 'तुम्हें घर जाने का मन कर रहा है ?'

नैना कहती, 'तो यहीं बैठकर क्या करूंगी ?'

अलका कहती, 'घर जाते ही मुझे डर-सा लगता है···।'

'क्यों, डर क्यों लगता है ?'

'मालूम नहीं।'

'नहीं, डर मत ! मैं जो हूं !'

'लेकिन आज भी अगर मिसेज चोपड़ा आ पड़े और अपनी उन्हीं बातों को सुनाना शुरू करे तो ?'

नैना कहती, 'सो बोलने दे, दुनिया में क्या एक ही तरह का आदमी रहता है ? जानती हो, धरती कितनी बड़ी है। हजारों-लाखों तरह के आदमी यहां रहते हैं। कोई भला होता है तो कोई बुरा, कोई बेवकूफ तो कोई धोखेबाज। इतना सब सोचे तो काम कैसे चले ?'

अलका कहती, 'नहीं दीदी, चलो हम लोग नैनीताल चली जायें। यहां से तो अच्छा रहेगा···।'

'वहां जो जायगी, सो वहां तेरा कौन है ?'

'तो यहां ही कौन है ?'

'फिर भी कुछ दिन यहीं रह। वहां जाने से भी मैं, तू और गुलाबी ही होंगे। यहां भी यही बात है ? फर्क कहां है ?'

अलका कहती, 'मगर वहां मुझे ऐसा डर नहीं लगता था।'

'यहां ही तुझे किस चीज का डर लगता है ?'

'मालूम नहीं, सिर्फ लगता है जैसे तुम पर कुछ बुरा गुजरने वाला है···।'

'मुझ पर ? मेरे लिए तू फिक्र मत कर। जो होने का होगा, होगा। अपने बारे में सोचना मैंने छोड़ दिया है।'

बात करते-करते नैना का गला रुंध जाता। गला साफ कर फिर बोलती, 'जिस दिन मेरे पिताजी का देहांत हुआ, उसी दिन मैंने सोच लिया था कि मेरे भाग्य में सुख नहीं बदा है।'

अलका कहती, 'सच दीदी, तुमको देखकर मुझे बड़ी होने की इच्छा नहीं होती···।'

'क्यों री ? तू बड़ी होगी, एक दिन तेरा ब्याह होगा। मैं भली-भांति देख-सुनकर तेरा ब्याह रचाऊंगी।'

अलका कहती, 'शादी से मुझे नफरत हो गई है। मुझे किसी दिन शादी करने को मत कहना।'

नैना कहती, 'हट, मेरा भाग्य खोटा है तो क्या सभी का भाग्य खोटा होगा। कितनी ही लड़कियां शादी-ब्याह कर सुख-सुविधा से हैं। मिसेज चोपड़ा को देखती नहीं कि कितनी सुखी हैं। रोज गहना खरीदती हैं, सलवार खरीदती हैं, गाड़ी खरीदती हैं।'

अलका टोकती, 'मिसेज चोपड़ा की बातें मत करो दीदी। मैं उसको फूटी आंख भी नहीं देख सकती हूं, हरदम अपनी ही बातें करती है, मानो हम लोग उनकी तरह बड़े आदमी नहीं हैं। हम लोगों के सामने सिर्फ यह

साबित करना चाहती है कि वह हमारे बनिस्बत बड़ा आदमी है···।'

नैना कहती, 'सो करने दो। मगर मिसेज चोपड़ा हम लोगों से ज्यादा सुखी है।

अलका कहती, 'हम लोगों को ऐसे सुख की जरूरत नहीं है। इससे शादी न करना ही अच्छा है।'

नैना हंसकर कहती, 'अभी तू ऐसी बात करती है, आखिर तू ही कभी शादी के लिए तड़पेगी।'

'क्यों ! तुम देख लेना, मैं नहीं करूंगी।' तुम ही क्या शादी को छटपटाती रही थीं ? फिर भी अपनी स्वीकृति क्यों दी तुमने ?'

नैना ने कहा, 'मैंने क्या स्वेच्छा से स्वीकृति दी थी ? बाबूजी मरने के समय वायदा कर गये थे। बाबूजी की बात क्या नहीं मानती ? तू जानती नहीं कि मैं बाबूजी को कितना प्यार करती थी ! छुटपन से केवल बाबूजी को ही पहचानती थी, उन्हीं के पीछे-पीछे लगी रहती थी। मरने के समय मेरे बारे में ही सोचकर उन्हें बड़ा दुःख हुआ था। सो मेरे ब्याह का सब इन्तजाम मेरे बाबूजी ही कर गये थे।'

हठात् गुलाबी के आ जाने से बातचीत रुक गई।

गुलाबी दौड़ती हुई आ रही थी। आते ही बोली—

'चौधरी साहब आये हैं मालकिन ! आपको खोज रहे हैं।'

'क्यों, मुझे क्यों खोज रहे हैं ?'

'मालूम नहीं। साथ कुछ लोग आये हैं। उनके खाने-पीने का इन्तजाम हो रहा है···।'

नैना उठ पड़ी। अलका भी उठी। एकाएक चार-पांच व्यक्ति क्यों आये हैं। इसके पहले कभी ऐसा नहीं हुआ है। नैना चौहान की धारणा थी कि बुलबुल चौधरी अपने स्टेट के चलते व्यस्त रहते हैं, वहीं के झंझट-बखेड़े में उनका समय बीतता है। लेकिन इतने व्यक्तियों को लेकर घर आयेंगे, ऐसा तो कभी हुआ नहीं।

मकान के दरवाजे के सामने गाड़ी रुकी। बैठक की बगल से रास्ता था। बुलबुल चौधरी ने जाते हुए जरूर ही देखा होगा।

नैना दो-मंजिले के अपने कमरे में ज्यों ही घुसी, बुलबुल चौधरी हाथ में एक कागज लेकर आया। अलका की ओर देखकर बोला, 'तुम जरा कमरे से बाहर जाओ तो अलका···।'

अलका चुपचाप बाहर चली गई।

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'घूमने-फिरने गई थी ?'

नैना ने कहा, 'हां !'

बुलबुल चौधरी ने कहा—'बड़ी अच्छी बात है ! किसी के घर पर गई थी !'

नैना ने कहा—'नहीं···।'

'तब !'

'यों ही पहाड़ की तरफ।'

'अच्छी बात है। ऐसे ही रोज घूमा-फिरा करो। झंझट चुक जाय तो मैं भी तुम्हारे साथ भ्रमण करने निकलूंगा।'

नैना ने पूछा, 'तुम्हारा काम कब खत्म होगा !'

'अब खतम हुआ चाहता है। अब ज्यादा दिन नहीं हैं। सब समाप्त कर एकदम निश्चित हो जाऊंगा। देखो न, वे लोग सब आए हैं। उसी काम में तो···।'

'वे लोग कौन ?'

'मेरे बिजनेस पार्टनर ! कभी हम लोगों ने एक साथ काम किया है। अब बाकी काम खतम करने आये हैं।'

नैना ने कहा, 'बाकी काम क्या है ?'

'वही बताने तुम्हारे पास आया हूं !'

बुलबुल चौधरी ने हाथ के कागज को नैना की ओर बढ़ा दिया।

'यह क्या है ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'पढ़कर देखो।'

नैना कागज लेकर पढ़ने लगी।

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'पढ़ने को वैसे है कुछ भी नहीं। इसमें कोई गड़बड़ नहीं है। तुम्हारे दस्तखत के बगैर नहीं होगा इसलिए ? इस पर दस्तखत कर दो।'

नैना ने सब-कुछ पढ़ा।

बोली, 'यह तो गुलमोहर स्टेट की बात···।'

'हां, तुम्हारा स्टेट है इसलिए तुम्हारे दस्तखत की जरूरत है।'

लेकिन स्टेट को गिरवी क्यों रखोगे ?'

'न रखने से रुपया नहीं मिल रहा है इसलिए। पन्द्रह लाख रुपये के लिए ही तो अटका हुआ है।'

'किन्तु स्टेट मेरा है; मैं गिरवी क्यों रखूं ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'मगर गिरवी न रखा जाये तो मैं कठिनाई में

पड़ जाऊंगा।'

'इतने रुपये की सहसा जरूरत ही क्या पड़ी ? ऐसा क्या हुआ है तुम्हारे साथ ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'मगर कुछ न होता तो तुमसे इस कागज पर दस्तखत कराने आता ? तुम्हीं बताओ ना, जो तुम्हारा स्टेट है वह मेरा भी है। तुम्हारा और मेरा पैसा क्या अलग-अलग है ?'

नैना ने कहा, 'इस बात को जाने दो, मगर स्टेट गिरवी रखने से तुम्हें क्या फायदा होगा ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'यह क्या ! यदि फायदा न होता तो तुम्हें कहता ही क्यों ! जानती हो चारों तरफ मेरे कैसा-कैसा झंझट चल रहा है। चाह कर क्या शादी करने के बावजूद एक दिन भी घर पर रहा हूं। यह झमेला चुक जाये तो आराम से घर पर रहूंगा। मुझे दौड़-धूप नहीं करनी पड़ेगी···।'

सहसा मिसेज चोपड़ा के गले की आवाज सुनाई पड़ी।

'मिसेज चौधरी हैं ?'

बुलबुल चौधरी ने कागज अपने हाथ में खींच लिया।

अब तक अलका बाहर अपने कमरे में छटपटा रही थी। दीदी के कमरे से दो व्यक्तियों के गले की आवाज आ रही थी। इतने जोर-जोर से दीदी कभी बातचीत नहीं करती। लड़ाई-झगड़ा हो रहा है क्या ?

मिसेज चोपड़ा के कमरे में आते ही अलका भी पीछे-पीछे आई। बुलबुल चौधरी तब दूसरे किस्म का हो गया।

बोला, 'आइये, मिसेज चोपड़ा ! कैसी हैं आप ?'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'आपसे तो भेंट ही नहीं होती मिस्टर चौधरी। आप शादी कर नई दुल्हन ले आये। उसके बाद से आपसे तो भेंट ही नहीं हो रही है। नई दुल्हन को छोड़कर आप कैसे रह पाते हैं ? मैं यही बात मिस्टर चोपड़ा से कहती हूं। कहती हूं— मिस्टर चौधरी को देख आओ। कितने कर्मठ हैं और एक तुम हो कि रात-दिन मेरे पीछे घूमते रहते हो— यह क्या अच्छा है ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'मैं बहुत सारे झंझटों में फंसा हुआ हूं। इसी से अक्सर घर पर नहीं रह पाता हूं ··।'

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'इसी से तो मैं मिस्टर चोपड़ा से कहती हूं, मेरे चलते तुम्हारा काम-धाम चौपट हो गया। मेरे बारे में फिक्र न कर जरा काम-धाम की सोचो। लेकिन वह सुनने क्यों लगे।'

किसी ने सुनना पसन्द न किया। तो भी मिसेज चोपडा अपने आप

बोली, 'वह कहते हैं कि काम-धाम तो हमेशा लगा ही रहेगा, इसके लिए क्या अपनी जिन्दगी व्यर्थ ही गंवा दूं। सो अगर मैं उनके सामने रहती हूं तो काम-धंधा चौपट ही हो जाता है।'

फिर कुछ रुक कर बोली, 'मुझे कभी-कभी लगता है कि यह पागलपन है। वर्ना पत्नी के लिए कोई पागलपन का इतना काम करता है। देखिए न, कान में जो झुमका पहने हुई हूं, इसे कल खरीद लाये हैं। इसकी कोई जरूरत नहीं थी। ख्वामख्वाह रुपया खर्च करने की वहानेवाजी है।'

यह कहानी बहुत बार कही गई है। सो इन वातों का कोई जवाव नहीं देता है, कोई तर्क-वितर्क नहीं करता है।

फिर जैसे एकाएक याद हो आया हो, ऐसे हाव-भाव के साथ बोली, 'ऐं, एक वात तो कहना ही भूल गई···'

सबों ने मिसेज चोपड़ा की ओर देखा।

'आपने जिस आर्टिस्ट से अपनी तस्वीर बनवाई थी मैं भी उसी आर्टिस्ट से अपनी तस्वीर बनवा रही हूं···'

बुलबुल चौधरी के मुंह से इतनी देर के वाद शब्द निकला, 'कौन-सा आर्टिस्ट ?'

'आनन्द मिश्र ! बहुत ही अच्छे आर्टिस्ट हैं। आपकी पसन्द अच्छी है। मिस्टर चोपड़ा मेरी तस्वीर बनवाने के लिए ही बुला लाये हैं। आर्टिस्ट ने मुझे बताया है—आपका फीगर मिसेज चौधरी से भी अच्छा है। मैंने कहा, आप क्या वात करते हैं आर्टिस्ट !'

अव अलका वोल पड़ी। वह अपने को संभाल नहीं पाई। पूछा, 'आर्टिस्ट आपके घर पर ही हैं ?'

'हां, मालूम होता है तुम भी आर्टिस्ट को पहचानती हो ?'

कहां से एकाएक आर्टिस्ट की चर्चा चली कि घर का सारा वातावरण बिल्कुल वदल गया। एक ही क्षण में बुलबुल चौधरी की मुखाकृति कठोर हो उठी। वह और ज्यादा देर तक नहीं रुका।

वोला, 'मैं चलूं मिसेज चोपड़ा, नीचे मेरे कई मेहमान हैं···।'

मिसेज चोपड़ा बातूनी औरत है। बतियाते रहने से ही राहत मिलती है। एक ही बात को घुमा-फिराकर कहने में उसे अच्छा लगता है। जो सुनता है वह है उसका पति—और कोई नहीं। मगर वे बातें प्रतिदिन सुनाने योग्य आदमी उसे कहां मिलेगा ?

मिसेज चौपड़ा के उठकर जाने के बाद अलका ने पूछा, 'दीदी, आर्टिस्ट को एक वार देख आऊं ?'

'क्यों ?'

'ऐसे ही, वहुत दिनों से मिली नहीं। मेरा मन कैसा-कैसा तो करता है।'

'जाऊं ?'

नैना ने कहा, 'नहीं।'

'क्यों ? मना क्यों कर रही हो ?'

'चौधरी साहब नहीं चाहते कि हम उनके पास जायें या वह यहां आयें।'

नैना ने पूछा, 'कैसे समझीं ?'

'सो मैं समझ सकती हूं।'

वाहर से पुनः किसी के पैरों की आहट सुनाई पड़ी। शायद चौधरी साहब आ रहे हैं। लेकिन नहीं गुलावी थी।

गुलावी ने कमरे में आकर नैना ने कपड़े-लत्तों को सहेजकर रखा। पूछा, 'आपका जूड़ा बांध दूं मालकिन ?'

नैना ने कहा, 'नहीं, रहने दे। चौधरी साहब कहां हैं ?'

गुलावी ने कहा, 'नीचे खाना पक गया है, सव कोई खा रहे हैं···'

'अच्छा ! तू यहां से जा···'

गुलावी के जाते ही हठात् वुलवुल चौधरी फिर से कमरे के अन्दर आया। हाथ में वही कागज था।

वोला, 'जो तुमसे कहा था, कर दो—दस्तखत कर दो। वे सव इंतजार कर रहे हैं···'

'मैं उस पर दस्तखत करने से लाचार हूं।'

'क्यों ? दस्तखत क्यों नहीं करोगी ?'

'बाबूजी के दिये हुए उस स्टेट में मैं हस्तक्षेप नहीं कर सकती।'

'हस्तक्षेप न करोगी—इसका मानी ? कुछ संदेह हो रहा है कि इसके चलते तुम्हारा नुकसान होगा ?'

नैना ने कहा, 'कह नहीं सकती। मेरे पिताजी की चीज है, वह मेरे नाम इसलिए वसीयत कर गये हैं कि उसके राइट्स का उपभोग कर सकूं ! न कि गिरवी रखने के लिए, न वेचने के लिए···'

वुलबुल चौधरी ने कहा, 'तव आदमी सम्पत्ति किसलिए पैदा करता है ? इसीलिए न कि मुसीवत में काम आये। मेरे मुसीवन के दिनों में भी क्या तुम मेरी रक्षा न करोगी।'

नैना मौन रही।

फिर सर उठाकर बोली, 'तुम मुझसे दस्तखत करने को मत कहो।'

'मगर तुम चाहती हो कि मैं मुसीवत में फसूं ! और मेरी मुसीबत और

तुम्हारी मुसीबत क्या अलग-अलग है। मेरी मुसीबत के बारे में तुम्हें सोचना चाहिए…'

नैना ने एक भी बात का जवाब नहीं दिया।

बुलबुल चौधरी गरज पड़ा।

'क्यों, चुप क्यों हो गई?'

नैना ने कहा, 'अपने सॉलिसीटर के बगैर पूछे मैं दस्तखत नहीं करूंगी…।'

'इसका मतलब?'

बुलबुल चौधरी क्रोध से जैसे फुंफकारने लगा।

फिर बोला, 'इसका मतलब यह कि अपने सॉलिसीटर पर जितना विश्वास करती हो उतना मुझ पर नहीं। मैं तुम्हारा कोई नहीं हूं? सॉलिसीटर ही तुम्हारा सब-कुछ है। मेरी मुसीबत के बारे में तुम एक बार भी नहीं सोचोगी? मेरी मुसीबत क्या तुम्हारी मुसीबत नहीं है? तुम मुझे इतना पराया समझती हो?'

अलका पास ही खड़ी थी, इसका खयाल बुलबुल चौधरी को नहीं था। बातें करते-करते बुलबुल चौधरी उत्तेजना में मानो होश-हवास खो बैठा हो।

इस पर भी जवाब नहीं दे रही है, देखकर बुलबुल चौधरी ने फिर कहा, 'मेरे पार्टनर्स तुम्हारे दस्तखत के लिए इन्तजार कर रहे हैं। अब तुम अगर दस्तखत नहीं करोगी तो मैं अपना मुंह कैसे दिखाऊंगा?'

नैना ने कहा, 'मैं दस्तखत करना नहीं चाहती, यही बात उनसे कहो।'

'यह क्या मेरे लिए गौरव की बात होगी?'

'सच बोलना गौरव की बात क्यों नहीं होगी?'

'अपनी पत्नी वश के बाहर है, इससे बढ़कर लज्जा की बात दुनिया में क्या हो सकती है?'

लेकिन मैं तो यह कह नहीं रही कि मैं दस्तखत नहीं करूंगी। मैं सिर्फ कह रही हूं कि सॉलिसीटर को पूछकर दस्तखत करूंगी।'

बुलबुल चौधरी फिर क्रोधित हो उठे।

'सिर्फ सॉलिसीटर और सॉलिसीटर? तुम क्या सोचती हो कि मैं तुमको ठग लूंगा? मैं पति होकर तुम्हें मुसीबत में फंसा दूंगा? तुम्हारे पास पैसा रहेगा तो वह मेरा ही पैसा है। तुम्हारा पति होकर मैं तुम्हें ठग सकता हूं? तुम मुझे इतना नीच समझती हो?'

नैना बोली, 'क्यों तुम बार-बार एक ही बात दुहरा रहे हो? मैं दस्तखत नहीं करूंगी…'

'दस्तखत नहीं करोगी ? यही तुम्हारा अन्तिम वाक्य है ?'

'हां, अन्तिम वाक्य।'

'अच्छा, मैं भी देख लूंगा कि कैसे यह तुम्हारा अन्तिम वाक्य है···'

कहकर बुलबुल चौधरी घर से निकल आया। घर से निकलते ही अलका अपनी दीदी के पास आई।

बोली, 'तुम जिस-तिस पर दस्तखत मत करना दीदी, मैं कहती हूं तुम दस्तखत मत करना। अन्त में क्या से क्या हो सकता है···'

तब नैना चौहान हत्प्रभ-सी दिख रही है। तब तक जैसे उसका असर मिटा नहीं हो।

अलका फिर बोली, 'दीदी, मैं आर्टिस्ट के पास जाऊं। जाकर उसे सब-कुछ कह आऊं ?'

नैना बोली, 'नहीं, अभी नहीं।'

लेकिन चौधरी साहब कुछ बुरा कर बैठें तो ? अगर जोर-जबरन दस्तखत करा लें ?'

नैना ने कहा, 'नहीं, मुझसे ऐसे कोई नहीं करा सकता है।'

चौधरी साहब सब कर सकते हैं दीदी। चौधरी साहब से मुझे बड़ा डर लगता है।'

नैना बोली, 'तेरे लिए डरने की कोई बात नहीं है। मैं भी कैसी औरत हूं, एक बार दिखा दूंगी।'

'लेकिन तुम क्या कर लोगी ? कौन तुम्हारी मदद करेगा ? हमारे कौन अपने हैं ?'

नैना बोली, 'मुझे किसी की मदद की जरूरत नहीं, मैं अकेली सौ के बराबर हूं। चौधरी साहब क्या सोचते हैं कि औरत रहने से मुझमें कोई ताकत नहीं है ?'

अलका ने पूछा, 'तुम्हारे पास क्या ताकत है ? तुम्हारा कौन है जो तुम्हारी रक्षा करेगा ?'

नैना बोली, 'देखना, मैं क्या करती हूं।'

'तुम क्या करोगी ?'

नैना बोली, 'देखना जो करूंगी। तू अभी जा।'

मैंने पूछा, 'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'मैं तुम्हें सिर्फ मुख्य-मुख्य बातें बता रहा हूं। लिखने

पर यह कहानी बहुत बड़ा पोथा हो जायेगी। वजह यह कि नैनीताल और काठगोदाम जाकर रहना पड़ेगा। वहां की पृष्ठभूमि से इन्हें एकाकार करना पड़ेगा। यह कहानी मात्र कहानी नहीं है, एक प्रकार के समाज की तहवीर है। जो समाज वाहर लम्वी-चौड़ी हांकता है, हम पर शासन करता है, जिस समाज की ओर हम ललचाई निगाहों से देखते हैं—उसी समाज की यह कहानी है। इन्हीं लोगों की कहानी 'इव्स-वीकली' में छपती है, ये ही इण्डियन हैं, ये ही इण्डिया के मध्यम वर्ग के माथे के मुकुट हैं। इन्हीं लोगों के लिए हम लोग—यानी जो मोवक्किल को चराकर खाते हैं—वचे हुए हैं, दो पैसे कमा रहे हैं।'

विवाह के पहले बुलबुल चौधरी नैना की आंखों में दूसरे ही किस्म का आदमी था। और विवाह के वाद रातों-रात और ही तरह का आदमी हो गया। कहां चली गई उसकी लाखों रुपये की कहानी, और कहां चली गई उसकी भलमनसाहत। सब कुछ मानो नैना चौहान की आखों से हवा की तरह गायब हो गई।

उस दिन नैना कमरे में ही बैठी थी। गुलावी उसका जूड़ा बांध रही थी वांधते-वांधते वोली, 'चौधरी साहब बहुत ही रंजीदा हैं मालकिन।'

नैना ने कहा, 'मालूम है।'

चौधरी साहब को नाराज क्यों कर रही हैं मालकिन! साहव तो ठीक ही वातें कह रहे हैं···'

नैना झुंझला पड़ी।

वोली, 'तू चुपचाप रह गुलावी। तू जानती नहीं तो क्यों वोलती है? चौधरी साहव मुझसे कैसे वात करते हैं, तुझे मालूम है?'

गुलावी ने इसका उत्तर नहीं दिया। चुपचाप अपना काम करने लगी।

नैना ने फिर कहा, 'दूसरी औरत होती तो ऐसे आदमी के मुंह पर जूते मारकर चली जाती।'

गुलावी ने कहा, 'छिः-छिः, मालकिन अपने मर्द के वारे में ऐसी बात न कहनी चाहिए। मैं आपके भले के लिए ही कह रही हूं। मुसीबत में पड़ गये हैं इसीलिए तुनक-मिजाज हो गये हैं···।'

नैना बोली, 'मर्द अगर दिमाग दिखा सकता है तो औरत क्या दिमाग नहीं दिखा सकती, औरत का दिमाग दिखाना ही सारे अनर्थ की जड़ है?'

गुलावी वोली, 'मैं भी तो औरत हूं मालकिन! मैं औरतों का दुख-दर्द समझती हूं इसलिए कह रही हूं···'

नैना ने कहा, 'तू मेरा दुःख-दर्द क्या समझेगी? मेरी तरह तू भी क्या शादी-शुदा है?'

'शादी-शुदा नहीं हूं किन्तु समझ तो सकती हूं सब कुछ ही ।'

'तू कहां तक देख पाती है गुलाबी ? मेरे दिल में क्या गुज़र रही है, तू कैसे समझेगी ? और कोई समझेगा भी तो कैसे ?'

सहसा खिड़की से कमरे के अन्दर कुछ गिरा । मालूम नहीं, किसने क्या कमरे के अन्दर फेंका ।

'क्या गिरा देख तो गुलाबी ?'

खिड़की से ही कोई चीज अन्दर गिरी थी । कागज का एक टुकड़ा । कागज को मोड़-तोड़कर कोई अन्दर फेंक गया था ।

गुलाबी ने उसे उठाकर नैना के हाथ में दिया ।

'यह क्या है ? इसके अन्दर क्या है ?'

गुलाबी ने दोनों हाथों से कागज का गोला खोला । अन्दर कुछ भी नहीं था । लेकिन पता नहीं, कागज में क्या कुछ लिखा हुआ था ।

गुलाबी बोली, 'पता नहीं कागज में क्या कुछ लिखा हुआ है…।'

'क्या लिखा हुआ है ?'

'मैं क्या पढ़ना जानती हूं मालकिन ? आप ही पढ़कर देखें न…'

नैना कागज को लेकर पढ़ने लगी ।

गुलाबी ने देखा कि पढ़ते-पढ़ते नैना का चेहरा तमतमा उठा । फिर कागज को मोड़कर कुरते में रख लिया । रखकर पूछा, 'चौधरी साहब कहां हैं ?'

'चौधरी साहब घर पर नहीं हैं ।'

'और अलका ?

'अलका मालकिन अपने कमरे में हैं ।'

नैना ने कहा, 'तब एक काम कर, मेरा कुरता-सलवार जल्दी से निकाल दे…।'

'क्यों मालकिन ? कहीं जाइएगा क्या ?'

'हां ?'

'उस चिट्ठी में क्या लिखा है मालकिन ? किसने चिट्ठी लिखी है ?'

नैना झुंझला उठी ।

बोली, 'तुझे इतनी खबर की क्या जरूरत ? तू हर बात में टांग क्यों अड़ाती है ?'

और कुछ बोले बगैर गुलाबी ने सलवार-कुरता बाहर कर दिया ।

नैना पहनकर तैयार हो गई ।

गुलाबी ने कहा, 'अलका मालकिन को बुला दूं मालकिन ?'

नैना ने कहा, 'नहीं ।'

'मैं आपके साथ चलूं ?'

नैना ने फिर कहा, 'नहीं ?'

'अगर अलका मालकिन कुछ पूछ बैठें तो क्या कहूं ?'

'कहना कि मैं जल्दी ही लौट आऊंगी।'

गुलाबी फिर भी पीछे-पीछे आने लगी।

पूछा, 'इस वक्त अकेली कहां जा रही हैं। मालकिन, इस वक्त अकेले बाहर जाना क्या अच्छा रहेगा ? मैं भी साथ-साथ चलती हूं।'

'नहीं, तुझे आने की जरूरत नहीं।'

कहकर जल्दी-जल्दी सीढ़ियां उतर गयी।

पीछे से गुलाबी ने कहा, 'गाड़ी तैयार करने को कहूं ?'

नैना बोली, 'नहीं, जल्दबाजी है, मुझे देर हो जायगी।'

'चौधरी साहब आ जायें तो क्या कहूं ?'

'कुछ बताने की जरूरत नहीं, कहना कि मैं तुरन्त लौट आऊंगी...'

फाटक पार कर नैना चौहान सड़क पर निकल आयी। थोड़ी-सी भी देर होने से मानो उसका सर्वनाश हो जायगा।

किसने कल्पना की थी कि हिन्दुस्तान के एक बड़े राज्य में जिस खूबसूरत लड़की ने एक दिन सुख-विलास की गोद में जन्म लिया था, जिसके पैर दबाने, जूड़ा बांधने और जिसे नींद में सुलाने के लिए दाई, आया, नौकर-नौकरानी हमेशा मौजूद रहते थे, उसी लड़की को आत्मरक्षा के लिए इतनी चौकसी के साथ रहना पड़ेगा और विपत्तियों में दिन गुजारना पड़ेगा। किसने सोचा था कि उसकी पन्द्रह लाख की सम्पत्ति ही उसका काल साबित होगी ? इतने श्रम से उपार्जित आत्मा चौहान की सम्पत्ति उसकी लड़की नैना चौहान के अपघात का कारण होगी।

जिसका कोई भी नहीं है, उसे अपना बोझा स्वयं ढोना पड़ता है। संसार में शायद पराजित होने से बढ़कर कोई अपमान नहीं है। और पराजित होना ही है तो लड़ाई कर पराजित हूंगी। तुम मेरी हानि करने की कोशिश करोगे तो मैं अड़चन डालूंगी—तुम पर वार करूंगी। अपनी हानि की परवाह न कर वार करूंगी। और हानि पहुंचाने की ताकत ही तुममें कितनी है यदि मैं स्वयं अपनी हानि न करूं ?

कितने दिनों से नैना चौहान सोच रही थी कि इससे उसे छुटकारा कैसे

मिलेगा ? किस तरह वह अपनी मर्यादा की रक्षा करेगी। कैसे इस षड्यन्त्र से छुटकारा मिलेगा।

चिट्ठी में जिस जगह के बारे में लिखा हुआ था, ठीक उसी जगह नैना आकर खड़ी हो गई।

चारों तरफ धुंधलका छा गया था। रास्ता भलीभांति दिख नहीं रहा था। हमेशा गाड़ी से इसी रास्ते से गुजरी है।

पता नहीं, किस तरह के एक अनजान भय ने उसे जकड़ लिया। कहीं कोई भी नहीं है। संपूर्ण वातावरण जैसे जड़ हो गया हो। छोटे-से झींगुर को भी आवाज करने में जैसे डर लग रहा हो। मानो सब कोई नैना के लिए उत्कंठित हों, बेचैन हों स्तब्ध हों।

उसी जगह के पास पहुंचकर नैना ने चारों तरफ गौर से देखा। कहां ? कहां है वह ? कब तक आयेगा ?

सहसा लगा, एक मोटे वृक्ष की ओट में कोई आकर खड़ा हो गया।

आर्टिस्ट !

आर्टिस्ट के शरीर का एक हिस्सा ही दिख रहा है। हो सकता है कि कोई देख न ले इसीलिए अपने को वहां छिपा लिया है।

निकट जाकर पुकारा, 'आर्टिस्ट···।'

नैना ने एकाएक जैसे भूत को देखा हो। दोनों हाथ पीछे की ओर किये आया।

'तुम ?'

बुलबुल चौधरी ने चट नैना का हाथ जोर से पकड़ लिया।

'कहां है आर्टिस्ट ? कहां है वह ? कब आएगा ?'

नैना का चेहरा डर से पीला पड़ गया। उसने कल्पना तक न की थी कि ऐसी हालत में, इस प्रकार बुलबुल चौधरी से मुलाकात हो जायगी।

'किससे मिलने यहां आई हो, बोलो ?'

'किसी से नहीं।'

'तुम आर्टिस्ट से मिलने आई थी न ?'

नैना चौंक पड़ी।

'डरो मत, सच सच बताओ।'

नैना ने कहा, 'नहीं !'

'फिर झूठ बोलती हो ? झूठ बोलने में तुम्हें शर्म नहीं आती ?'

नैना ने कहा, 'नहीं, आर्टिस्ट से मिलने यहां नहीं आई हूं। मुझ पर विश्वास करो।'

बुलबुल चौधरी बोला, 'तब अपने कान पर भी मुझे विश्वास करने को

नहीं कहती हो।'

अव नैना के पास कहने को कुछ भी नहीं था।

'जवाव क्यों नहीं दे रही हो? जवाव दो। इतना अधःपतन हो गया है तुम्हारा? तुम इतनी गिर गई हो? छुप-छुपकर मिलने आई हो, इसी से लगता है, अलका को भी साथ नहीं ले आई, गाड़ी भी नहीं लाई।'

'नहीं, यकीन मानो, मैं आर्टिस्ट से मिलने नहीं आई थी।'

'तब छुप-छुपकर किससे मिलने आई हो?'

नैना ने सिर उठाया।

'नहीं, छिपकर नहीं आई हूं।'

'छिपकर नहीं आई हो तो मुझे देखकर क्यों चौंक पड़ी?'

नैना बोली, 'तुम मेरे पीछे-पीछे छिपकर आओगे, इसकी मैंने कल्पना तक न की थी और इसी से चौंक पड़ी। लेकिन अब मैंने अपने को संभाल लिया है। सोचते हो, तुमको देखकर मुझे डर लग रहा है, सो बात नहीं है। तुमसे अगर डरती तो आज तुम मेरे सामने इतने नजदीक खड़े नहीं हो सकते थे।'

'इसका मतलब?'

'इसका मतलव बताकर मैं तुमको और अपमानित नहीं करना चाहती···।'

'क्यों?'

'मैंने तुमको पहचान लिया है, इसी से तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहती। जो नीच है उससे मैं किसी तरह का रिश्ता नहीं रखना चाहती।'

वुलवुल चौधरी ने सहसा नैना का हाथ पकड़ लिया। बोला—'देख रहा हूं, आदमी के सम्मान की रक्षा किये बगैर वात करना तुम भूल गई हो।'

नैना ने जल्दी से अपना हाथ छुड़ा लिया और गरजकर बोली, 'तुम क्या आदमी हो? तुम अपने को आदमी समझते हो।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'बात बहुत वढ़ रही है।'

'बात बढ़ाने के लिए ही तुम चोर की तरह छिपकर मेरे पीछे-पीछे आए हो।'

'नहीं, मैं सिर्फ यह देखने के लिए आया था कि तुम यहां किससे मिलने आई हो। तुम्हारे मन का कौन मीत है?'

देर नहीं लगी। उसी वक्त नैना ने बुलबुल चौधरी के गाल पर एक चपत जड़ दी।

'जाहिल, नीच कहीं का।'

बुलबुल चौधरी औसत स्वाभाविक व्यक्ति नहीं था। तुरन्त ही उसने नैना का हाथ फिर से पकड़ लिया।

नैना ने हाथ छुड़ाने की कोशिश की। लेकिन बुलबुल चौधरी के हाथों में कहीं ज्यादा ताकत थी। खींचतान में नैना गिरने-गिरने को हो गई किन्तु अपने को संभालकर उठ खड़ी हुई और चिल्ला पड़ी, 'छोड़ो, कहती हूं छोड़ दो मुझे···।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'नहीं, तुम्हें किसने चिट्ठी लिखी थी, पहले यह बताओ।'

'तुम्हें अगर कहना रहता तो यहां क्यों आती?'

'तो नहीं बताओगी।'

'नहीं।'

बुलबुल चौधरी की भलमनसाहत का मुखौटा तब उतर गया। सहसा नैना के कुरते में हाथ घुसेड़ दिया। नैना ने अपने को छुड़ाने की जी-जान से कोशिश की। लेकिन तब तक चिट्ठी बुलबुल चौधरी की मुट्ठी में पहुंच गई। नैना ने चिट्ठी छीनने की कोशिश की। लेकिन बुलबुल चौधरी ने उसे हटाकर पढ़ने की कोशिश की।

नैना चिल्ला पड़ी, 'दो, मुझे चिट्ठी दो। मुझे दो···।'

अंधेरे में चिट्ठी भली भांति पढ़ी नहीं गई। तब तक जेब से टार्च निकालकर बुलबुल चौधरी ने देख लिया था। तब और बर्दाश्त नहीं हुआ। नीचे जानकी का नाम है।

पढ़ते-पढ़ते बुलबुल चौधरी के गले से आवाज निकली, 'इतनी दूर तक बढ़ गई है।'

नैना ने कहा, 'जान ही गये हो तो कहूं, 'अब मैं तुम्हारा जोर-जुल्म नहीं सहूंगी। तुम मुझे कत्ल भी कर दो तो नहीं सहूंगी···।'

'जब तक उस कागज पर दस्तखत नहीं करोगी, 'तब तक तुम्हें सहना ही पड़ेगा।'

'इस पर भी तुम्हें यह बात कहने की हिम्मत होती है!'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'तुमने मेरी हिम्मत देखी ही कहां? अगर और देखना चाहो तो दिखा सकता हूं। तुम अभी घर जाओ। अभी मैं देखूंगा कि उस लड़की को इतनी हिम्मत कैसे हुई।'

'ठीक-ठीक बताओ! वह लड़की कौन है? उसे पागलखाने में क्यों रोक रखा है?'

'मैं किसी भी बात का जवाब न दूंगा। तुम यहां से जाओगी या नहीं, बताओ।'

'मैं नहीं जाऊंगी।'

'नहीं, जाओगी?'

'तुम क्या सोचते हो, ईश्वर नाम की कोई चीज नहीं है। तुम एक के बाद एक अपराध किये जा रहे हो। उसकी तुम्हें सजा नहीं मिलेगी?'

ईश्वर की बात सुनते ही बुलबुल चौधरी हंस पड़ा।

'ईश्वर क्या तुम्हारे अकेले की ही संपत्ति है? ईश्वर मेरा नहीं है। ईश्वर सिर्फ तुम्हारा भला ही देखेगा, मेरा स्वार्थ नहीं?'

'ईश्वर का नाम लेते तुम्हें शर्म नहीं आती?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'देखो, यहां खड़े-खड़े बेकार की बातें सुनने का मुझे वक्त नहीं है। तुम जाओगी या नहीं, पहले यह बताओ···।'

'अगर कहूं कि नहीं जाऊंगी तो तुम मेरा क्या कर लोगे?'

'देखेगी, क्या कर लूंगा?'

'हां, देखूं तो सही···।'

बुलबुल चौधरी ने ज्यों ही नैना की गर्दन पर हाथ रखा, वह और रुकी नहीं। सीधे घर की ओर दौड़ पड़ी।

जाने के पहले कह गई, 'अच्छा, इसका बदला कैसे लिया जा सकता है, मैं दिखा दूंगी।'

मैंने पूछा, 'उसके बाद?'

शिवनाथ ने कहना शुरू किया, 'इस सबूत से प्रोशीक्यूशन का मुकदमा बहुत कुछ सुविधाजनक हो गया। प्रोशीक्यूशन ने साबित कर दिया कि प्रतिवादी ने वादी पर बहुत जोर-जुल्म किया है। अलका चौहान ही उसकी गवाह थी। गिरवी के कागज पर नैना चौहान के दस्तखत न करने के कारण प्रतिवादी ने नैना चौहान पर खूब जोर-जुल्म किया है, इसका सबूत मिल गया। मामला नैना चौहान के पक्ष में बहुत मजबूत हो गया। लेकिन नैना चौहान ने स्वयं कठिनाई पैदा कर दी।'

मैंने पूछा, 'कैसे?'

'नैना चौहान अच्छी तरह न कह पाई कि उस रात में क्या वारदात हुई। उस समय उसे कुछ भी याद न था। बोलना चाहिए था क्या और बोल गई क्या। इसी से मुकदमे ने मुलिजम के पक्ष में मोड़ ले लिया।'

'कैसे?'

शिवनाथ ने कहा, 'वही बात तो तुमसे कह रहा हूं। बुलबुल चौधरी

सीधा-सादा आदमी था क्या ? सारा काम पक्का किया था। जिससे कोई कुछ जान न पाये। उस दिन शाम को जब नैना चौहान दौड़ती हुई घर लौटी, बुलबुल चौधरी वहां चुपचाप छिपकर बैठा रहा ताकि कोई देख न सके। सहसा ऐसा लगा कि जानकी आई हो। इतने दिनों तक भागती फिरी है, आज उसे पकड़ने का मौका मिला है। चिट्ठी में लिखा हुआ है—'ठीक इसी पहाड़ के नीचे नैना चौहान से मिलेगी।'

बुलबुल चौधरी पेड़ की ओट में चुपचाप खड़ा रहा। जानकी आई, और नजदीक आई। लेकिन मन में एक प्रकार का संदेह हुआ, शायद बुलबुल चौधरी को देख लिया है, नहीं तो इस तरह एकाएक भागने क्यों लगी ?

बुलबुल चौधरी ने और देर न की। पीछे से जानकी पर कूद पड़ा। साथ ही साथ जानकी चिल्ला पड़ी।

'अब ?'

जानकी चिल्लाने लगी, 'छोड़ो, मुझे छोड़ो···।'

'यहां फिर आई है ? पकड़ा है तो तुझे छोड़ूंगा फिर ? कह, तू क्यों आई है ?'

'छोड़ो, वर्ना मैं सारी बातें बता दूंगी।'

'पागल की बात का कौन एतबार करेगा। तू तो पगली है।'

'मैं अगर पागल हूं तो तुम भी पागल हो।'

'तेरी मां जानती है कि तू पागल है या नहीं। लोग तेरी बात पर एतबार करेंगे या तेरी मां की बात पर ? पुलिस के पास जायगी तो वह तुझे ही पकड़ कर पागलखाने में ठूंस देगी। वह, क्यों भाग आई है। क्यों मेरी बर्बादी करने आई है ?'

'मुझे छोड़ दो तुम ! वर्ना मैं सबको बता दूंगी।'

'तेरी बात पर कौन एतबार करेगा ?'

'नैना चौहान एतबार करेगी। नैना चौहान से ही मैं कहने आई थी। तुम्हें बर्बाद करने ही मैं आई हूं। मैं पागल ही सही, लेकिन पुलिस नैना चौहान की बात पर तो एतबार करेगी। उसको तो लोग पागल नहीं कहेंगे···।'

'मेरे रास्ते का जो कांटा बनेगा उसको मैं दुनिया से विदा कर दूंगा। मुझे अब तक तू पहचानती नहीं ?'

'खूब पहचानती हूं। पहचानती हूं, इसीलिए तो मेरी यह दुर्दशा हुई है ?'

'और दुर्दशा होना तो अभी बाकी ही है। अभी दुर्दशा हुई ही कहां है ?'

'लेकिन मन में क्या सोचा है कि तुम्हारा भेद कोई नहीं जान पायेगा ?'

'किसी को भी भेद का पता आज तक नहीं चला है। तू पता लगा सकती थी किन्तु तेरी वात का एतबार कौन करेगा ?'

'लेकिन तुम क्या सोचते हो कि मेरे सिवा किसी को नहीं है ? एक दिन ऐसा आयेगा ही तुम्हें जवावदेही देनी पड़ेगी और लोगों को पता चल जाएगा कि तुम वुलवुल चौधरी नहीं हो···।'

तुरन्त वुलवुल चौधरी ने जानकी का मुंह दबोच दिया। दोनों हाथों की तलहथियों से दबोचते ही जानकी के दोनों हाथ शून्य पड़ गये···मानो चिल्लाने और छुड़ाकर भागने की ताकत गायब हो गयी हो।

अलका ने घर आकर देखा—दीदी का कमरा खाली है। फिर कमरे से निकलकर वरामदे में आयी। इतने वड़े मकान में अकेले रहने में उसका दम घुटने लगा।

सामने गुलाबी जा रही थी। मालकिन के लिए खाना बनाने की ताकीद करने नीचे गयी थी। नैना चौहान की देखभाल में ही सारा दिन व्यस्त रहती है। नैना चौहान के सोकर उठने के समय से रात में सोने के लिए बिछावन पर जाने के समय तक।

अलका ने पूछा, 'दीदी कहां गई हैं री गुलावी ?'

'घूमने गयी हैं।'

'एकाएक अकेली क्यों घूमने गयीं। मुझसे तो कुछ कहकर नहीं गयीं।'

गुलावी ने कहा, 'मुझसे कहकर गई हैं। तुरत लौट आयेंगी···।'

'कब गई है ?'

'छ: बजे शाम में।'

'इतनी रात में कहां घूम रही हैं !'

'सो तो मुझे मालूम नहीं है। जाने के वक्त कह गई हैं कि कोई पूछे तो कहना—तुरंत लौट आयेंगी···'

अलका ने कहा, 'मैं जाकर देखती हूं कि कहां घूमने गयी हैं···।'

'लेकिन इस अंधेरे में अकेली तुम कहां जाओगी !'

अलका ने कहा, 'लेकिन मुझे तो डर लग रहा है, दीदी तो कभी अकेली वाहर नहीं जाती थीं। गाड़ी ले गयी है !'

'नहीं।'

'तब इतनी देर होने पर भी अव तक क्यों नहीं लौट रही हैं !'

'तुझे फिक्र नहीं हो रही है !'

'मुझे क्या फिक्र होगी। मैं तो हुक्म की बांदी हूं। तुम और तुम्हारी दीदी मुझे जो कहेंगे, मैं वही करूंगी !'

अलका ने कहा, 'तब तू मेरे साथ चल, देखूं कहां गई हैं !'

'चलो।'

हुक्म को तामील करना ही गुलाबी का काम है। एक ही बार में वह राजी हो गई।

'तुम अपना स्वेटर पहन लो मालकिन, ठंड लगेगी।'

अलका ज्यों ही जाने वाली थी कि नैना चौहान दौड़ती-दौड़ती घर में घुसी। चिल्ला पड़ी, 'गुलाबी···।'

गुलाबी ने आगे बढ़कर कहा, 'क्या मालकिन ! क्या हुआ है।'

'अलका कहां है !'

'अपने कमरे में है।'

'अलका को बुलाओ, तू तैयार हो जा। हम लोग अभी तुरत यहां से भाग चलेंगे।'

'कहां भागकर जायेंगे।'

'जहां दोनों आंखें ले जाएं, भाग चलेंगे। चौधरी साहब आ रहे हैं। चौधरी साहब के आने के पहले ही भागना है। जल्दी करो।'

'क्या बोलती हो मालकिन ! तुमने तो अभी खाना खाया ही नहीं। अलका मालकिन ने भी नहीं खाया है···'

लेकिन तब नैना के पास उतनी बात कहने का वक्त नहीं था। नैना चौहान दौड़ती-दौड़ती अलका के कमरे की ओर गई। पुकारा, 'अलका-अलका···'

अलका दीदी की आवाज से ही डर गयी और बाहर आकर आश्चर्य से डूबने-उतरने लगी।

'यह क्या दीदी, क्या हुआ है ?'

'अभी तुरंत यहां से भागना है। अभी तुरंत। एक मिनट भी देर करने से काम नहीं होगा। चल, गुलाबी से भी कह रही हूं चल, भाग जायें···'

'क्यों दीदी, क्या हुआ ?'

'सारी बातें बाद मे बताऊंगी। उतनी बातें करने को अभी वक्त नहीं है। आ, चली आ···'

'लेकिन कुरता-पंजाबी-सलवार कुछ भी नहीं लूं ?'

'सब रहने दे। जल्दी आ, देर होने से चौधरी साहब फिर जाने न देंगे। हम लोगों की हत्या कर डालेंगे···'

'क्या कह रही हो तुम ?'

नैना चौहान अलका का हाथ खींचते-खींचते सीढ़ी से नीचे उतारने लगी।

गुलावी किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो उठी।

वोली, 'चौधरी साहव आकर हमें खोजें ?'

'सो सव सोचने का वक्त अभी नहीं है।'

नीचे दाई-नौकर—सवों को आश्चर्य हो रहा था। वे खड़े-खड़े देख ही रहे थे।

'कहां जा रही हो वीबीजी ?'

उस वात का जवाव देगी ?

आगे-आगे नैना और उसके पीछे-पीछे अलका जा रही है और उनके पीछे गुलावी।

लेकिन फाटक तक जाना न हो सका। वुलवुल चौधरी सामने खड़े थे।

'सव कोई कहां जा रही हो ?'

नैना पहाड़ की तरह सामने खड़ी हो गयी। अलका भी खड़ी हो गयी। गुलावी पीछे खड़ी थी।

'चलो, लौटकर चलो।'

नैना ने फिर भी जवाब नहीं दिया।

'यहां से बाहर जाने से ही क्या छुटकारा मिल जाएगा ?'

नैना ने उस बात का उत्तर न देकर कहा, 'रास्ता छोड़ दो! रास्ता छोड़ दो।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'चिल्लाओ मत। इससे तुम पर ही मुसीबत गुजरेगी···'

'नैना ने कहा, 'तुम रास्ते पर से हटोगे या नहीं ?'

तव तक बुलबुल चौधरी थोड़ी-सी भलमनसाहत दिखा रहा था, अब वह न रही। सहसा उसका असली रूप प्रकट हो गया। बोला, 'तुम अंदर चलो! तुमसे बातें करनी हैं।'

करीब-करीब ढकेलते हुए नैना को अंदर ले गया। गुलाबी भी पीछे-पीछे आई। अलका भी पीछे-पीछे आयी। मानो, समूचा घर कुछ क्षण के लिए स्तव्ध, आश्चर्यचकित हो गया हो। फिर नैना को कमरे के अन्दर ठेलकर वुलबुल चौधरी ने वाहर से सांकल चढ़ा दी।

अन्दर से नैना चिल्ला पड़ी, 'खोलो, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोल दो, दरवाजा खोलो।'

नैना दरवाजे पर धड़ाम-धड़ाम मुक्का मारने लगी। बाहर से बुलबुल

चौधरी ने उससे कहा, 'इसकी सजा तुम्हें भुगतनी पड़ेगी। मैं देखता हूं तुमको···

'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'अलका चौहान यही बात कचहरी में खड़ी होकर कहते-कहते रो पड़ी थी। उसकी आंखों के सामने दीदी पर जोर-जुल्म हो रहा है, यह देखकर भी वह कुछ कर न सकी। उसे लगा था कि इतने दिनों से जिस डर की बात उसके दिल में पैदा हुई थी, उसकी शुरुआत सचमुच हो गई। उधर कमरे के अन्दर दीदी चिल्ला रही है और इधर बुलबुल चौधरी गरज रहा है। ऐसे वातावरण में वह वहां खड़ी न रह सकी। वहां से हटकर वह ऊपर की सीढ़ियां चढ़ी और छिपकर सब कुछ देखने लगी।'

गुलाबी तब भी खड़ी थी।

बुलबुल चौधरी हटकर उसके पास आया।

गुलाबी बोली, 'इतनी जल्दबाजी क्यों कर रहो हो ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'अब और वक्त नहीं है···'

'क्यों, वक्त नहीं है ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'जानकी पकड़ी गई है, वह नैना चौहान से मिलने आई थी···'

'किसी ने देखा तो नहीं है ?'

बुलबुल चौधरी ने गर्दन नीची कर कहा, 'नहीं···'

गुलाबी की बातचीत और हाव-भाव से अलका को अचरज हुआ। इस तरह गुलाबी बुलबुल चौधरी से बतिया रही है। जिसने उसकी दीदी पर इतना जोर-जुल्म किया है, उसके साथ इतना घुल-मिलकर क्यों बतिया रही है ?

'वह कहां है ? उसे कहां रख आये ?'

'बाहर उसी पहाड़ के निकट···'

'तब पहले एक काम करो···'

'कौन-सा काम ?'

'घर में जितने दाई-नौकर हैं, पहले सो जायें।'

'क्यों ? किसलिए कह रही हो ?'

'सभी काम में तुम जल्दबाजी क्यों करते हो। धीरे-धीरे दिमाग ठीक

रखकर यह सब काम न किया जाए तो मुसीबत में फंस जाओगे।'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'तुमने जैसा कहा था, ठीक वैसा ही तो कर रहा हूं।'

गुलाबी ने कहा, 'मैंने तुमसे हमेशा कहा है कि दिमाग ठंडा रखकर, होंठों पर मुस्कराहट बनाये रहो, पर तुमने ऐसा क्यों नहीं किया ?'

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'मगर अब देरी बर्दाश्त नहीं हो रही है, उधार देने वाले बहुत तकाजे कर रहे हैं। उन लोगों के चलते मेरा मन चंचल हो उठा है…'

'फिर तुम चिल्ला रहे हो ? चुपचाप बातचीत करो न। अब डाक्टर बुलाना होगा। और कुछ ज्यादा रात न होने से सब मालूम हो जाएगा…'

उसके बाद दोनों जने गर्दन झुकाकर पता नहीं क्या-क्या सलाह-मशवरा करने लगे। अलका ने कान लगाकर सुनने की कोशिश की। लेकिन बात इतने धीरे-धीरे हो रही थी कि कुछ सुनाई न पड़ा। फिर वे दोनों एकाएक खड़े हुए। खड़े होकर बरामदे से बाहर जाकर नीचे उतरने लगे।

अलका को लगा, यही मौका है। इसी मौके से फायदा उठाकर दीदी के घर की सांकल खोल सकती है और उसे बाहर निकाल सकती है।

दीदी उस वक्त भी कमरे के अन्दर चिल्ला रही थी, 'दरवाजा खोलो, दरवाजा खोल दो…'

कोई जवाब नहीं दे रहा है, कोई ध्यान नहीं दे रहा है। दीदी चिल्लाये जा रही है…

सहसा दीदी ने चिल्लाकर पुकारा, 'अलका, अलका…मुझे कमरे में बंद कर दिया है, ये लोग मेरी हत्या कर देंगे…अलका अलका…'

बुलबुल चौधरी और गुलाबी नीचे बैठे हुए थे। शायद यही सुनकर वे फिर ऊपर की ओर आये।

बुलबुल चौधरी ने कहा, 'अलका कहां है ? वह क्या घर ही में है ?'

अब तक मानो बुलबुल चौधरी को इसका खयाल ही नहीं था।

गुलाबी बोली, 'देखूं, वह कहां गई…।'

दोनों फिर मुड़ पड़े। बरामदा तय कर अलका के कमरे की ओर गये।

अलका का कलेजा अब कांपने लगा। अबकी दोनों जने उसी को ढूंढ़ रहे हैं। अलका आहिस्ते दबे-पांवों, चुपचाप सीढ़ियां उतर गई। उसके बाद एक मंजिले में आकर अंधेरे में बगीचा पार किया और फाटक के बाहर आ अंधेरे में बेतहाशा दौड़ पड़ी। यहां से अगर भाग न सकी तो उसकी भी

हालत दीदी की तरह हो जायेगी।

दौड़ती-दौड़ती बगल के मकान में घुस पड़ी। बगल का मकान भी नजदीक नहीं था। एक बहुत बड़े अहाते में फैला हुआ बगीचा था। मिसेज चोपड़ा का मकान था। अगल-बगल कोई आदमी भी न था कि पूछे। ठंड के कारण सब कोई खिड़की-दरवाजे बंद कर सो गये हैं। समूचा मकान करीब-करीब अंधेरे में डूबा हुआ है। किससे पूछताछ करेगी कि आर्टिस्ट आनन्द मिश्र किस कमरे में रहता है। और अब तक आर्टिस्ट यहां है या नहीं—कौन यह बतायेगा ?

सहसा लगा कि बगल के एक कमरे में रोशनी जल रही है। जरूर कोई वहां जग रहा है। उसी से पूछने से पता चल जायगा कि आर्टिस्ट मकान में है या नहीं।

अलका बाहर से खिड़की पर दस्तक देने लगी।

अन्दर से किसी ने कहा, 'कौन है ?'

और तब तक खिड़की के दोनों पल्ले खुल गये। खुलते ही आर्टिस्ट ने अपना मुंह बाहर निकाला।

'कौन है ?'

'मैं हूं आर्टिस्ट !'

'मैं अलका हूं।'

शिवनाथ ने कहा, 'यहां से मुकदमे ने दूसरा मोड़ लिया। इसके बाद चौधरी लॉज में क्या वारदात हुई, किसी को मालूम नहीं—अलका तक को नहीं।'

अलका ने अपने आप बताया, 'मैं उस रात मकान से भाग गई थी, इसी से मेरी जान बची। वर्ना वे लोग मुझे भी कत्ल कर देते। मैं दूसरे दिन सुबह आर्टिस्ट के साथ अपने चाचाजी के पास नैनीताल चली गई। मेरे लिए जाने की जगह और थी ही कौन-सी। आर्टिस्ट ने मुझे चाचा के पास ले जाकर पहुंचा दिया।'

चाचाजी ने पूछा, 'फिर से लौट क्यों आई ?'

मैंने सब कुछ बताया। जो कुछ देखा था, खुलासा कहा, लेकिन चौहानजी अजीब आदमी हैं।

चाचाजी ने सुनकर कहा, 'पगली कहीं की, ऐसा झगड़ा तो हर घर में होता है। पति-पत्नी में ऐसा झगड़ा होता ही रहता है। इसके लिए दिमाग

खर्च करने की क्या जरूरत। इसी से तो मैंने सारी जिन्दगी शादी-ब्याह न किया…'

आनन्द ने कहा, 'लेकिन मुझे लगता है कि जरूर कोई मुसीबत हुई है। लगता है, इसके पीछे कोई षड्यंत्र है…।'

'तुम लोग हर चीज के पीछे सिर्फ षड्यंत्र ही देखते हो। क्यों न हर चीज को सहज ढंग से लेते हो।'

'अलका से ही पूछ कर देखें न। गुलाबी तो नैना की आया थी। वह क्यों बुलबुल चौधरी से आहिस्ते-आहिस्ते बतिया रही थी? उसने बुलबुल चौधरी को क्यों नहीं रोका?'

चाचाजी ने कहा, 'वह तो औरत ठहरी। वह कैसे रोकती? उसे उतनी हिम्मत कैसे होती। औरत को अगर हिम्मत ही रहे तो उसे औरत कहा ही क्यों जाय?'

दोनों व्यक्ति मिलकर भी उस दिन आशीष चौहान को समझाने में असमर्थ रहे।

सारा दिन कैसे कटा, आर्टिस्ट को याद नहीं है। यहां न आकर बुलबुल चौधरी के मकान पर जाना ही बेहतर रहता। पता तो चलता कि नैना कहां है?

मगर अलका के बारे में सोचकर ही यहां चला आया था। निरापद पहुंचा दिया था। अब नैना के मकान पर जाना ही ठीक रहेगा। लौटकर आनन्द बुलबुल चौधरी के मकान पर ही जाएगा। सिर्फ जाएगा ही नहीं, जैसे भी हो, नैना से मुलाकात भी करेगा।

आर्टिस्ट ने कहा, 'तुम यहां बेफिक्र रहो। मैं तुम्हारी दीदी को यहां पहुंचा दूंगा…।'

'मगर वे लोग दीदी को अगर यहां न आने दें तो?'

आर्टिस्ट ने कहा, 'इसका इन्तजाम भी मैं करूंगा। मैं पुलिस की सहायता लूंगा।'

'लेकिन दीदी को उस हालत में छोड़कर आने पर मुझे डर लग रहा है।'

आर्टिस्ट ने कहा, 'डर की क्या बात है? मैं जो हूं! मैं तुम्हारी दीदी को लेकर कल ही आ जाऊंगा…।'

'तुम्हारे जाने के पहले ही कोई घटना हो जाय तो?'

आर्टिस्ट ने कहा, 'इतना डरने से भी कहीं काम चलता है। बुलबुल चौधरी कितना बड़ा जल्लाद क्यों न हो, उसे भी तो अपनी जान का खतरा है। जो जितना ही बदमाश होता है, उसको डर भी उतना ही रहता है।

जैसे ही पता चलेगा कि तुम घर पर नहीं हो, घर से तुम भाग गई हो, वैसे ही डर जायेंगे और कुछ करने की हिम्मत नहीं पड़ेगी। तुम्हारे लिए डरने की कोई बात नहीं है। तुम निडर रहो…।'

अलका ने कहा, 'इसमें गुलाबी का हाथ है, इसका मुझे कभी संदेह नहीं हुआ…'

दोपहर में सारा इन्तजाम कर आनन्द जा रहा था। सहसा एक तार आया—जरूरी तार। आशीष चौहान के नाम था। बुलबुल चौधरी ने भेजा है। उसमें दो पंक्तियां लिखी हुई हैं—दुख के साथ लिखना पड़ता है कि नैना चौधरी कल रात एकाएक तबीयत खराब हो जाने के कारण चल बसी—बुलबुल चौधरी।

मिसेज चोपड़ा को अचरज हुआ था। आर्टिस्ट क्यों चला गया था, फिर हठात् क्यों लौट आया। जाने के वक्त आनन्द ने सूचना तक न दी थी। सूचना देने का उसे वक्त न था। बहुत रात हो गई। तब मिस्टर चोपड़ा और मिसेज चोपड़ा—सब कोई सो गये थे। इन्तजार करने का वक्त नहीं था। अलका अलग से एक कुरता भी नहीं ले आई थी। जिस हालत में थी, चली आई थी।

दूसरे दिन सुबह मिसेज चोपड़ा ने नौकरों को बुलाकर पूछा, 'आर्टिस्ट कब गये हैं?'

कब गये हैं, किसी को पता नहीं सिर्फ दरबान को मालूम है। मिस्टर चोपड़ा के मकान में वह बहुत दिनों से काम कर रहा है।

वह बोला, 'हुजूर, तब मैंने फाटक बन्द कर दिया था। साहब ने मुझसे फाटक खोलने को कहा। रात काफी हो चुकी थी।'

उस दिन एकाएक चले आने का रहस्य मिसेज चोपड़ा की समझ में न आया। उनके मकान में उसे कोई असुविधा हो रही थी? कोई तकलीफ हो रही थी? एक दिन भी तो मुंह खोलकर आर्टिस्ट ने कुछ नहीं कहा। मिसेज चोपड़ा की तस्वीर तब तक बन न पाई थी। जिस तस्वीर के लिए इतनी ललक थी, वह क्या ऐसी ही रह जायेगी?

लेकिन उस दिन सुबह आर्टिस्ट को फिर से देखकर मिसेज चोपड़ा बड़ी हैरत हुई।

'यह क्या! आप कहां चले गये थे? चेहरा ऐसा क्यों दीख रहा है?'

सचमुच दो दिनों में ही आनन्द का चेहरा कैसा-कैसा हो गया है।

"शायद हमारे यहां आपको बहुत तकलीफ हो रही थी, इसी से आप चले गये। मैं और मिस्टर चोपड़ा सोचकर हैरान हो रहे थे। दो दिन तक कहां रहे ?'

आनन्द ने कहा, 'मैं नैनीताल गया था।'

'एकाएक नैनीताल क्यों चले गये ? कोई काम था क्या ?'

आनन्द का चेहरा दूसरे दिनों के बनिस्वत गंभीर दिख रहा था।

मिसेज चोपड़ा ने कहा, 'आपको हुआ क्या है ?'

'नहीं, कुछ भी नहीं।'

आर्टिस्ट अपने कमरे में माल-असबाब सहेज रहा था। कुछ देर बाद बोला, 'मुझे क्षमा करें मिसेज चोपड़ा। मैं अभी आपकी तस्वीर पूरी नहीं कर पाऊंगा।'

'यह क्या ? अब मैं क्या करूं ?'

आनन्द ने कहा, 'मेरी तबीयत अच्छी नहीं है। तस्वीर बनाने में जी नहीं लग रहा है।'

'आपको क्या हुआ, सच-सच बताइये तो ?'

'यकीन मानें, मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तबीयत बहुत खराब लग रही है...'

बात सुनकर मिसेज चोपड़ा का भी मन खराब हो गया है। कितनी ललक थी कि अपनी तस्वीर सबको दिखाकर बहादुरी लूटूंगी। सब कुछ बेकार हो गया।

'सच-सच बताइये न, क्या हुआ है आपको ? अगर आप कहें कि आपको और पैसे की जरूरत है तो मैं मिस्टर चोपड़ा से कह सकती हूं...'

आनन्द ने कहा, 'नहीं मिसेज चोपड़ा, ऐसी बात होती तो मैं आपसे खुलासा कहता।'

'तो अब क्या होगा ?'

आनन्द ने कहा, 'मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूं। वहां से फिर लौटने पर बनाऊंगा। आप कुछ दूसरा मन में न सोचें।'

सहसा मिसेज चोपड़ा को जैसे कोई बात हो गई है, इस मुद्रा के साथ बोली, 'पता है, दुःख की एक बात हो गयी है ?'

'दुःख की कौन-सी बात ?'

'वही जिसकी आपने तस्वीर बनाई थी—याद है मिसेज चौधरी की ? वह एकाएक चल बसी। आप सहसा जिस रात चले गये थे, उसी रात में।'

आनन्द ने गर्दन उठाकर सीधे मिसेज चोपड़ा की ओर देखा।

'आपने देखा था ?'

देखा था का मतलब ? सुबह खबर मिलते ही हम लोग चौधरी लॉज गये। अड़ोस-पड़ोस की विपत्ति में भला नही जाऊं ? दुख में अगर दूसरे की खोज-ख़बर न रखूं तो कब रखूंगी ? हाय, सोचती थी बुलबुल चौधरी बड़े निष्ठुर किस्म के आदमी हैं। लेकिन नहीं, लगा, अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे···'

आनन्द एकाएक चिल्ला पड़ा, 'झूठी बात है···'

'झूठी बात है—का मतलब ?'

'मतलब यह कि नैना चौहान मरी नहीं है। वह सब बुलबुल चौधरी का षड्यन्त्र है। सब कारसाजी है।'

मिसेज चोपड़ा को बड़ा ही आश्चर्य हुआ। एकाएक आर्टिस्ट इतना विगड़ क्यों उठा ?

आनन्द ने दुबारा कहना शुरू किया, 'आपको मालूम नहीं, कि वह कैसा आदमी है —वह यानी बुलबुल चौधरी !'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'मैंने अपनी आंखों से श्मशान की ओर ले जाते हुए देखा। सबों ने मिलकर जलाया और आप कहते हैं कि मिसेज चौधरी मरी ही नहीं है।'

तब तक आनन्द मिश्र अपना सूटकेस उठा चुका था।

'मैं आपके साथ तर्क नहीं करना चाहता। फिर भी मुझे मालूम है कि नैना चौहान मरी नहीं है···' फिर बोला, 'अच्छा, अब मैं चल रहा हूं मिसेज चोपड़ा। तबीयत ज्यों ही अच्छी हो जाएगी, लौट आऊंगा···'

कहकर घर से निकल सड़क पर आ गया।

मैंने पूछा, 'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'अभियुक्त के वकील ने इस पर काफी बहस की। क्योंकि नैना चौहान जो मर गई है, उसके सम्बन्ध में उन लोगों के पास किसी भी प्रमाण की कमी नहीं है। एक-एक कर सभी गवाहों को बुलाकर गवाही दिलवाई कि उन लोगों ने नैना चौहान की लाश देखी है। मेडिकल-सर्टिफिकेट भी उपस्थित किया। डॉक्टर के सर्टिफिकेट में स्पष्ट लिखा हुआ था—अकस्मात् दिल के दौरे का आक्रमण होने से मिसेज चौधरी की मृत्यु हुई है।

जानकी की मां ने भी कटघरे में खड़े होकर गवाही दी कि उसी दिन रात में चौधरी साहब की पत्नी का देहान्त हो गया। बहुत से नौकर-चाकरों

ने भी गवाही दी। इस पर अभियुक्त का वकील कचहरी में जज के सामने कहने लगा, 'इसके बाद भी कोई इसका सबूत मांगे कि मिसेज चौधरी मरी नहीं हैं तो उसे पागल छोड़कर और क्या कहा जा सकता है!'

गुलाबी ने खड़ी होकर गवाही दी कि मिसेज चौधरी की तबीयत एकाएक खराब हो जाने पर चौधरी साहब डॉक्टर को बुला लाये। लेकिन डॉक्टर के पहले ही मिसेज चौधरी का देहान्त हो गया। मरने के वक्त स्वयं गुलाबी अपनी मालकिन के सिरहाने बैठी हुई थी।

सरकारी वकील ने पूछा, 'पागलखाने में जिसे रखा गया है, वह कौन है?'

गुलाबी ने कहा, 'वह जानकी है!'

'वह जानकी है, इसका सबूत क्या है?'

गुलाबी बोली, 'सबूत उसकी मां है। उसकी मां ही गवाही देगी कि वह उसकी लड़की है।'

जानकी की मां भी गवाही देने के लिए खड़ी हुई। कठघरे में खड़ी होते ही वह चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगी।

बोली, 'अरी जानकी, तू वहां से क्यों भाग आई बिटिया? तुझे किस बात की तकलीफ थी? चौधरी साहब ने तेरे लिए कितना पैसा खर्च किया है, वह तू समझी नहीं!'

सरकारी वकील ने कहा, 'गौर से देखकर बता वह तेरी लड़की है?'

जानकी की मां ने कहा, 'मेरी बेटी नहीं तो किसकी बेटी है? मैं अपनी लड़की को पहचानूंगी नहीं?'

जानकी एकाएक चिल्ला पड़ी, 'नहीं, मैं तुम्हारी लड़की नहीं हूं। मैं नैना चौहान हूं। तुम्हारी लड़की मर चुकी है···'

कचहरी-भर में हलचल मच गयी। जानकी की सेहत खराब है। बीमार की तरह कैसी-कैसी तो दिखती है। मानो टूट गई हो।

पहले जमाने में धर्मेन्दर चौधरी के मकान पर आत्मा चौहान आया करते थे, उन दिनों नामी वेश्याएं मुजरा सुनाने आती थीं। दोनों दोस्तों की मजलिस विहाग ललित, विभाग, दरबारी, कान्हड़ा से रात के आखिरी पहर तक जमी रहती थी। जब स्वर की मूर्च्छना से वातावरण झूमने लगता तो एकाध रात सब कुछ अस्वाभाविक हो जाता। कौन बाई है, कौन आया है, और कौन बाबू साहब हैं—सब-के-सब एक ही स्थिति में हो

जाते।

जानकी का जन्म उसी रात के अंधेरे में हुआ। इसी से तो जानकी की बूढ़ी मां आज भी रोती है। उन दिनों की याद में आज भी हंसती है। उन्हीं दिनों की बातें याद कर बुढ़िया आज भी चौधरी साहब को आशीर्वाद देती है।

बुढ़िया कहती, 'तुम जिन्दा रहो बेटा। तुमने मेरी कितनी भलाई की है।'

किन्तु कचहरी में इतना कुछ हो जाने पर भी आनन्द निराश नहीं हुआ। निराश होने की इससे बढ़कर कई घटनाएं हुई हैं।

बहुत बार, बहुत तरह की स्थितियों में उसे छाती तानकर खड़ा रहना पड़ा। क्यों हार जाऊं? दुनिया से हार क्यों मान लूं? मैं जब तक इन्साफ के रास्ते पर हूं तब तक तुमसे हार न मानूंगा। तुम बुलबुल चौधरी हो, तुम्हारे पास बहुत पैसा है—मुझसे कहीं ज्यादा पैसा। शायद उन सब पैसों से तुम मुझे खरीद सकते हो।

लेकिन एक बात में मैं तुम्हारे बराबर हूं या शायद तुमसे बड़ा ही। वहां मैं तुमसे शहंशाह हूं वहां मेरा ईश्वर जिस स्थिति में है, मैं भी उसी स्थिति में हूं।

जिस दिन पहले-पहले आनन्द को नैना चौहान की मृत्यु की खबर लगी थी, उस दिन भी उसे विश्वास नहीं हुआ। आज कचहरी में सुनने पर भी विश्वास नहीं हुआ। मिस्टर पुरोहित को पहले विश्वास नहीं हुआ था। उन्होंने कहा था, 'नैना मर गई है, इस पर आप सन्देह-मुक्त होकर विश्वास क्यों नहीं करते हैं?'

आनन्द ने कहा, 'नैना चौहान मर नहीं सकती। यही जानकर विश्वास नहीं कर रहा हूं।'

मिस्टर पुरोहित बोले, 'भावुकता की इन बातों को छोड़ो। कानून का भावुकता से कोई सम्बन्ध नहीं है। हम लोग सिर्फ प्रमाण को मानते हैं। आपके पास कोई सबूत है?'

'कहिये, आप किस चीज का सबूत चाहते हैं?'

मिस्टर पुरोहित ने कहा, 'आप सबूत दें कि जिसकी मृत्यु हुई है वह नैना चौहान नहीं है।'

आनन्द ने कहा, 'मैं सिर्फ इस बात का सबूत दे सकता हूं कि जिस लड़की को जानकी कहकर पागलखाने में भर्ती कराया गया है, वह जानकी नहीं है।'

'उसका सबूत कैसे दीजियेगा?'

'उसका सबूत स्वयं वह जानकी देगी। उसने खुद कहा है कि वह जानकी नहीं है। वह नैना चौहान है।'

'आपने क्या पागलखाने में जाकर उससे भेंट की है।'

आनन्द ने कहा, 'हां, भेंट करने के बाद ही मैं आशीष चौहान साहब के पास गया। उनसे चिट्ठी लेकर आपके पास आया हूं ?'

मिस्टर पुरोहित कुछ देर तक खामोश रहे।

उसके बाद पूछा, 'आप नैना चौहान के लिए इतना परेशान क्यों हो रहे हैं ? आपका इसमें क्या स्वार्थ है ?'

आनन्द भी इस बात का उत्तर देने में थोड़ा सकपका गया था। सच-मुच, उसका कौन-सा स्वार्थ है ? उसके साथ नैना चौहान का रिश्ता ही क्या है ? नैना चौहान का ब्याह हो गया है, उसके बारे में किसी तरह का कौतूहल, कोई प्रश्न न रहना चाहिए। प्रश्न रखना अनुचित है।

'आपको क्या उसकी सम्पत्ति का लालच है ? आप भी गुलमुहर स्टेट के लिए ही इतनी मेहनत कर रहे हैं ?'

आनन्द ने इस बात का उत्तर नहीं दिया। इस बात का उत्तर देने में आनन्द को घृणा हुई थी।

मात्र इतना कहा था, 'देखिये, आपका कर्त्तव्य अपने मोवक्किल का स्वार्थ देखना है। आप मुकदमा दायर कर देखें। नतीजा भविष्य के हाथ में है।'

'ठीक है यही करूंगा।'

इसके बाद मुकदमा कचहरी में गया था।

दिन-दिन सुनवाई हो रही थी। आनन्द मिस्टर पुरोहित के पास खड़ा रहता।

पूछता, 'क्या मालूम होता है मिस्टर पुरोहित ?'

मिस्टर पुरोहित गम्भीरता के साथ कहते, 'मुझे कोई उम्मीद नहीं मालूम पड़ती है।'

'क्यों, उम्मीद क्यों नहीं मालूम पड़ती है ?'

'सारी गवाहियां हमारे विरुद्ध आ रही हैं। जानकी की मां खुद गवाही दे गयी कि वह मेरे पेट से जन्मी लड़की है। उसका नाम जानकी है।'

आनन्द इस पर भी नाउम्मीद नहीं हुआ।

कचहरी के अन्दर नैना चौहान को जाकर कहता, 'तुम फिक्र मत करो नैना ! चाहे जैसे हो मैं तुम्हें छुड़ा लाऊंगा ही।'

नैना चौहान कहती, लेकिन कोई मेरी वात पर यकीन नहीं कर रहा है।'

आनन्द कहता, 'मैं तो यकीन करता हूं।'

'लेकिन तुम्हारे यकीन करने से तो कोई फायदा नहीं होगा।'

'तुम अच्छी तरह याद करो कि जिस दिन चौधरी साहव ने दरवाजा वन्द कर तुम्हें रोक रखा था, उस दिन क्या हुआ…'

नैना कहती, 'मुझे भी याद नहीं आ रहा। मेरे दिमाग में सव गड़बड़ा जाता है। ज्यादा देर तक सोचने से माथा चकराने लगता है।'

'उस दिन तुम्हें उन लोगों ने कितनी रात में घर से वाहर निकाला था?'

'उसका मुझे पता नहीं।'

'जरा याद करने की कोशिश करो न !'

'कैसे याद करूं ? मैं जव वेहोश हो गई थी। होश आने पर अपने को पागलखाने में पाया। सव कोई मुझे जानकी कहकर पुकार रहे हैं। मैं जितना ही कहती कि मैं जानकी नहीं नैना हूं, सव कोई उतना ही अविश्वास करते। सभी कहते, मैं पागलखाने से भाग गई थी। वहुत दिनों के वाद ढूंढ़ने पर मिली हूं।'

सचमुच वह एक दिन नैना चौहान के पास गया था। उन दिनों की गवाही के सिलसिले में आनन्द ने यह वताया था। किसी को विश्वास नहीं हुआ।

कचहरी के जज से लेकर वकील, मुहर्रिर, एडवोकेट किसी को आनन्द की वात पर विश्वास नहीं हुआ।

सभी ने कहा, 'इस छोकरे को नैना चौहान के लिए इतना आग्रह क्यों है? जरूर कोई मतलव है। जानकी को नैना चौहान सावित कर देने से आनन्द को ही सोलह आना फायदा है। वुलवुल चौधरी को जेल की सजा मिल जाने पर यह आनन्द नैना चौहान की गुलमुहर स्टेट को हथिया लेगा।

मैंने पूछा, 'इसके वाद ? कहो, इसके वाद क्या हुआ ? वुलवुल चौधरी को सजा मिली ? दोषी करार कर दिया गया ?'

शिवनाथ ने कहा, 'मैं तो सिर्फ मुख्य-मुख्य वातें कहता जा रहा हूं। वाकी वढ़ाना-चढ़ाना तुम पर छोड़े दे रहा हूं। मुकदमा वड़ा पेचीदा था

क्योंकि इस मुकदमे के चलते लखनऊ में कई महीने तक बड़ी हलचल मच गई थी।'

मैंने पूछा, 'आखिर में क्या हुआ ? बुलबुल चौधरी को दोषी करार दिया गया।

शिवनाथ ने कहा, 'नहीं।'

'क्यों ?'

'क्योंकि कोई सावूत न मिला। वुलबुल चौधरी होशियार आदमी था। वह जो कुछ करता था, हर तरह से चौकसी वरतकर करता था। उसके किसी भी काम में किसी भी प्रकार की कमी की गुंजाइश नहीं पाई गई। पत्नी की मृत्यु से वह कितना शोक-विह्वल था, काठगोदाम के अड़ौस-पड़ौस के लोगों की गवाही से उसका सबूत मिला। मिसेज चोपड़ा ने स्वयं गवाही दी कि मृत्यु से वह कितना गमगीन था।'

सरकारी गवाह ने उससे जिरह की।

'आपको मिसेज चौधरी के मरने की खवर कब मिली ?'

'दूसरे दिन सुबह के वक्त। खबर मिलते ही मैं देखने गई।'

'जाकर क्या देखा ?'

देखा कि मिसेज चौधरी खाट पर पड़ी हुई हैं। देखकर लगा वह सोई हुई हैं। मिस्टर चौधरी वगल में खड़े थे। उनकी आंखों से आंसू गिर रहे थे।'

'आपने उनसे कुछ पूछा नहीं ?'

मिसेज चोपड़ा बोली, 'मैंने मिसेज चौधरी की आया गुलावी से पूछा कि मिसेज चौधरी को क्या हुआ था ?'

'गुलाबी ने क्या कहा ?'

'गुलाबी ने कहा, कि मालकिन का एकाएक हार्टफेल हो गया। डाक्टर वुलाया गया था। वह कुछ नहीं कर सके...'

सिर्फ मिसेज चोपड़ा ने ही नहीं, जिस डॉक्टर ने आखिरी वक्त नैना चौहान को देखा, उसने भी कहा कि वह मिस्टर चौधरी का वुलावा पाकर मिसेज चौधरी को देखने आये थे। आने पर देखा कि उनके आने के पहले ही रोगी चल बसा है...'

सरकारी वकील ने पूछा, 'आपने तब क्या किया ?'

डॉक्टर ने कहा, 'तव मेरे करने के लिए कुछ नहीं था। मैंने दवा भी नहीं दी। कुछ नहीं दिया। सिर्फ डेथ सर्टिफिकेट दे आया...'

'आपको किसी तरह का शक हुआ था ?'

'किस चीज का शक ?'

'रोगी की हत्या की गई है या उसकी स्वाभाविक मृत्यु हुई है ?'

डॉक्टर ने कहा, 'यह शक होता तो मैं डेथ सर्टिफिकेट देता ही नहीं···'

डॉक्टर की गवाही के बाद गुलाबी की पुकार हुई।

सरकारी वकील ने पूछा, 'आप बता सकती हैं कि मिसेज चौधरी की मृत्यु कैसे हुई ?'

'हार्टफेल से।'

'मिस्टर चौधरी ने मिसेज चौधरी को कोई तकलीफ दी थी ? आप तो हमेशा मिसेज चौधरी के इर्द-गिर्द रहती थीं।'

गुलाबी बोली, 'मैं हमेशा मिसेज चौधरी के इर्द-गिर्द रहती थी। ब्याह के पहले भी थी और बाद में भी। मैंने मिस्टर चौधरी को कभी तीखी बात करते नहीं देखा···'

'मिस्टर चौधरी मिसेज चौधरी के साथ कैसा बर्ताव करते थे ?'

गुलाबी ने कहा, 'मिस्टर चौधरी अपनी पत्नी को बहुत प्यार करते थे। बिना उससे मिले एक दिन भी न रह पाते थे।'

'और मिसेज चौधरी ? शादी के बाद वह दुःखी रहती थीं ?'

गुलाबी ने कहा, 'नहीं, मिसेज चौधरी ने मुझसे बहुत बार कहा था कि उनके पति की तरह कोई दूसरा नहीं। ऐसा पति मिलना भाग्य की बात है।'

गवाही देते-देते गुलाबी कई बार रो पड़ी थी।

सचमुच गुलाबी अपनी मालकिन को प्यार करती थी। जिस किसी ने हर रोज कोर्ट जाकर सुनवायी देखी है, वे जानते थे कि यह मुकदमा झूठ-मूठ शक का मुकदमा है। पत्नी की मृत्यु के बाद वह नैना के गुलमुहर स्टेट की सम्पत्ति को जो भोग रहा है, किसी को बर्दाश्त नहीं हो रहा है और इसीलिए यह मुकदमा दायर किया गया है।

लेकिन आखिरी दिन एक आश्चर्यजनक घटना घट गई। जिस दिन जज साहब ने फैसला किया उसी दिन कचहरी में एक आश्चर्यजनक घटना घटी।

मैंने पूछा, 'घटना क्या घटी ?'

शिवनाथ ने कहा, 'मैंने शुरू में ही तुम्हें यह बात बताई है···'

'कौन-सी बात ?'

शिवनाथ ने कहा, 'जज साहब ने फैसला दिया।···मैं गवाही और सबूत के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि मुलजिम बुलबुल चौधरी को अन्यायपूर्वक इस मुकदमे में फंसाया गया है। मुलजिम एक संभ्रांत भले

आदमी हैं। वे सिर्फ शिक्षित ही नहीं हैं, वल्कि काठगोदाम के एक कुलीन घराने में पैदा हुए हैं तथा वहां के वहुत बड़े आदमी हैं। मुलजिम और अभियोक्ता सभी गवाहियों से मुझे सन्देह नहीं रहा है कि मुलजिम दोषी है। मैं मुलजिम को ससम्मान रिहा करता हूं···'

शायद बात तब तक खतम नहीं हुई थी। कचहरी में हलचल शुरू हो गई है···

बुलबुल चौधरी मुलजिम के कठघरे में खड़ा था। उसके चेहरे पर अवहेलना की हंसी खिल उठी थी।

अकस्मात् एक घटना घट गई।

सब कोई कचहरी में ही बैठे हुए थे। अकस्मात् गुलाबी एक कोने से उठकर सीधे मुलजिम के कठघरे की ओर दौड़ती हुई गई और एक छुरा निकालकर बुलबुल चौधरी के सीने में भोंक दिया।

देखते-देखते ही बुलबुल चौधरी बेहोश होकर वहीं गिर पड़ा। इस पर भी गुलाबी ने नहीं छोड़ा। फिर छुरा मारने लगी···छाती, पीठ, माथा, गर्दन मुंह—सब जगह।

तब तक पुलिस कान्स्टेबल, दरोगा···सभी ने उसे पकड़ लिया। लेकिन उस वक्त मानो गुलाबी के माथे पर खून सवार हो गया और मार पाती तो शायद उसे खुशी होती। लेकिन तब और उपाय न था। पुलिस और कांस्टेबलों की जमात ने उसे पकड़कर गिरफ्तार कर लिया।

मैं दंग रह गया!

पूछा, 'उसके बाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'ऐसी घटना इसके पहले कभी नहीं घटी थी, इसके बाद भी नहीं घटेगी। दिनों के बाद दिन तक गुलाबी ने गवाही दी है; हर दिन बुलबुल चौधरी के पक्ष में बोली है। सिर्फ गुलाबी की गवाही से जज साहब ने बुलबुल चौधरी को रिहा किया था। अकस्मात् रिहाई के दिन वही गुलाबी मुलजिम की हत्या करेगी—किसी ने ऐसा न सोचा था। कचहरी में जितने आदमी थे, इस घटना को देखकर दंग रह गये थे। कचहरी के बाहर हर मुहल्ले में इसकी चर्चा छिड़ गई थी उसके बाद अखबारों में जब खबर छपी तो बात चारों ओर फैल गई। उसके बाद जब गुलाबी की सुनवायी शुरू हुई, उस दिन कचहरी में खड़े रहने की जगह तक न थी। पहरेदार पुलिस को तैनात कर भीड़ को नियंत्रित करना पड़ा।'

शिवनाथ ने फिर कहना शुरू किया।

बोला, 'बात इतनी रहस्यजनक लगी कि मैं भी भैया, सुबह-सुबह कचहरी पहुंचा। प्रतिरक्षा के वकील और सरकारी वकील—दोनों इस घटना के नये मोड़ से अवाक् हो गए।'

गुलाबी ने ऐसा कारनामा क्यों किया, किसी के दिमाग में नहीं आया। हम लोग वकीलों की जमात में इसके चलते काफी बहस चलती थी।

मैंने पूछा, 'एकाएक गुलाबी ने बुलबुल चौधरी की हत्या क्यों की? सम्पत्ति के बंटवारे के चलते दोनों में झगड़ा हुआ था?'

शिवनाथ ने कहा, 'नहीं; बात ऐसी नहीं है···।'

'तब?'

वही बात तो बता रहा हूं। मैं सिर्फ मुख्य-मुख्य बातें कह रहा हूं। कहानी लिखने के वक्त तुम उसे बढ़ा-चढ़ा देना। आदमी के अन्दर कितनी तरह के जानवर छिपे हुए रहते हैं, यह उसी की कहानी है। उस दिन अगर 'गुलाबी ने बुलबुल चौधरी की हत्या न की होती तो बाहरी दुनिया के आदमी कुछ भी नहीं जान पाते। जान नहीं पाते कि नैना चौहान कौन थी, जानकी कौन थी। बुलबुल चौधरी कौन था और गुलाबी ही स्वयं कौन थी।'

उस दिन हथकड़ी में जकड़ी कठघरे में खड़ी होकर गुलाबी ने जो बयान दिया, उसे जिन्होंने सुना है जिन्दगी-भर न भूलेंगे। मैं भी नहीं भूलूंगा भैया! आज गुलाबी नहीं है। बुलबुल चौधरी भी नहीं है। सिर्फ आनन्द मिश्र और नैना चौहान! ये दोनों जने कहां हैं, मुझे मालूम नहीं। उस घटना के बाद नैनीताल से चले गये हैं। अपने गुलमुहर स्टेट को बेच दिया है। बेचकर उसी रुपये से कहां जाकर आराम और शांति से दिन बिता रहे हैं। उनकी बातें शायद किसी को याद नहीं हैं। अब तक सिर्फ बुलबुल चौधरी और गुलाबी की बातें याद हैं। हालांकि गुलाबी का नाम गुलाबी नहीं था, बुलबुल चौधरी का नाम भी बुलबुल चौधरी नहीं था।

मुझे और आश्चर्य हुआ।

बोला, 'यह क्या?'

शिवनाथ ने कहा, 'इस मुकदमे की सबसे बड़ी खोज तो यही बात है।'

'कैसे?'

इसके बाद शिवनाथ गुलाबी की सारी दास्तां कह गया।

कचहरी उस वक्त निस्तब्ध थी। हथकड़ियों में जकड़ीं हालत में गुलावी को मुजरिम के कठघरे में खड़ा किया गया। गुलावी गर्दन नीचे कर खड़ी रही।

जज साहब ने पूछा, 'तुम दोषी हो या निर्दोष ?'

गुलावी ने स्पष्ट स्वर में कहा, 'मैं दोषी हूं।'

उसके बाद जज साहब के चेहरे की ओर देखकर बोली, 'मुझे और कुछ कहना है हुजूर ! आप अगर इजाजत दें तो अपना वक्तव्य देकर मैं निश्चित हो जाऊंगी। फांसी के पहले मैं दुनिया के हर आदमी को मालूम करा देना चाहती हूं कि मैंने जिसकी हत्या की है, यह कितना बड़ा चरित्रहीन था। धर्मावतार, आप मेरे अपराध के कारण मुझे जितनी बड़ी सजा क्यों न दें, मुझे दुःख नहीं होगा। क्योंकि मैं हृदय से यह स्वीकारती हूं कि मैंने मुजरिम का धर्मावतार के सामने कत्ल किया है और उसके गवाह धर्मावतार स्वयं हैं। लेकिन जिस दिन मैंने सुना कि धर्मावतार ने मुजरिम को रिहा कर दिया है, उस दिन मैं अपने को रोक नहीं सकी। मुजरिम को सजा देने का भार मैंने अपने हाथों में ले लिया। मैंने कानून का दुरुपयोग किया है पर उसकी मर्यादा की रक्षा की है। इसके लिए धर्मावतार मुझे जो सजा देंगे मैं सहर्ष स्वीकार करूंगी। क्योंकि अपने अपराध के लिए मैं दुखित नहीं हूं, शर्मिन्दा भी नहीं हूं कोई पश्चात्ताप भी नहीं हो रहा है, वल्कि गर्व हो रहा है कि मुझे मुजरिम की हत्या करने में सफलता मिली।'

इतना कहकर गुलाबी ने मुंह उठाकर जज साहब की ओर देखा।

जज साहब ने इजाजत दी।

बोले, 'कहो।'

गुलाबी ने कहना शुरू किया।

'मेरा नाम गुलाबी नहीं है। मुजरिम बुलबुल चौधरी का नाम भी बुलबुल चौधरी नहीं था। मेरा असली नाम है···मेहर···मेहर जोसफ। और बुलबुल चौधरी का असली नाम शशि पटेल था। हम दोनों की लंदन में जान-पहचान हुई। लंदन ही में पटेल को मैं प्यार करने लगी। आखिरकार पटेल से मेरी शादी हुई। मेरे पिताजी मुसलमान थे। मेरी मां इस्ट-एंड की गरीव लड़की थी। मेरे पिताजी खलासी का काम करते थे। मेरे पैदा होने के पहले ही मेरे पिता जी मेरी मां को छोड़कर भाग गए थे। मैंने सोचा पटेल बड़ा आदमी है। सोचा था, पटेल के साथ व्याह कर मैं अपने पिता के मुल्क चली जाऊंगी और सुख की दुनिया वसाऊंगी। लेकिन बाद में पता चला कि पटेल मेरी ही तरह फटेहाल है किसी तरह लुक-छिप कर लंदन पहुंचा था।

'लेकिन जब शादी कर लिया है, तब कोई चारा नहीं था। इसके अतिरिक्त मैं पटेल को दिल से प्यार करती थी। पटेल को तलाक देने की कल्पना तक नहीं कर सकती थी। उसी पटेल ने आकर मुझे एक दिन बुलबुल चौधरी के बारे में बताया। बुलबुल चौधरी पटेल का दिलीदोस्त था। बुलबुल चौधरी की मां पहले ही मर चुकी थी। उसकी मां इण्डिया के धर्मेन्दर चौधरी की पत्नी थी। पति को छोड़कर अपने लड़के बुलबुल चौधरी को साथ लिये लंदन चली आई थी।

'दिन-दिन बुलबुल चौधरी से हेलमेल बढ़ाकर, पटेल ने उसकी सारी गोपनीय बातों का पता लगा लिया था। बुलबुल चौधरी के पिता का नाम क्या है, कहां उनकी जमींदारी है—उस जमींदारी की आमदनी कितनी है, उसके कौन-कौन हैं·· सब कुछ पटेल को मालूम हो गया था।'

'उस बुलबुल चौधरी का लन्दन में देहान्त हो गया। मरने के दिन पटेल ने मुझे अपना प्लान बताया। पटेल ने बताया कि वह इण्डिया लौट कर बुलबुल चौधरी के नाम से संपत्ति पर कब्जा जमाएगा। बुलबुल चौधरी के साथ नैना चौहान की शादी की बात तय है— यह भी बताया। नैना चौहान की गुलमुहर स्टेट है, उसकी सालाना आमदनी पन्द्रह लाख रुपया है। उसे भी आहिस्ते-आहिस्ते हथिया लेगा।

'पहले मैं राजी नहीं हुई। पकड़ी जाऊंगी, इस डर से राजी न हुई। लेकिन इतने पैसे का लालच संभाल नहीं सकी, इसी से आखिरकार राजी हो गई। तय हुआ—मैं नैना चौहान के घर जाकर आया का काम स्वीकार लूंगी और पटेल बुलबुल चौधरी के छद्म रूप में चौधरी लॉज में डेरा-डंडी डालेगा। इसके बाद मैं जहाज से इण्डिया चली आई। पटेल उसके बाद के जहाज से आया। सबको मालूम हुआ कि मेरा नाम गुलाबी है और पटेल का नाम बुलबुल चौधरी।

'सब ठीक-ठीक चलने लगा। लेकिन दो दिन बाद एक लड़की ने पकड़ लिया। उसका नाम जानकी था। धर्मेन्दर चौधरी के घर की एक दाई की लड़की थी। जानकी बुलबुल चौधरी को भली-भांति पहचानती थी। एक बार मछली पकड़ते हुए बुलबुल चौधरी की पीठ में बंशी चुभ गई थी। बुलबुल चौधरी की पीठ में उसका दाग था। उस दाग को न देखकर एक दिन जानकी चिल्ला पड़ी—'तुम और आदमी हो, तुम बुलबुल चौधरी नहीं हो···।'

'उसी वक्त उसके मुंह को ढंक दिया और उसे एक पागलखाने में भर्ती करा दिया। उसकी मां से भी कहा कि उसकी लड़की पागल हो गई है। उसके इलाज की जरूरत है। बुढ़िया मां आंखों से ठीक देख नहीं पाती थी।

मां कुछ समझ नहीं सकी। असल में जानकी नैना चौहान के पिता आत्मा चौहान की अवैध सन्तान थी। इसी से उसका चेहरा नैना चौहान से हू-बहू मिलता था। इस झंझट से पटेल को मुक्ति मिल गई। यही कारण है कि नैना चौहान से उसकी शादी वगैर विघ्न-बाधा के हो गई। लेकिन कठिनाई दूसरी जगह हुई। जिस संपत्ति के लोभ से पटेल बुलबुल चौधरी बनकर इण्डिया आया था। आने पर देखा कि उस संपत्ति की आमदनी से अधिक उस पर कर्ज है। उसके बहुत कर्जदार थे। पटेल के आते ही कर्जदारों ने तकाजा शुरू कर दिया। कर्जा चुकाना होगा। लेकिन उस वक्त हाथ में उतना पैसा कहां था ? तब एकमात्र भरोसा नैना चौहान का गुलमुहर स्टेट मालूम पड़ा। पटेल दिन-रात इस कोशिश में रहने लगा कि किस तरह नैना चौहान का स्टेट हथियाया जा सके। लेकिन नैना चौहान दस्तखत करने को राजी नहीं हुई। तब पटेल नैना चौहान पर जोर-जुल्म करने लगा।

'उधर जानकी भी पागलखाने से भाग गई थी। बहुत दिनों से उसकी खोज-पड़ताल हो रही थी। क्योंकि पटेल बुलबुल चौधरी नहीं है, कोई दूसरा ही है, उसकी सबूत एकमात्र जानकी ही थी।

'उसी जानकी को एक दिन पटेल ने रंगे हाथों पकड़ लिया। जानकी उस वक्त बहुत कमजोर थी। खींच-तान में जानकी बेहोश हो गई। उसे देखने के लिए डाक्टर बुलाया गया। लेकिन उसी रात जानकी का देहान्त हो गया। मैं वहीं थी। पटेल को तब मैंने ही सलाह दी कि सबको खबर भेज दे कि नैना चौहान का देहान्त हो गया है। और नैना चौहान को पागलखाने में भर्ती करा दिया गया। उन लोगों से बताया कि खोज-पड़ताल करने पर मिल गई है।'

कहते-कहते गुलाबी रुकी।

लगातार बोलते रहने के कारण शायद उसका गला सूख गया था। बोली, 'एक गिलास पानी पिऊंगी हुजूर ! मेरा गला सूख रहा है।'

पानी पीकर गुलाबी ने फिर कहना शुरू किया, 'अब तक तो ठीक-ठीक ही चल रहा था हुजूर। हम लोग दोनों जने जो प्लान कर इण्डिया आये थे वह बिलकुल सही उतर रहा था। अब हम लोग नैना चौहान का

गुलमुहर स्टेट दखल कर बैठ गए। पटेल अब बेहिसाब रुपये-पैसे का मालिक हो गया। वही रुपया-पैसा मेरा और पटेल का काल साबित हुआ। पैसा मिलते ही पटेल बिलकुल बदल गया। हम लोग बड़े-बड़े होटलों में टिकते थे और दोनों हाथों से रुपया लुटाते थे तब हम लोगों का सारा अभाव दूर हो गया। हम लोग बड़े आदमी हो गए। पटेल पैसा पाकर मुझे भी भूल बैठा। मेरे बारे में उसे खयाल ही नहीं आया। वह अब मुझे छोड़कर दूसरी औरतों के साथ मौज करने लगा। मैं जैसे कोई नहीं होऊं। मुझे लगा कि अब मुझे यह अपना भार समझ रहा है।

'लेकिन एक दिन इसी आर्टिस्ट आनन्द मिश्र ने ही नैना के चाचा से मुकदमा दायर करा दिया। नैना के चाचा आशीष चौहान सीधे-सादे, भले-मानस हैं। लेकिन आनन्द के दबाव के कारण उन्होंने अपने वकील को पत्र लिख दिया।

'मुकदमा शुरू होते ही पटेल थोड़ा डर गया। तब उसे फिर से मेरी याद आई। पटेल समझता था कि इस मुसीबत से केवल मैं ही उसकी रक्षा कर सकती हूं। मेरी खुशामद करने लगा। बहुत पैसे खर्च कर सोने के गहने खरीद दिए। मेरा भी दिल पिघल गया। मैंने भी उसके पक्ष में गवाही देकर उसे सारे दोषों से रिहा करा दिया। पटेल ने सोचा—उसे इसमें रिहाई मिलेगी ही। फैसला होने के एक दिन पहले होटलों में एक बड़ी दावत दी। कितनी ही औरतें आईं कितने ही मर्द। पटेल के सब नए दोस्त थे। अब पटेल ने दूसरा रुख अपनाया। वह भूल गया कि मेरी गवाही के चलते ही उसे रिहाई मिलने जा रही है। एकमात्र मैंने ही गवाही देकर उसे फांसी के फंदे से बचा दिया है। रात के वक्त शराब पीकर जब सब कोई अनाप-शनाप बक रहा था, तब एकाएक देखा कि पटेल गायब है। मैं पटेल को इधर-उधर ढूंढ़ने लगी। कहां गया वह? और किसी का खयाल मुझे नहीं था। किन्तु मैं उसे भूली नहीं थी। पटेल ने सोचा था मैं भी उसी की तरह नशे में डूबकर सब कुछ भूल जाऊंगी। लेकिन मैं तो पटेल को प्यार करती थी। मैं क्या उसे भूल सकती थी? ढूंढ़ते-ढूंढ़ते जब अपने कमरे में पहुंची तो पटेल वहां था। सिर्फ पटेल ही नहीं था, उसके साथ एक औरत भी थी। औरत को बांहों में पकड़कर पटेल मेरे बिछावन पर पड़ा हुआ था। मेरा

दिमाग चकरा गया। मैं होश-हवाश खो बैठी। इच्छा हुई, वहीं उस हालत में उसे कत्ल कर दूं। मुझे पटेल ने देखा नहीं। मैं अलमारी से पटेल का छुरा निकालकर उसको कत्ल करने गयी। किन्तु तब पटेल ने मुझे देख लिया। मैंने छुरे को साड़ी के अन्दर छिपा लिया। शायद पटेल मुझे देखकर शर्मिन्दा हो गया। अपना अपराध छिपाने की कोशिश करने लगा। मैं भी कुछ नहीं बोली। मैंने ऐसा भाव ओढ़ लिया मानों मैंने उसे क्षमा कर दिया हो। पटेल दिखावट के लिए मुझे प्यार करने लगा।'

गुलाबी फिर रुकी।

बोली, 'मुझे और थोड़ा पानी देने को कहें हुजूर? जरा गला सूखा जा रहा है।'

पानी पीकर गुलाबी ने फिर कहना शुरू किया, 'उसके बाद धर्मावतार ने जिस दिन पटेल को रिहा किया, मैं अपने को रोक नहीं सकी। मैं वह छुरा साथ ही ले आई थी। उसे रिहा करने के पहले ही मैं दौड़कर गई और उसके सीने में छुरा भौंक दिया, एक बार-दो बार, तीन बार··· जिससे कि और जिंदा न रहे।'

उसके बाद थोड़ा रुककर बोली, 'मैं जानती हूं हुजूर कि मैंने अपराध किया है। अगर मेरा प्यार करना अपराध है तो मैं अपराधी हूं। पटेल जैसा स्काउंडलर को प्यार करना मेरा गुनाह था।

'आज मेरी कोई इच्छा-अभिलाषा नहीं है। जाने के पहले एक बात कह लूं। लगातार दिन के बाद दिन, महीने के बाद महीने तक मैंने नैना चौहान को देखा है। मैं जानती हूं कि नैना चौहान ने पटेल को प्यार नहीं किया। उसने प्यार किया है तो आर्टिस्ट आनन्द मिश्र को। मुझे जिंदगी में जो प्यार उपलब्ध नहीं हुआ। चाहती हूं कि नैना चौहान को उपलब्ध हो। मैं आज धर्मावतार के सामने हलफ लेकर कहती हूं कि नैना चौहान सती है। पटेल को मैंने एक दिन भी नैना चौहान को छूने नहीं दिया है। औरत होने के नाते दूसरी एक औरत की मैंने बरबादी नहीं होने दी। मैं सुखी हूंगी अगर मुझे पता चलेगा कि नैना चौहान और आनन्द मिश्र सुखी हुए हैं। अपना निवेदन मैं यहीं समाप्त करती हूं! धर्मावतार ने मेरी बातें अब तक धैर्य के साथ सुनी हैं—इससे मैं अपने को कृतार्थ समझती हूं। मुझे अब कोई इच्छा-

अभिलाषा नहीं है।'

गुलावी का वयान समाप्त हुआ। कोर्ट भी उस दिन के लिए वन्द हो गया। मैं कचहरी से वाहर आया।

मैंने पूछा, 'इसके वाद ?'

शिवनाथ ने कहा, 'कहानी लेखक होने के बावजूद तुम कह रहे हो··· इसके वाद। इसके बाद क्या वाकी रह जाता है ?'

शिवनाथ वातें वोलकर रुक गया। लेकिन मुझे लगा···यह सच्ची घटना नहीं है। अव तक मानो अंग्रेजी का क्राइम बोत्रल पढ़ रहा था। इसे सच्ची घटना कहकर शिवनाथ मेरे सामने अनजाने ही वोल गया है।

मैंने पूछा, 'सच-सच कहो, यह सच्ची घटना है क्या ? या मुझे कहानीकार समझ कर अंग्रेजी-उपन्यास की कहानी दुहरा गए।'

किन्तु तब शिवनाथ के पास जवाव देने का वक्त नहीं था। उसका एक मोवक्किल आ गया था। उसी से वातचीत करने में मशगूल हो गया।

□□

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 77910
Date 12/3/92
SIMLA

संग्रहणीय पठनीय एवं चर्चित कथा-साहित्य

चन्द्रकान्ता	बाबू देवकीनंदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 1	बाबू देवकीनंदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 2	बाबू देवकीनदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 3	बाबू देवकीनदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 4	बाबू देवकीनदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 5	बाबू देवकीनंदन खत्री
चन्द्रकान्ता सन्तति भाग 6	बाबू देवकीनंदन खत्री
स्वप्न दृष्टा	कन्हैयालाल माणिक लाल मुन्शी
जीनियस	सुरेशकान्त
सूरज निकलने दो	कमल शुक्ल
छोटे साहब	भगवती प्रासद वाजपेयी
मुखौटों के बीच	उषापुरी
हजार घोड़ों का सवार (पुरस्कृत)	यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
दाग (पुरस्कृत)	आबिद सुरती
दर्पण झूठ न बोले	श्रवणकुमार गोस्वामी
पैसा परमेश्वर	विमलमित्र
आलमगीर	आचार्य चतुरसेन
खग्रास	आचार्य चतुरसेन
मर्जी खुदा की	विमलमित्र
मेज पर टिकी हुई कुहनियां	रमेश बक्षी
बिहार के युवा हिंदी कथाकार	सं० राबिन शॉ पुष्प
हिंदी कहानी का मध्यांतर(36) कहानियां	सं० रमेश बक्षी
हिन्दी की पुरस्कृत कहानियां	सं० श्रीकृष्ण
एक हरी पत्ती की दुनिया	सं० श्रीराम तिवारी